संसद भवन में जैन भित्ति चित्र

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज
पैनल संख्या : 7

महावीर (छठी शताब्दी ईसा पूर्व) तथा उनकी दोनों ओर है आदिनाथ और पार्श्वनाथ, सभी उचित प्रतीकों के साथ बैठे हैं। श्रवणबेलगोला स्थित गोम्मटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा भी दर्शायी गई है।

जैसे ही कोई व्यक्ति संसद भवन में प्रवेश करता है तो वह भूतल पर बाह्य गोलाकार गलियारे में भित्ति चित्रों से सुशोभित दीवारों को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाता है। ये चित्र भारत के प्रतिष्ठित कालाकारों की कलाकृतियाँ हैं जिनमें वैदिक काल से लेकर ब्रिटिश काल से होते हुये वर्ष 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक के इस देश के लम्बे इतिहास के कुछ दृश्य दर्शाये गये हैं।

http://164.100.47.194/Loksabhahindi/PhotoGal/PhotoGalleryPicture.aspx?GalID=2

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

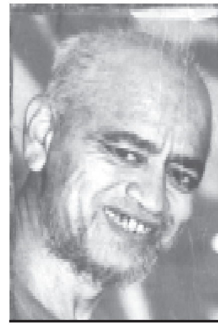

संस्कार सागर

• वर्ष : 18 • अंक : 214 • फरवरी 2017

• वीर नि.संवत 2543 • विक्रम सं. 2073 • शक सं. 1938

लेख

- दान उत्सव-परोपकार की खुशी का जीवन 7
- वैज्ञानिक दृष्टि से जैन सिद्धांत 11
- अपने व्यवसाय,व्यवहार और व्यक्तित्व का विकास करें 16
- दिगम्बर जैन मूलसंघ- संकल्पना निराधार नहीं साधार 20
- प्राकृति चिकित्सा समग्र स्वास्थ्य के लिये : रक्त शुद्धि 36
- विश्वविख्यात छिंदवाड़ा एवं रणकपुर जैन मंदिर 40
- श्रमण साधना में सहयोगी वनस्पतियाँ एवं औषधीय गुण 47

बाल कहानी

- प्रज्ञा की सीख 54

कविता

- यही युक्ति-यही मुक्ति 15
- साक्षात् महासागर है 18
- सामर्थ्य 23
- सृजन शक्ति 25
- स्वार्थ की बू आती है 31
- मंदालसा स्तोत्र : भाषा 52

कहानी

- धमाचौकड़ी 43

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 3 • भक्ति तरंग : 4 • संस्कार प्रवाह : 5 • संयम स्वास्थ्य योग : 12
• जैन मनोविज्ञान : 24 • पुराण प्रेरणा : 28 • माथा पच्ची : 28 • कैरियर गाइड : 29 • चलो देखें यात्रा : 30
• दुनिया भर की बातें : 32 • दिशाबोध : 39 • हमारे गौरव : 51
• बाल संस्कार डेस्क : 54 • संस्कार गीत व बाल कविता : 55 • हास्य तरंग : 56 • समाचार : 56

प्रतियोगिताएं :अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 27 :वर्ग पहेली : 64

प्रेरणा – संत शिरोमणि परम पूज्य 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी म. के प्रिय शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक : ब्र. जिनेश मलैया
मो.: 89895 05108

प्रबंध संपादक : ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़,
मो.: 94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. पं. सुदेश जैन ''कोठिया'' –9826548159
सिल्वर स्प्रिंग फेस–2, इन्दौर

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक : डॉ. ज्योति जैन, खतौली
मो.: 94128 89449
ब्र. समता दीदी, इन्दौर 8989845294

अतिथि सम्पादक :
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर, 97938 21108
श्री अभिनंदन सांधेलिया पाटन, 9425863244
डॉ. पंकज जैन भोपाल, 9584201103
डॉ. विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल, 9721419696

प्रकाशक : श्री दिगंबर जैन युवक संघ
कार्यालय -**संस्कार सागर,** श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10फोन नं. : 0731–2571851
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

अपने शहर के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में एकाउंट नंबर संस्कार सागर : 63000704338 (IFSC Code : SBIN0030463) **में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।**

सदस्यता शुल्क
वार्षिक : **150/-**आजीवन : **1500/-**

- भारतीय स्टेट बैंक में ब्र. जिनेश मलैया के खाता क्र. 30682289751 (IFSC Code :SBIN0011763),
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स में खाता क्र. 07882151004198 (IFSC Code : ORBC0100788)
- श्री दिगंबर जैन युवक संघ का आईडीबीआई बैंक में खाता क्र. 155104000037022
- श्री दिगम्बर जैन युवक संघ संस्कार सागर आईसीआईसीआय बैंक में खाता क्र. 004105013578 (IFSC Code : ICIC0000041)

में भी राशि जमा कर सकते हैं।

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।
• आवरण एवं आंतरिक सज्जा : नीरज गुप्ता, इन्दौर 97542 40305 फोटो संयोजन – इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर

पाती पाठकों की....

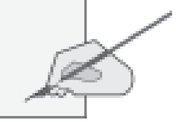

• **सम्पादक महोदय,** संस्कार सागर के जनवरी अंक में चुनाव नीति शीर्षक से कहानी की कथावस्तु कल्पना से परे सत्य प्रतीत हुई। क्रमबद्ध स्वाभाविक आगे बढ़ती जाती है। प्रांजल शैली में वाक्य से वाक्य बुनते कहानी अपने चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ती नजर आती है। यदि कथावस्तु सत्य है तो हमें यह सोचने को मजबूर कर देती है कि क्या हमारा समाज इतना नीचे गिर सकता है कि अपने तीन लोक के नाथ भगवान की पूज्य मूर्ति कहीं भी रख दे। प्रथम दृष्टया सच प्रतीत नहीं होता है यदि सच है तो हमें सोचने को विवश है कि क्या तुच्छ राजनीति, व्यक्ति को इतना भी गिरा सकती है कि यह समझ पाना हर आदमी के लिए सहज ही होता है पतन की सीमा इससे बढ़कर क्या हो सकती है ? – **श्रीमती रुचि जैन, दिल्ली**

सम्पादक महोदय, अगस्ता वेस्टलैंड हेलीकॉप्टर खरीद घोटाले में 423 करोड़ रुपये की रिश्वत लेने के आरोप में पूर्व वायु सेना चीफ मार्शल एस.पी. त्यागी की गिरफ्तारी को भ्रष्टाचार के विरुद्ध मोदी सरकार के एक बड़े कदम के रूप में देखा गया परन्तु कांग्रेस ने इसे दवाब की राजनीति मानकर देखा क्योंकि इटली की अदालत में पेश आरोप पत्र में कहा गया है कि ग्यूसोन ओरसी, जो अगस्ता वेस्ट कम्पनी के सीईओ थे उनके द्वारा सोनिया गाँधी के सलाहकारों को कथित तौर पर रिश्वत के माध्यम से खरीदने का प्रयास किया गया। यह मामला वर्ष 2005 का है जब सत्ता में कांग्रेस सरकार थी और त्यागी वायुसेना प्रमुख थे। सत्ता पक्ष भ्रष्टाचार के मामलों को उठाता दबाता रहता है लेकिन अब समय आ गया है जब भ्रष्टाचार के मामलों पर राजनीति से ऊपर उठकर विचार किया जाये। – **अंशुल पाराशर, लटेरी (म.प्र.)**

सम्पादक महोदय, जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक हर दस भारतीय में से चार किसी न किसी कारणवश दूसरी जगह (देश के भीतर और विदेशों में) प्रवास करते हैं, दूसरी जगह जाने वाले ऐसे लोगों की संख्या 45.3 करोड़ है। भारतीयों के प्रवास का एक प्रमुख उद्देश्य विवाह भी है जिसके कारण 22.4 करोड़ लोग दूसरी जगह चले जाते हैं। वैसे ज्यादातर भारतीय पुरुष जहाँ काम के लिए दूसरी जगह जाते हैं, वहीं ज्यादातर भारतीय महिलाएँ विवाह के कारण अन्यत्र प्रवास करती हैं। – **श्रीमती इन्द्रा जैन, इन्दौर**

सम्पादक महोदय, विगत संस्कार सागर के अंक में नये वर्ष की करवट पर अच्छी सामग्री दृष्टिगोचर हुई।आचार्य विद्यासागर महाराज के 50 वें दीक्षा वर्ष की सूचना दी जिसे पढ़कर मन आनंदित हुआ। इस सूचना को पढ़कर मैं सोचने लगा कि संस्कार सागर जैसी स्तरीय पत्रिका में परम पूज्य गुरुवर की संग्रहणीय सामग्री दी जायेगी। यदि इसका पर्याप्त प्रचार किया जाये तो अधिक से अधिक लोग लाभ ले सकेंगे। प्रिंट मीडिया के साथ ही यदि इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से यदि आचार्यश्री को प्रस्तुत किया जाये तो बहुत ही अच्छा रहेगा। आपकी 1997 में विद्यासागर की लहरें पुस्तक प्रकाशित हो चुकी, मुझे ऐसा अनुभव यह पुस्तक पुनः प्रकाशित कब होगी यह आप निश्चित कर दें तो बहुत उपकार होगा। संस्कार सागर का गुरुदेव के प्रति जो समर्पण वह प्रशंसनीय है। गुरुदेव इस युग के महान प्रभावी संत हैं इनकी वाणी का जितना प्रचार हो सके उतना कम है आपके प्रयास इतिहास के पत्थर बनेंगे। – **सुरेश मारौरा, इन्दौर**

भक्ति तरंग

मोहे तारो करुणाधार

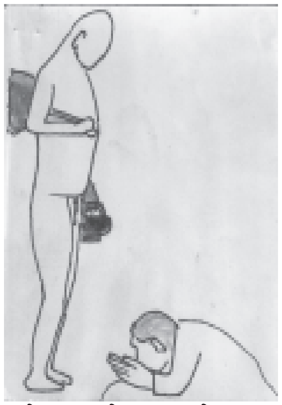

प्रभु तुम चरन शरन लीनौं
मोहि तारो करुणाधार।। टेक ।।
सात नरकतैं नव ग्रीवक लौं,
रुलयो अनन्ती बार।। प्रभु..।।1।।
आठ करम बैरी बड़े तिन,
दीनों दुःख अपार ।।प्रभु..2।।
द्यानत की यह वीनती मेरो,
जनम मरन निरवार ।।प्रभु..3।।

हे प्रभु ! हे करुणा के आधार ! मैंने आपके चरणों की शरण ली है, मुझे तारिए। सात नरक से लेकर नव ग्रैवेयक स्वर्ग पर्यन्त् मैं अनन्तों बार इधर से उधर भटका हूँ अर्थात् एक छोर से दूसरे छोर तक अनन्त बार भटकता रहा हूँ, रुलता रहा हूँ। कष्ट सहता रहा हूँ। जन्म-मरण करता रहा हूँ।

आठ कर्म मेरे सबसे बड़े शत्रु हैं। इन्होंने मुझे अपार दुःख दिये हैं अर्थात् उन दुःखों का कोई पार नहीं है, छोर नहीं है। द्यानतराय कहते हैं कि अब मेरी यह विनती सुनिए मुझे जन्म-मरण के दुःखों से छुटकारा दिलाइए।

हे सुख तू कहाँ मिलेगा

हे सुख मैंने तुझे !
ढूंढा हर जगह
तू कहाँ मिलेगा।
घर परिवार में रिश्तेदार में
जान पहचान में
या फिर श्मशान में
मैंने ढूंढा उद्यान में
महल और मसान में
या फिर महल मकान में
कहाँ मिलेगा तू !
मात्र अहसास है।
लेकिन तूझे ढूँढने की
आस है।
मैं परेशान हूँ तेरे बिना
सब कुछ सुनसान है।
धन में ताकत में या
या झूठे फसाद में
कुछ ही को मिलता
उन्माद में
लेकिन क्षण भर को
उड़ जाता है कपूर की भाँति
सुख हूँ तुम्हारे जैसा ढीट नहीं
तुम दूसरे को सुखी रखो
धर्म ध्यान मन से करो।
सारे फसाद छोड़ोगे
खुद में ढूंढोगे तब से मिलूंगा
अहसास के रूप में अपने दिल के अंदर

• वीरेन्द्र भूपत, सिरोंज •

■

संस्कार प्रवाह

स्वर्णिम संयमोत्सव वर्ष ऐसे मनायें

इस युग के महा मुनिराज आचार्य विद्यासागर जी महाराज द्वारा दीक्षा ग्रहण किये सन् 2017 में जून की 24 तारीख से 50 वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है और यह 50वाँ वर्ष जून 2018 तक चलने वाला है। इस संयम ग्रहण के 50 वर्ष को संयम उत्सव भले ही कोई कुछ भी माने परन्तु सार्वजनिक रूप से आत्म संवेदन का आत्म-निरीक्षण का एक अवसर अवश्य प्राप्त हो रहा है जो सम्पूर्ण भारत के जैनों के लिए ही नहीं अपितु विश्व के अप्रवासी भारतीय जैनों की संवेदना भी इस संयम के स्वर्णिम प्रसंग से जुड़े बिना नहीं रह सकती है। कई लोग अपने मन में सोच के रह जायेंगे कि जिनके मन में गुरु भक्ति-भाव है कि वे अपनी भक्ति की अभिव्यक्ति कैसे करें ? परम्परा से हटकर भी उनके विशिष्ट भक्ति-अभिव्यक्ति करने की तरंग तो उठती है परन्तु योग्य मार्गदर्शन का अभाव होने से बात आगे नहीं बढ़ पा रही है। ''संस्कार सागर'' इस दिशा में पहल करने का मन बना चुका है। परम पूज्य आचार्यश्री की सही मायने में भक्ति तब होगी जब उनके जीवन-दर्शन, साहित्य सर्जना, शिष्य परम्परा, मौलिक चिन्तन का प्रकटीकरण होगा। परम पूज्य आचार्यश्री आदर्श तपस्वी, कवि, साहित्यकार, लेखक, शिक्षाविद्, समाज सुधारक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, कुशल चित्रकार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, जैन सिद्धांत के विविध आयामों के मौलिक चिन्तन प्रस्तुत करने वाले अनूठे जग-जीवन के प्रति करूणामयी सन्त हैं।

आचार्यश्री की साधना तपस्या शिथिलाचार से परे है। भीषण ठंड में भी वे कपड़ा, कम्बल, रजाई, हीटर, ए.सी. तो क्या चटाई आदि का भी प्रयोग नहीं करते है तथा गर्मी में पंखे व कूलर से दूर तक का सम्बन्ध नहीं रखते। रात्रि में गमनागमन से बचते हैं। रात्रि में लघुशंका व शौच की बाधा न आये इसलिए वे अल्प आहार लेकर अपने आहार पर नियंत्रण करते हैं। आपकी निद्रा बहुत कम है, मात्र तीन या चार घंटे ही निद्रा लेते हैं, शेष समय तत्त्व-चिन्तन तथा ध्यान में बिताते हैं। आपकी आहार चर्या सदैव आश्चर्य में डाल देती है। आहार में नमक, शक्कर, गुड़, फल, सब्जी, सूखे मेवे कुछ भी नहीं लेते हैं। दिगम्बर जैन

साधुचर्यानुसार 24 घंटे में एक बार खड़े-खड़े ही अपनी हस्तांजुलि में आहार-जल लेते हैं। दाल-रोटी, चावल, दूध-छाछ, पानी बस इसके सिवा और कुछ नहीं। बिना हिले अकंप एक स्थान पर एक आसन पर बैठना उनकी साधना का बहुत बड़ा प्रमाण है। लाखों लोगों के मन, जीवन और परिवार में श्रद्धा की मूर्ति बनकर जो विराजमान हैं ऐसे सन्त आचार्यश्री विद्यासागर इस विषम पंचम काल में भी विराट और निर्दोष-चर्या व्यक्तित्व के धनी हैं। आप करुणा और अनुशासन की मूर्ति हैं। आचार्यश्री की हर चर्या आगम युक्त और विवेक से भरपूर होती है। आचार्यश्री शब्दों के खिलाड़ी और जादूगर हैं। वे शब्द अभिव्यक्ति और सम्प्रेक्षण के रजत पट पर शब्दों को नूतन अर्थ प्रदान करते हैं । पूज्यश्री विलोम अर्थ शक्ति के विशेषज्ञ हैं।

आचार्यश्री के ''स्वर्णिम 50 वें संयम वर्ष'' पर उनकी चेतन कृति सभी योग्य बाल ब्रह्मचारी शिष्यों का समग्र परिचय देना, उनके साहित्य को भारतीय संचार माध्यमों पर लाना, उनकी प्रेरणा से दयोदय गौशाला, गौवंश रक्षा, जन स्वास्थ्य, तीर्थ संरक्षण संवर्द्धन, प्रशासनिक प्रशिक्षण, प्रतिभा स्थली, प्रतिभा प्रतीक्षा (कन्या आवासीय छात्रावास) स्थापत्यकला, जिनालय-मूर्ति के निर्माण इत्यादि में जो आचार्यश्री की मार्गदर्शक उत्प्रेरणा रही है। उसे जनसंचार के माध्यम से मानस पटल पर लाना तथा आचार्यश्री की वाचना, स्वाध्याय, आयोजन को जन-जन तक पहुँचाना, प्राचीन आचार्यों के मौलिक ग्रन्थ सृजन को पुनः प्रकाशित करना, आचार्यश्री की रचनाओं को विद्यालय-महाविद्यालय में पाठ्यक्रम के रूप में समायोजित कराना, महिला बाल विकास मंत्रालय के माध्यम से आचार्यश्री की संस्कार निर्माण पहल को राष्ट्रव्यापी बनाना, व्यसन मुक्ति अभियान को युवा वर्ग में सम्प्रेषित करना, आचार्यश्री द्वारा राष्ट्रीय चिन्तन के माध्यम से भ्रष्टाचार, आतंकवाद, मांसनिर्यात आदि मद्यपान बुराईयों को समाप्त करने की पहल करना, विश्वशान्ति की दिशा में सशक्त अभियान छेड़ना-जैसे अनेकानेक राष्ट्र-धर्म-समाज हितैषी कार्यों को सामने लाना।

इस तरह से 'संस्कार सागर' ने अनेक सपने संजोये हैं बस देखना यह है कि आप सबके सहयोग से इन सपनों को पूरा किस तरह से किया जा सकता है। पाठकों, लेखकों, विद्वानों से सहयोग की अपेक्षा सहित हम पूर्ण आशान्वित हैं। ■

दान उत्सव - परोपकार की खुशी का जीवन

• ललित गर्ग, दिल्ली •

हर वर्ष महात्मा गाँधी की जन्म जयंती से एक सप्ताह तक **'दान उत्सव'** - यानी देने, परोपकार करने की खुशी एवं प्रसन्नता का सप्ताह मनाया जाता है। दान देने की परम्परा हमारे यहां प्राचीन काल से है, लेकिन उसको एक त्यौहार एवं उत्सव की शक्ल सन् 2009 में दी गई। इस एक सप्ताह में रिक्शा चलाने वाले से लेकर बड़ी-बड़ी कम्पनियों के सीईओ, सरकारी कर्मचारियों से लेकर राजनेता, व्यापारी से लेकर प्रोफेशनल्स, युवा से लेकर वृद्ध, पुरुष- महिलाएँ सभी इस सप्ताह को उत्साह से मनाते हुए अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान-सहयोग देने की खुशी बटोरते हैं । कहा जाता है दान से हाथ पवित्र हो जाते हैं। जैसे तालाब में एक जगह पानी इकट्ठा रहने से वह सड़ने लग जाता है। किन्तु वही तालाब का पानी यदि खेतों में सिंचाई के लिए छोड़ दिया जाता है तो वह सड़ा पानी भी सोना, मोती उगलने लग जाता है। धान्य की पैदावार बढ़ा देता है। इसी तरह घर की तिजोरी में बंद पड़ा धन, अगर किसी की सेवा में, सहायता में, मंदिर निर्माण में स्कूल व हास्पिटल बनाने में किसी भूखे को भोजन देने में खर्च कर दिया जाए तो उससे धन का जहर समाप्त हो जाता है और उससे उस जोड़-जोड़कर धरने वाले के हाथ भी पवित्र हो जाते हैं। उसकी आत्मा को बहुत चैन मिलता है।

दान देने की एक आधुनिक तकनीक ईजाद हुई है क्राउडफंडिंग के रूप में । पीयूष जैन इम्पैक्ट गुरु के माध्यम से क्राउडफंडिंग को भारत में लोकप्रिय करने में जुटे हैं। उनका मानना है कि भारत के सुनहरे भविष्य के लिए क्राउडफंडिंग अहम् भूमिका निभा सकती है और यह भारत में काफी सफल होगा। दान उत्सव को वे नये बनते समाज की बड़ी जरूरत मानते हैं। यहाँ अमीर-गरीब के बीच गहरी खाई है। उसे पाटने के लिये अमीर एवं सुविधा से सम्पन्न वर्ग मिलकर गरीबों की मदद कर सकते हैं और उसी के लिये दान उत्सव मनाया जाता है। हम जहां रहते हैं वहाँ एक दूसरे की मदद के लिए लोगों को आगे आना चाहिए, बिना उनके सहयोग के समाज आगे नहीं बढ़ सकता। इस तरह की सोच हमें वास्तविक खुशी दे सकती है।

वास्तविक खुशी और प्रसन्नता के कारणों पर कनाड़ा में एक शोध हुआ। उसके अनुसार धन की अधिकता से व्यक्ति प्रसन्नता महसूस नहीं करता है बल्कि लोग अपना धन दूसरों पर खर्च कर ज्यादा प्रसन्न महसूस करते हैं। कोलंबिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं का कहना है कि चाहे खर्च की गई रकम छोटी ही क्यों न हो, व्यक्ति को प्रसन्न बनाती है। शोध में वे कर्मचारी ज्यादा खुश पाए गए जो बोनस की सारी रकम खुद पर खर्च करने के बजाय कुछ रकम दूसरों पर भी खर्च करते हैं। शोध दल की

मुखिया प्रोफेसर एलिजाबेथ डन कहती हैं - इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि कौन कितना कमाता है, लेकिन लोग दूसरों के लिए खर्च करने के बाद अपने भीतर ज्यादा खुशी महसूस करते हैं ।

सचमुच कई तरह से खुशियाँ देती है यह जिंदगी । खुशी एवं मुस्कान भी जीवन का एक बड़ा चमत्कार ही है, जो जीवन को एक सार्थक दिशा प्रदान करता है । हर मनुष्य चाहता है कि वह सदा मुस्कुराता रहे और मुस्कुराहट ही उसकी पहचान हो क्योंकि एक खूबसूरत चेहरे से मुस्कुराता चेहरा अधिक मायने रखता है, लेकिन इसके लिए आंतरिक खुशी जरूरी है । जीवन में जितनी खुशी का महत्त्व है उतना ही महत्त्वपूर्ण है कि वह खुशी हम कहाँ से और कैसे हासिल करते हैं । खुश रहने की अनिवार्य शर्त है कि आप खुशियाँ बाँटें । खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं और अपना दुख बाँटने से घटता हैं । यही वह दर्शन है जो हमें स्व से पर-कल्याण यानी परोपकारी बनने की ओर अग्रसर करता है जीवन के चौराहे पर खड़े होकर यह सोचने पर विवश करता है कि सबके लिये क्या सुख है ?

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । वह सबके बीच रहता है, अतः समाज के प्रति उसके कुछ कर्त्तव्य भी होते हैं । सबसे बड़ा कर्त्तव्य है एक-दूसरे के सुख-दुःख में शामिल होना एवं यथाशक्ति पात्र लोगों की सहायता करना । बड़े-बड़े संतों ने इसकी अलग-अलग प्रकार से व्याख्या की है । संत तो परोपकारी होते ही हैं । तुलसीदास ने श्री **रामचरितमानस** में श्रीराम के मुख से वर्णित परोपकार के महत्त्व का उल्लेख किया है **परहित-सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥**अर्थात् परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के समान कोई अधर्म नहीं । संसार में वे ही सुकृत मनुष्य हैं जो दूसरों के हित के लिए अपना सुख छोड़ देते हैं।

आज हम देखते हैं, जो लोग अनेक पाप कर्मों में हिंसा और क्रूरता से, भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी से पैसा कमाते हैं । उनका जीवन दुःखी होता है जबकि वही पाप का धन, सेवा की खेती में लगाकर पुण्य की फसल पैदा कर देता है ।

अक्सर देखा जाता है, लोग गरीब को अपने सामने हाथ जोड़ते देखते हैं तो उनको नफरत से दुत्कार देते हैं । जैसे वो कोई इंसान नहीं, कुत्ता या सूअर हो, परन्तु वे ही जब कोई इन्कम टैक्स, पुलिसवाला या सरकारी अधिकारी उनके सामने आ धमकता है तो उसके सामने हाथ जोड़कर, गिड़गिड़ाकर अपना धन देने लगते हैं । उनकी जी हूजूरी, चापलूसी, चमचागिरि करने लगते हैं । लोगों की आदत है हाथ जोड़कर मांगने वाले को नहीं देते, परन्तु ख़ुद हाथ जोड़कर मजबूर होकर देते हैं ।

एक अंग्रेज विचारक ने लिखा है-**वन हैंड ओपन्ड इन चेरिटी इज वर्थ ए हन्ड्रेड इन प्रेयर** - प्रार्थना के लिए सौ बार हाथ जोड़ने के बजाय दान देने के लिए एक बार हाथ

खोलना अधिक महत्त्वपूर्ण है । जब मनुष्य के पास भाग्य से पैसा आता है, लक्ष्मी की कृपा होती है तो उसे समझना चाहिए उसके लिए यह सुअवसर है मैं अपने हाथों को पवित्र कर लूँ । दान देकर अपनी जीवन नैया को पार कर लूँ ।

नीतिकारों का कहना है कि - धन कमाने में इन हाथों से कई तरह के पाप करने पड़ते हैं, परन्तु यदि हाथों से दान कर दिया जाये तो वह पाप धुल जाता है । हाथ की शोभा गहनों से, कीमती हीरे की घड़ियों से नहीं है, परन्तु दान से मानी गयी है । हाथ का आभूषण कंगन नहीं दान है, कंठ का आभूषण हार नहीं सत्य हैं, कानों का आभूषण कुण्डल नहीं है, शास्त्र सुनना हैं, यदि आपके पास ये सच्चे आभूषण हैं तो फिर आपको कंगन, हार और कुण्डल के झूठे आभूषणों की कोई जरूरत नही है । इन हाथों की शोभा दान से होती है और इसीलिये दान उत्सव मनाया जाता है । दान देने से, सेवा करने से, हाथों में जो महान शक्ति पैदा होती है वह अद्भुत है । सेवा परायण, गरीबों के हमदर्द हाथों में दिव्य चमत्कार पैदा हो जाता है और वे हाथ स्वयं ही पवित्र बन जाते हैं, कल्पवृक्ष बन जाते हैं ।

एक चीनी कहावत - **पुष्प इकट्ठा करने वाले हाथ में कुछ सुगंध हमेशा रह जाती है।** जो लोग दूसरों की जिंदगी रोशन करते हैं, उनकी जिंदगी खुद रोशन हो जाती है । हँसमुख, विनोदप्रिय, विश्वासी लोग प्रत्येक जगह अपना मार्ग बना ही लेते है । मनोवैज्ञानिक मानते हैं खुशी का कोई निश्चित मापदंड नहीं होता । एक माँ बच्चे को स्नान कराने पर खुश होती है, छोटे बच्चे मिट्टी के घर बनाकर, उन्हें ढहाकर और पानी में कागज की नाव चलाकर खुश होते हैं । इसी तरह विद्यार्थी परीक्षा में अव्वल आने पर उत्साहित हो सकता है । सड़क पर पड़े सिसकते व्यक्ति को अस्पताल पहुँचाना हो या भूखे-प्यासे बीमार की आहों को कम करना, अन्याय और शोषण से प्रताड़ित की सहायता करना हो या सर्दी से ठिठुरते व्यक्ति को कम्बल ओढ़ाना, किन्हीं को नेत्र ज्योति देने का सुख हैं या जीवन और मृत्यु से जूझ रहे व्यक्ति के लिये रक्तदान करना ये जीवन के वे सुख है जो इंसान को भीतर तक खुशियों से सराबोर कर देते हैं ।

भगवान महावीर, तथागत बुद्ध ईसा, मोहम्मद साहब, गुरु नानकदेव, कबीर, गाँधी, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, आचार्य तुलसी और हजारों हजार महापुरुषों ने हमें जीवन में खुश, नेक एवं नीतिवान होने का संदेश दिया है । इनका समूचा जीवन मानवजाति को बेहतर अवस्था में पहुँचाने की कोशिश में गुजरा । इनमें से किसी की परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थी । हर किसी ने मुश्किलों से जूझकर उन्हें अपने अनुकूल बनाया और जन-जन में खुशियाँ बाँटी । ईसा ने अपने हत्यारों के लिए भी प्रभु से प्रार्थना की कि प्रभु इन्हें क्षमा करना, इन्हें नहीं पता कि ये क्या कर रहे हैं । ऐसा कर उन्होंने परार्थ-चेतना यानी

शेष पेज 19पर....

गठिया को ऐसे मिटाएँ

संयम स्वास्थ्य योग

आर्थराईटिस को ही गठिया भी कहते हैं। इस बीमारी से पीड़ित मरीज को हड्डियों में सूजन अकड़न और जोड़ों में दर्द रहता है। विशेषज्ञों के अनुसार हड्डियों के जोड़ों में यूरिक एसिड जम जाने की वजह से वह जोड़ सही रूप से काम नहीं कर पाते हैं। यूरिक एसिड के जमा हो जाने से मरीज के जोड़ों में गाँठे भी बन जाती हैं। धीरे-धीरे यह पूरे शरीर की हड्डियों तक पहुँच जाती हैं। हालांकि यह बीमारी किसी को भी हो सकती है लेकिन अक्सर यह देखने में आता है कि महिलाओं में यह बीमारी अधिकांश मेनोपॉज के बाद ही होती है। बदलती जीवन शैली के कारण यह बीमारी अब युवाओं में भी देखने को मिल रही है। इसके कई प्रकार होते हैं। इनमें आस्टिओ आर्थराईटिस रुमेटाइड व सोरायटिक अर्थराईटिस सबसे कॉमन हैं।

आस्टियो आर्थराईटिस - आर्थराइटिस का सबसे सामान्य प्रकार हैं। इसमें शरीर का भार वहन करने वाले अंग के जोड़ों में दर्द होता है ज्वाइंट की कार्टिलेंज कमजोर होने की वजह से यह दर्द होता है। लापरवाही बरतने पर यह जोड़ों में सूजन का कारण बन जाता है। 50 वर्ष की आयु के बाद मोनोपॉज के बाद हार्मोन्स में बदलाव की वजह से ऑस्टियो आर्थराईटिस से महिलाएँ ज्यादा ग्रसित होती हैं। **प्रमुख लक्षण -** घुटने में दर्द की शिकायत लम्बे समय तक बने रहना।सुबह उठने के तुरंत बाद जोड़ों में दर्द महसूस होना। ठंड में ज्वाइंट पेन रहना। घुटनों को हिलाने डुलाने में परेशानी होना।

ऐसे मिलेगा आराम - सुबह शाम नियमित व्यायाम करें। पौष्टिक संतुलित आहार लें। अपना वेट कंट्रोल रखें। दर्द से राहत पाने के लिए पूरा ट्रीटमेंट कराएं। दर्द ज्यादा रहता है तो फिजियोथेरेपी या सर्जरी करा सकते हैं।

रूमेटॉइड आर्थराईटिस - इस प्रकार के आर्थराईटिस में शरीर के दोनों हिस्सों के ज्वाइंट प्रभावित होते हैं। जैसे दोनों कोहनियों के ज्वाइंट दोनों घुटनों के ज्वाइंट। इसमें तेज दर्द पीड़ित को परेशान करता है। यह त्वचा, आँख, हार्ट आदि को भी प्रभावित करता है।

प्रमुख लक्षण - दोनों ज्वाइंट में एक साथ दर्द होना ज्वाइंट्स में सूजन रहना, मसल्स में कमजोरी रहना। **उपचार -** शुरूआती स्तर पर चिकित्सक दवाइयों के माध्यम से इस पर काबू पाने की कोशिश करते हैं। इसके लिए ब्लड टेस्ट किया जाता है। ट्रीटमेंट के साथ-साथ व्यक्ति को आराम की भी सख्त जरूरत होती है। सुबह-शाम व्यायाम से भी काफी लाभ पहुँचता है। रूमेटाइड आर्थराइटिस में ओमेगा 3 फैटी एसिड से मरीज को अत्यधिक लाभ मिलता है। **सोरायटिक आर्थराइटिस -** यह आर्थराईटिस का वह प्रकार है जो सोरायसिस से ग्रस्त पेशेंट्स में होता है। यदि सही समय पर इलाज नहीं कराया तो यह हड्डियों के जोड़ को खराब कर सकता है।

प्रमुख लक्षण - एक साइड के ज्वाइंट या दोनों साइड के ज्वाइंट में लगातार दर्द रहना। अंगुलियों और अंगूठों में सूजन, बैक पेन महसूस होना।

ऐसे मिलेगा आराम - बॉडी वेट को संतुलित रखें। महिलाएँ ज्यादा वजन ना उठाएँ। नियमित रूप से व्यायाम करें। ■

वैज्ञानिक दृष्टि से जैन सिद्धांत

• आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री आत्मा •

वैज्ञानिक दृष्टि से तात्पर्य कार्य-कारण को मानने वाली दृष्टि से है। वह जो, किसी भी तथ्य को प्रयोगों के द्वारा जानने-समझने में विश्वास रखती है, वह वैज्ञानिक दृष्टि है। विज्ञान द्वारा सूचनाओं व जानकारियों के हेतु-कारण व परिणाम को समझता है, समझने की बात करता है। बिना जाने सिद्धांत जिन प्रणीत तत्त्व है। "**जिन**" वह है जो सर्व प्रकारेण खुद को जान चुका है, ऐसे सम्पूर्ण ज्ञानी में किसी प्रकार का विकास शेष नहीं होता, अतः संपूर्ण विज्ञान प्रगट हो जाता है। वे सम्पूर्ण तत्त्व के पारदर्शी होते हैं। उन्होंने जो ज्ञान हमें दिया, वह तो स्वयं में पूर्ण वैज्ञानिक है ही किन्तु यहाँ हमें यह समझने की जरूरत है कि हम उन वैज्ञानिक सिद्धांतों को वैज्ञानिक तरीकों से जानते-समझते प्रयोग में लाते हैं अथवा मात्र उनको मानते हैं, अन्धानुकरण करते एवं कराते हैं।

यहाँ प्रश्न जैन सिद्धांतों की वैज्ञानिकता का नहीं है बल्कि हमारी समझ को वैज्ञानिक बनाने का है। जैन सूत्रों में स्पष्टतया उल्लेख है कि आप मानो मत, जानो प्रज्ञा द्वारा धर्म की समीक्षा करो व अपना सत्य स्वयं खोजो। जीव-अजीव, पाप-पुण्य, आस्रव-संवर-बंध-निर्जरा व मोक्ष को जानकर, अनुभव कर, श्रद्धा करता है, वह सम्यक् विज्ञानवेत्ता है, सम्यक्दर्शी है। किन्तु जब तक लोग धारणाओं को धर्म मानते हैं, तब तक वैज्ञानिक दृष्टि पैदा नहीं होती। बचपन के संस्कारों को as it is सत्य मानने की आदत है जो निरपेक्ष व निष्पक्ष जिज्ञासु बनने से रोकती रही है। अवसर दादी-नानी की कहानियाँ हमें दादी-नानी की उम्र तक पहुँच कर भी सत्य प्रतीत होती है, उन पर कभी खोज दृष्टि पैदा ही नहीं होती। ऐसे में धर्म के सिद्धांतों की वैज्ञानिकता समझने व अपनी दृष्टि को वैज्ञानिक बनाने के लिए हमें जैन धर्म के सिद्धांत क्या हैं, इसको व इन सिद्धांतों को मूलस्वरूप के अतिरिक्त इसके आस-पास बने रिवाजों, संस्कारों व परिपाटियों को अलग करके समझना होगा। मूल तत्त्व को विविध परम्पराओं की प्रणालियों से जुदा करना होगा।

हर परम्परा की प्रणालियाँ अर्थात् समाचारी व नीति-नियम जुदा-जुदा है किन्तु मौलिक सिद्धांत इन सब परंपराओं में मौजूद है। अक्सर लोग मौलिक सिद्धांतों की स्पष्ट समझ को पाने की बजाय रिवाजों के अनुकरण को धर्म पालना कहते हैं। यहीं चूक हो जाती है। आचार-संहिता के नियमों को जैन धर्म के मौलिक सिद्धांतों के रूप में समझा जाने के कारण जैन धर्मी भी परस्पर कटे-कटे रहते हैं। जैसे कोई स्नान को अधर्म बताता है तो कोई बिना स्नान के मंदिर जी में निषिद्ध बताते हैं। कोई धूप, दीप, बत्ती को तेउकाय आरम्भ व

हिंसा बताते हैं तो कोई मंदिर में पूजा का अनिवार्य अंग बताते हैं। ऐसे में सामान्य जन का भ्रमित होना सहज ही है। धर्म के मौलिक सिद्धांतों को समझने के लिए इन आचार-संहिताओं में व दार्शनिक मान्यताओं में कहीं भी उलझने की जरूरत ही नहीं है।

आओ, जाने जैन धर्म के सिद्धांत -

1. आत्मवाद - जैन दर्शन पूर्णतः आत्मवादी दर्शन है। वह कहता है कि आपकी जीवन यात्रा के निर्धारक आप स्वयं हैं । आप ही अपने कर्त्ता व किए गए कल्प के भोक्ता हैं । आपके जन्म-जरा-मृत्यु के लिए किसी ईश्वर या अन्य सत्ता का हस्तक्षेप नहीं। यदि आपको अपने द्वारा किए गए कर्मों का फल भोगवाने के लिए किसी ईश्वर की जरूरत हो तब ईश्वर को भी तो इसी कर्म श्रृंखला का हिस्सा बनना पड़ेगा । ईश्वर स्वयं कर्त्ता बन जाएगा जो अपने लिए तो कुछ नहीं करता किन्तु शेष सारे सांसारिक लोगों को उनके कर्मों का फल देने का कार्यभार संभालता है ऐसे में अगर कोई उस ईश्वर से दया की भीख मांगे तो वह ईश्वर उस पर कृपा करके उसके दुष्ट कर्मों की माफी भी दे सकता है और अगर कोई उसकी पूजा न करें, उसकी भक्ति न करे, उस पर विश्वास न रखे, तो संभव है कि ईश्वर उसे माफ न करे। बहुत कठोर फल देवे। इस प्रकार ईश्वर या खुदा की पूजा व उससे खौफ मानव जीवन की सोच का अनिवार्य अंग बना दिया गया । जैनधर्म के सिद्धांत की वास्तविकता को अगर समझा जाए तो वह ऐसे किसी ईश्वर की पूजा-वंदगी की बात ही नहीं करता, वह न तो ईश्वरवादी है, न ही निरीश्वरवादी । वह ईश्वर को शुद्ध-प्रबुद्ध-मुक्त आत्मा कहता है, जो न तो किसी का कुछ करता है, न ही करने की प्रेरणा या अवरोध देता है। इस प्रकार जैन दर्शन की वैज्ञानिकता इस सिद्धांत में गजब की है कि आपका मालिक कोई अन्य नहीं, आप स्वयं ही हैं।

2. कर्मवाद - जैन दर्शन का कर्मवाद कहता है कि हर जीव अपने कर्म करने के लिए स्वतंत्र है किन्तु किए हुए कर्म का फल भी उसे अवश्य ही भोगना ही होता है । परिणाम को बदलने का नया कर्म भी किया जा सकता है और वह नया कर्म फिर से नए प्रतिरूपों में अभिव्यक्ति पाता है । यूं हम हर पल अपने भाव कल्प से कर्म सर्जन, विसर्जन व विशिष्टीकरण करते रहते हैं । यह ठीक इसी प्रकार है जैसे H_2O पानी होता है और C_2O कार्बन डाईऑक्साईड । इसी तरह हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। कर्मफल का भोग यह बताता है कि कर्म किस तरह का किया गया था। इस कार्य-कारण श्रृंखला में किसी प्रकार का मनचाहा बदलाव गैर वैज्ञानिक तरीकों के संभव नहीं है। अगर अशुभ कर्मफल में कष्ट भोग नहीं चाहिए तो उन अशुभ बंध कारणों को भी छोड़ना होगा जिनसे यह परिणाम प्रगट हो रहे हैं। इसी तरह शुभ फल भोग के कारणों को प्रगट किए बिना शुभ परिणामों की प्राप्ति असंभव है। इस वैज्ञानिक श्रृंखला को समझकर जीतने वाला कभी भी अपने को गैर जिम्मेदार नहीं बना सकता। हमारे हर कर्मफल भोग के स्वरूप के जिम्मेदार हम स्वयं ही हैं। वे फल

हमें ही भोगना होंगे।

3. चमत्कार या पुरुषार्थ पर जोर- कोई भी धर्म तब अवैज्ञानिक बन जाता है जब उसमें चमत्कारों की घोषणाएं होती हैं। जब यह कहा जा रहा हो तुम कुछ न करो, बस विश्वास करो और चमत्कार घटित होने लगेंगे। हमें मान लो और सब कुछ हम कर देंगे। ह**में सर्वशक्तिमान ईश्वर मानो, हम तुम्हें मुक्त कर देंगे। ऐसी बातें बड़ी गैर वैज्ञानिक प्रतीत होती हैं। भला किसी भी नाम, रूप, आकार या शब्दों की अभ्यर्थना आदमी को मुक्त कैसे कर देगी ? जब किसी अन्य ने बांधा ही नहीं तो वह मुक्ति भी कैसे दे सकता है ?**

अक्सर चुनौतीपूर्ण हालातों में कायर मन चमत्कार की उम्मीद करता है और इसी उम्मीद के सहारे वह अनेकों संतों-पंथों-ग्रन्थों की परिक्रमा करता है किन्तु मानवीय मस्तिष्क यह उम्मीदपरक दृष्टिकोण दुःखद हालातों में ही टिका पाता है। हालात बदलते ही स्वयं द्वारा मान्य इन प्रक्रियाओं पर स्वयं ही प्रश्नचिन्ह लगाना शुरू कर देता है। कुल मिलाकर आसरा ढूंढने वाला व्यक्ति कभी भी हिम्मती, खोजी व वैज्ञानिक नहीं हो पाता । जैन सिद्धांत इंसान को आसरा (आश्रय) देने का आश्वासन नहीं देता। वह किसी तरह की ऐसी घोषणाएँ नहीं करता कि तुम मुझमें (यानि जैन धर्म में) विश्वास करो, तो ही तुम्हारा कल्याण संभव होगा। तुम मुझे मानो या न मानो इससे फर्क नहीं पड़ता, किन्तु तुम स्वयं को जानो या न जानो इससे बहुत फर्क पड़ता है। इसीलिए जैन सिद्धांत प्रामाणिक है क्योंकि वे किसी भी तरह के भय, प्रलोभन, आग्रह व आश्वासनों को प्रश्रय नहीं देते हैं।

वे शक्ति को, अभय को उपलब्ध होने व अशरण के विज्ञान को समझकर जीने की बात करते हैं। चुनौतीपूर्ण या कष्टप्रद हालातों को भी सम्यक् नजरिए से देखने व उनमें प्रतिक्रिया रहित समभाव से गुजरने की बात करते हैं।

वैसे भी धर्म नहीं, धर्मान्धता अवैज्ञानिक होती है। धर्म जहाँ आध्यात्मिक सत्य की ओर उन्मुख करता है वहीं धर्मान्धता इंसान को यह मेरा धर्म-यह तेरा धर्म ऐसे भेदों में उलझाती है। धर्मान्तरण की समस्या भी इसी धर्मान्धता की देन है। जो लोग दूसरों के विश्वासों को अपने मान्य विश्वासों में तब्दील करने की चेष्टा करते हैं, वे ही धर्म के नाम पर गुटबाजी व साम्प्रदायिकता के माहौल को जन्म देते हैं । हिन्दू-मुस्लिम दंगे इन धर्मान्ध लोगों की देन है। हकीकत में धर्म तो आत्मस्वरूप को पहचान कर अपने स्वभाव में जीने की साधना व जागृति का नाम है। इसे खुद को समझ कर जीना होता है। जहाँ हम ज्ञान व विवेक से जीते हैं, वहाँ हम लयबद्ध व तनावमुक्त होते हैं। इसके विपरीत अंधविश्वासों और मूढ़ताओं से भरकर जीने वाले लोग डरपोक, कायर, लोभी, दंभी व पाखंडी बनते जाते हैं। इसीलिए हमारा यही कहना है कि- जैन धर्म की वैज्ञानिकता को समझने के लिए स्वयं के नजरिए को मूढ़ता मुक्त बनाइए। जय हो !!

भी इस बात का समर्थन करता है कि ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक थे।

भागवत्कार ने ऋषभदेव जी का जो वर्णन किया है वह जैन मान्यता के ही अनुरूप है। वह योगी हैं उनका योग कर्म संन्यास रूप था। जैन धर्म में कर्म संन्यास रूप योग की साधना की जाती है। ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यन्त सभी तीर्थंकर योगी थे। मौर्यकाल से लेकर आज तक की सभी दिगम्बर जैन मूर्तियाँ योगी के रूप में प्राप्त होती हैं।

स्व. श्री रामप्रसाद चन्दा के अनुसार मोहन जोदड़ो से प्राप्त पत्थर की मूर्ति योगी की मूर्ति है। उन्होंने मार्डन रिव्यू, जून 1932 में एक लेख प्रकाशित कराया था। उसमें उन्होंने भारतीय धर्मों में योग की स्थिति का चित्रण करके लिखा है - सिंधु घाटी से प्राप्त मोहरों पर बैठी अवस्था में अंकित देवताओं की मूर्तियाँ ही योग की मुद्रा में नहीं हैं अपितु खड़ी अवस्था में अंकित मूर्तियां भी योग की कायोत्सर्ग मुद्रा को बतलाती हैं। मथुरा म्युजियम में दूसरी शती की कायोत्सर्ग में स्थित ऋषभदेव जिन की मूर्ति है। इस मूर्ति की शैली से सिन्धु से प्राप्त मोहरों पर अंकित खड़ी हुई देवमूर्तियों की शैली बिल्कुल मिलती है। ऋषभ या वृषभ का अर्थ होता है नंदी (बैल) और ऋषभदेव तीर्थंकर का चिन्ह नंदी (बैल) मोहर नं. 3 से 5 तक के ऊपर अंकित देवमूर्तियों के साथ नंदी (बैल) भी अंकित है, जो ऋषभदेव का पूर्व रूप हो सकता है।

मोहनजोदड़ो की तरह हड़प्पा से प्राप्त मूर्तियाँ भी नग्न हैं। जिनमें से एक शिव की मूर्ति मानी गई है और दूसरी को भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के तत्कालीन संयुक्त निर्देशक श्री टी.एन. रामचन्द्रन ऋषभ तीर्थंकर की मूर्ति मानते हैं। ऋग्वेद (2-33-15) रुद्र सुक्त में एक ऋचा है - 'एव वृषभ चेकितान यथा देव न ह्णिाणे न हंसी। हे वृषभ!' - ऐसी कृपा करो कि हम कभी नष्ट न हो। तांड्य (14-25) और प्रजापथ ब्राह्मण (5,2-5-17) में ऋषभ को पशुपति कहा है।

भगवान ऋषभदेव की दो पत्नियाँ थीं एक का नाम सुनन्दा था और दूसरी का नाम नन्दा (यशस्ती) था। इनमें उनके सौ पुत्र और दो पुत्रियाँ हुई। बड़े का नाम भरत था। यही भरत इस युग में भारत वर्ष के प्रथम चक्रवर्ती हुए और उन्हीं के नाम से इस देश का नाम भारत पड़ा। एक दिन भगवान ऋषभदेव राज सिंहासन पर विराजमान थे। सभा लगी हुई थी अचानक नृत्य करते-करते नीलांजना का शरीरपात हुआ। इस घटना से भगवान् का चित्त विरक्त हो उठा। तुरन्त सब पुत्रों को राज्य सौंप कर उन्होंने दीक्षा ले ली और 6 माह की समाधि लगा कर खड़े हो गये। उनको देख और भी अनेक राजाओं ने दीक्षा ली। किन्तु वे भूख-प्यास के कष्ट सहन नहीं करने से भ्रष्ट हो गये। छह माह के बाद भगवान की समाधि भंग हुई तो उन्होंने आहार

के लिये विहार किया। विहार करते-करते वे हस्तिनापुर पहुँचे। वहाँ के राजा श्रेयांस ने उन्हें इक्षु रस का आहार कराया। भगवान् का यह आहार वैशाख शुक्ला तीज यानी अक्षय तृतीया के दिन हुआ था। पुरिमताल नगर के उद्यान में उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और उनका समवसरण लगा। अपनी दिव्य ध्वनि में उन्होंने कहा कि मेरे बाद तेईस तीर्थंकर होंगे। किसी ने पूछा समवसरण में जो जीव वर्तमान में हैं क्या उनमें से कोई तीर्थंकर होने वाला है? भगवान् ने कहा कि भरत का पुत्र अंतिम तीर्थंकर होगा। इस तरह भारत में चौबीस तीर्थंकर हुए - प्रथम भगवान ऋषभदेव और अंतिम भगवान महावीर। जैसे समस्त देश में महावीर जयंती मनाई जाती है वैसे ही ऋषभ जयंती एवं उनका निर्वाणोत्सव भी मनाया जाना चाहिए। प्रत्येक जिनालय में भगवान ऋषभदेव की मुख्य प्रतिमा भी होनी चाहिए।

यही युक्ति-यही मुक्ति

आज ही कर ले,
कल नहीं आएगा
ज्यादा नहीं थोड़े,
थोड़े में ही सारा,
घट भर जाएगा॥
आज जो कर ली,
नादानी तो कल,
फिसल ही जाएगा,
अनमोल तू
कौड़ी का न रह पाएगा॥
आत्मसात् करले
प्रवचन उसके जो
'सागर' मंथन कराएगा,
पंचमकाल में न दूजा
इस धरा पर आएगा॥

इसलिए यदि तुझे,
सम्भलना हो तो अब,
सागर में गोते लगाले,
अन्यथा अटक जाएगा,
लख-चौरासी में भटक जाएगा॥
यही विद्या है, यही सागर,
यही युक्ति है,यही मुक्ति,
इसे ही अंतः करण से,
जब भी समझ जाएगा,
तेरा बेड़ा पार हो जाएगा॥

• इन्द्रकुमार जैन 'शशीन्द्र' बाकलवाले, इन्दौर •

अपने व्यवसाय, व्यवहार और व्यक्तित्व का विकास करें

• सुरेश जैन (आई.ए.एस.), भोपाल •

1. हमारे देश में परम्परागत रूप से बड़ी व्यवसायी समाज है । इस समाज में अनेक सफल उद्योगपति है । इस समाज ने उद्योग और व्यापार में अनेक सफलताएँ प्राप्त की । इसका कारण यह है कि हमारी समाज के अनेक व्यक्तियों में सही निर्णय लेने की क्षमता, व्यवसाय और उद्योग करने की योग्यता, अवसरों को पहचानने और उनका मूल्यांकन करने की क्षमता है । हमारी समाज के व्यक्ति सदियों पूर्व से कुशल व्यवसायी रहे हैं, देश की वाणिज्यिक बागडोर सम्हालते रहे हैं और उनकी व्यावसायिक उपलब्धियाँ इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं ।

2. अब हमारी समाज के अनेक युवक एवं युवतियाँ उच्च एवं तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर बड़ी-बड़ी कम्पनियों और बैंकर्स के प्रमुख हैं । भारत सरकार और राज्य सरकार के बड़े-बड़े पदों पर कार्यरत हैं । परन्तु यह दुःखद भी है कि रोजगार प्रदान करने वाले समाज के अनेक युवक एवं युवतियाँ अब छोटी-छोटी नौकरियाँ प्राप्त करने की कतार में खड़े हो गए हैं । परिणामतः व्यवसायों का नियंत्रण धीरे-धीरे हमारी समाज के हाथों से खिसक रहा है ।

3. भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने में व्यवसायी समाज के परिवारों द्वारा किए जा रहे व्यवसाय का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है और भारतीय अर्थतंत्र को नये आयाम प्रदान करता रहा है । नई पीढ़ी के लिए व्यापार की नई संभावनाएँ उपलब्ध हैं । अब यह आवश्यक है कि हम अपने युवक युवतियों को व्यवसाय की ओर आकर्षित करें । उन्हें सफल उद्योगपतियों से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें । व्यावसायिक और व्यापारिक चुनौतियाँ शुरु में कुछ कठिनाईयाँ भले ही पैदा करें किन्तु इन चुनौतियों का सामना कर हमारे युवक और युवतियाँ कुशल, स्मार्ट और होशियार बनते हैं । अतः यह आवश्यक है कि वे रणनीतियाँ बनाएं, आराम छोड़कर परिश्रम करें । ग्राहकों के घर जाएँ, उनसे मिलें । उभरती परिस्थितियों के अनुरूप अपने जीवन में बदलाव करें ।

4. अब नए-नए सामाजिक बदलाव हो रहे हैं । नौकरी के बजाय खुद का व्यवसाय करने का चलन बढ़ रहा है ।सरकार और बैंक इस परिवर्तन को प्रोत्साहन दे रहे हैं । प्रधानमंत्री स्टार्ट अप के लिए प्रेरित कर रहे हैं । अतः अब अनेक युवा अपना उद्यम शुरु करना चाहते हैं । अपना उपक्रम स्थापित कर युवा गर्व और रोमांच का अनुभव करना चाहते हैं । यद्यपि यह सही है कि बिजनेस खड़ा करना कठिन होता है । व्यापार जोखिम भरा साहसी काम है । तदपि अनेक युवक अपनी आकर्षक नौकरी छोड़कर साहसपूर्वक अपना बिजनेस खोल रहे हैं । डॉक्टर अस्पताल खोल रहे हैं । अभिनेता

फिल्में बना रहे हैं । शिक्षक अपना कोचिंग तंत्र स्थापित कर रहे हैं । बड़ी होटलों के शेफ अपना रेस्टोरेन्ट खोल रहे हैं । उद्यमशीलता बढ़ रही है । यह सही है कि बिजनेस से जब कभी नाकामी भी मिलती है या पूरी सफलता नहीं मिलती है। अतः हम सफलता और असफलता दोनों को बिजनेस के आवश्यक अंग के रूप में स्वीकार करें । कम समय में ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने की प्रवृत्ति को नियंत्रित करें।

5. एपल कम्पनी के स्टीव जाब्स का इतिहास देखें । कम्पनी में घाटा होने पर उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। कम्पनी में जब और अधिक घाटा होने लगा तो उन्हें वापिस बुला लिया गया । इसके बाद स्टीव जाब्स ने एप्पल को दुनिया की सबसे बड़ी और कीमती कम्पनी बना दिया । इस प्रकार कभी-कभी असफलता और नाकामी ही सफलता की पहली सीढ़ी बन जाती है ।

6. समाज में घुलने-मिलने से हम स्वस्थ, खुशहाल और प्रसन्न रहते हैं । अपने इस हुनर को निखारकर हम अधिक आकर्षक होंगे । आत्मविश्वास से भरे होंगे और सभी के साथ स्वस्थ संबंध विकसित करने में सफल होंगे । अपनी बातचीत में जमीन से जुड़े शब्दों का उपयोग करें । बातचीत को सहज और दिलचस्प बनाएँ । ऐसे विचार प्रगट करें जो सीधे धरातल से जुड़े हों । भले ही हम यह स्वीकार करें कि हमारा कामनसेंस पर्याप्त है तदपि हमें अधिक से अधिक कामनसेंस की सदा जरूरत होती है । अतः अपने कामनसेंस में वृद्धि करते रहें ।

7. वर्तमान मंदी के दौर में हम आर्थिक कठिनाई और जब कभी आर्थिक बदहाली की स्थिति में होते हैं । गड्ढे में उतर जाते हैं । ऐसी स्थिति में यह विश्वास रखें कि हम अब इसके नीचे नहीं जा सकते हैं । अब केवल ऊपर जाने का ही रास्ता शेष बचता है । आर्थिक सफलता का ही विकल्प शेष बचता है ।

8. प्रत्येक कठिनाई और समस्या से नई सीख लें । अच्छी बातों का सतत् मनन करें । अपने मस्तिष्क को परिपक्व बनाएँ । हमारा मस्तिष्क सीखने से नहीं अपितु मनन करने से अधिक परिपक्व बनता है । सम्पूर्ण और पूर्णतः परिपक्व व्यक्ति बनने के सपने न देखें। ऐसा व्यक्ति मिलना दुर्लभ होता है ।

9. ब्रह्म मुहूर्त में सोकर उठें । प्रातः कालीन क्षण पवित्र होते हैं । हाई परफारमेंस, संस्कृति का निर्माण करते हैं और हमें बेहतर इंसान, बेहतर पिता और बेहतर अधिकारी, बड़े व्यापारी और बड़े उद्योगपति बनने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करते हैं । इस उद्देश्य से शाम को सात बजे तक भोजन कर लीजिए और प्रातः बिस्तर से जल्दी उठिए । जिससे कि अपने पूरे दिन का पूरा लाभ ले सके । बिस्तर में पड़े रहना और आलस्य करना छोड़ दें । व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक क्षेत्र में सर्वोच्च स्तर पर पहुँचने के लिए इच्छुक व्यक्तियों के लिए सबेरे जल्दी उठना बेहतर और जरूरी है । सूर्योदय के पूर्व हर सुबह के 60 मिनिट अपने दिमाग को पोषित करने, शरीर की देखभाल करने और चरित्र निर्माण के लिए सुरक्षित रखें । हमारा बाहरी जीवन

हमारे आंतरिक जीवन का दर्पण है। प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर कुछ आंतरिक काम करके हम अपने जीवन को बेहतर बनाएँ। अपनी सोच को विस्तार दें। शरीर को कम संवारे। दिन भर के लक्ष्यों की समीक्षा करें।

अंत में हमारी कामना है कि हम मार्टिन लूथर किंग जूनियर के निम्नांकित शब्दों को सदैव गुनगुनाते हुए सभी के साथ आगे बढ़ें-

अगर तुम उड़ नहीं सकते हो तो दौडों।
अगर तुम दौड़ नहीं सकते हो तो पैदल चलो,
अगर तुम पैदल नहीं चल सकते हो तो रेंगो,
तुम कुछ भी करो, किन्तु आगे बढ़ो।

साक्षात् महासागर है

वो आदि है वो अन्त है,
वो पतझड़ है, बसंत है,
वो ही अवनि है, अंबर है,
वो ही नग्न दिगम्बर है,
वो ही आगर है, प्रभाकर है
अंतरतम का दिवाकर है॥
वो तन में हैं, मन में हैं,
लेकिन धन में नहीं ,
इतना सहज है कि उसे,
ढूँढ सकते हो हर कहीं,
उसके लिए अंतर्मन चाहिए,
और ? और कुछ भी नहीं ॥
वो ही सार हैं वो अपार हैं,
उससे ही सबका बेड़ा पार है,
सम्पूर्ण श्रीमंडल की शोभा,
जिसने चहुँदिश बिखेरी है,
सपरिवार सिखाया जिसने
दुनिया न तेरी है न मेरी है॥।
आज भी सम्पूर्ण धरा को,
जो कर रहा है प्रकाशित,
सम्पूर्ण संघ को सदा ही,
जो करा रहा अनुशासित
ऐसे दिवाकर को न समझ पाएँगे ?
निश्चित ही गर्त में जाएँगे॥
फीकी है उपमायें सभी उसके आगे,
नर तन पाकर अभी भी न जागे,
अरे डुबकी लगा ले मन से,
मत चिपक धन से, तन से,
कांति सम्पूर्ण जग में उजागर है
बस यही इक विद्यासागर है॥
जी हाँ सागरों का सागर है
साक्षात महासागर हैं
शत शत नमन के साथ...

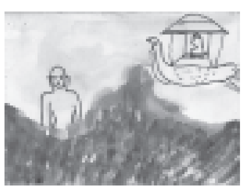

• इन्द्रकुमार जैन 'शशीन्द्र', इन्दौर •

पेज 9 का शेष... परोपकार का संदेश दिया। भगवान महावीर ने ''जियो और जीने दो'' का सिद्धांत देकर विश्वशान्ति का बीज बोया तो बुद्ध ने शिष्य आनंद को आधा गिलास पानी भरा है कहकर हर स्थिति में खुशी बटोरने का संदेश दिया। मोहम्मद साहब ने भेदभाव रहित मानव समाज का संदेश बांटा। तभी तो कालिदास ने कहा है कि सज्जनों का लेना भी देने के लिए ही होता है जैसे कि बादलों का।

परोपकार को अपने जीवन में स्थान दीजिए, जरूरी नहीं है कि इसमें धन ही खर्च हो। बस मन को उदार बनाइए। आपके आसपास अनेकों लोग रहते हैं। हर व्यक्ति सुख-दुःख के चक्र में फंसा हुआ है। आप उनके दुःख-सुख में सम्मिलित होइए। यथाशक्ति मदद कीजिए। परोपकार एक महान कार्य है। सबसे बड़ा पुण्य है। पहले बड़े-बड़े दानी हुआ करते थे। जो यथास्थान धर्मशालाएँ बनवाते थे। ग्रीष्मकाल में प्यासे पथिकों के लिए प्याऊँ की व्यवस्था करते थे। यह व्यवस्था आज भी प्रचलित है, योग्य गुरुओं की देखरेख में पाठशालाएँ खोली जाती थी जिनमें निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी, लेकिन, अब सब व्यवसाय बन गया है, फिर भी परोपकारी परोपकार करने से कहाँ चूकते हैं?

जीवन केवल भोग-विलास एवं ऐश्वर्य के लिए नहीं हैं, यदि ऐसा है तो यह जीवन का अधःपतन है। आप अपनी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखते हुए यदि परोपकार करेंगे तभी जीवन सार्थक होगा। अपनी आत्मा को पवित्र बनाकर निर्मल बुद्धि के द्वारा जनहितार्थ कार्य करना ही सफल जीवन है। इतिहास ऐसे महान एवं परोपकारी महापुरुषों के उदाहरणों से समृद्ध हैं जिन्होंने परोपकार के लिये अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को दांव पर लगाया। देवासुर संग्राम में अस्त्र बनाने के लिए महर्षि दधीची ने अपने शरीर की अस्थियों का दान कर दिया। जटायु ने सीता की रक्षा के लिए रावण से युद्ध करते हुए अपने प्राण की आहूति दे दी। पावन गंगा को धरती पर उतारने के लिए शिव ने पहले उसे अपनी जटाओं में धारण किया, फिर गंगा का वेग कम करते हुए उसे धरती की ओर प्रवाहित किया। यदि वे गंगा के वेग को कम न करते तो संभव था कि धरती उस वेग को सहन न कर पाती और पृथ्वी के प्राणी एक महान लाभ से वंचित रह जाते। शिव तो समुद्र-मंथन से निकले हुए विष को अपने कंठ में धारण कर नीलकंठ बन गए। ये सब उदाहरण महान परोपकार के हैं। इन आदर्शों को सामने रखकर हम कुछ परहित कर्म तो कर ही सकते हैं। हमें बस इतना संकल्प तो अवश्य ही करना चाहिए कि केवल अपने लिए न जिएँ। कुछ दूसरों के लिए भी कदम उठाएँ क्योंकि परोपकार से मिलने वाली प्रसन्नता तो एक चंदन है, जो दूसरों के माथे पर लगाइए तो आपकी अंगुलियाँ अपने आप महक उठेगी।

दिगम्बर जैन मूलसंघ-संकल्पना निराधार नहीं साधार

• डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन, भारती •

दिशाबोध (अक्टूबर 2016) में डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा ने सम्पादकीय-2 'दिगम्बर जैन मूलसंघ-संकल्पना निराधार' शीर्षक से लिखा है। यह क्यों लिखा और इसमें जो लिखा, वह भी क्यों लिखा ? यह समझने के लिए अधिक बुद्धि लगाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उन्हें मात्र अपने काम ही अच्छे नजर आते हैं और स्वयं को अच्छा बताना, अपनी पीठ स्वयं थपथपाना उनकी आदत है। हालांकि उनके द्वारा इसी अंक में लिखे सम्पादकीय-1 में हाँ, मैं नाकाबिल हूँ से उनकी स्वीकारोक्ति पता चल जाती है कि वे क्या हैं ?

जहाँ तक दिगम्बर जैन 'मूलसंघ-संकल्पना निराधार' सम्पादकीय का प्रश्न है तो मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ कि दिगम्बर जैन मूलसंघ-संकल्पना निराधार नहीं अपितु साधार है, वर्तमान की आवश्यकता है, अनुकरणीय है, आचरणीय है। अब यदि डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा को कोई आपत्ति है तो वह निराधार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। मैं उनके लिखे सम्पादकीय के आधार पर उनसे ही पूछना चाहता हूँ कि-

1. 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मूलसंघ' के गठन का समाचार चौंकाने वाला क्यों है ?

2. 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मूलसंघ' का गठन समाज को भ्रमित करने वाला कैसे है ?

3. 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मूलसंघ' का गठन पंथवाद एवं राजनीति से प्रेरित कैसे है ?

4. 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मूलसंघ' की स्थापना की भावना अधर्म की पोषक कैसे है ?

5. 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मूलसंघ' की स्थापना का कार्य समाज में समरसता की जगह विसंवाद को पैदा करने वाला कार्य कैसे है ?

6. समाज में विघटन करना, दो फाड़ करना ही इस मूलसंघ का उद्देश्य कैसे है ?

उक्त प्रश्न उठाते समय डॉ. बगड़ा की कौन-सी केवलज्ञानी-बुद्धि काम कर रही थी; यह तो मैं नहीं जानता किन्तु इतना अवश्य है कि उनकी उक्त कल्पनाएँ पूरी तरह निराधार हैं। जब वे समाज में जहाँ जो पद्धति चल रही हैं वहाँ वह पद्धति चलती रहे, उसमें किसी को हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नह है; तो उन्होंने इसी के साथ यह क्यों नहीं कहा कि गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज ने तेरापंथ की आलोचना में हाल ही में जो दो पुस्तकें -क्या आप तेरहपंथी हैं ? तथा दिगम्बर जैन धर्म में तेरहपंथ समीक्षा प्रकाशित की हैं, वे एक पक्षीय हैं, निराधार

हैं, समाज में विघटन फैलाने वाली हैं और उनकी हम निन्दा करते हैं। यदि वे ऐसा नहीं लिख सके तो इसका कारण स्पष्ट है कि उन्हें तेरहपंथ की निन्दा और आलोचना ही इष्ट है। वैसे भी डॉ. बगड़ा यदि धर्म के क्षेत्र में भी यह लिखते हैं कि - प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता है, निजी मान्यता है, आस्था है। तो स्पष्ट है कि उन्हें किसी आगम को मानने की आवश्यकता नहीं है। जबकि जैनधर्म आगम पर ही चलता है, साधुओं के लिए भी ''आगम चक्खु साहु'' कहा गया है।

अब रही बात 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मूलसंघ' के गठन की तो उसका गठन भले ही अभी हो रहा हो किन्तु उसका गठन तो भगवान महावीर के निर्वाण के बाद उस समय ही हो गया था जब स्थूलभद्र आदि ने वस्त्रधारण कर लिये थे। उस समय आचार्य श्री भद्रबाहु ने भगवान् महावीर के द्वारा प्रतिपादित वीतरागता युक्त दिगम्बर धर्म को ही मूलसंघ के नाम से अभिहित किया था। उसका आधार एवं परम्पराएँ तीर्थकर ऋषभदेव से लेकर तीर्थंकर भगवान् महावीर तक और भगवान् महावीर से लेकर आज तक की निर्दोष साधु परम्परा एवं उनके विचारों में निहित है। इसका लक्ष्य वीतराग-जिनेन्द्र की उपासना, वीतरागता के सम्पोषक है। हमने भी इसके गठन में यही भाव रखा है। यह कोई राजनैतिक व्यक्तियों के द्वारा स्थापित संघ नहीं बल्कि जैनधर्म के मूलस्वरूप को मानने वाले विद्वानों, समाज-सेवियों, सम्पादकों और चिन्तकों का बनाया संघ है। यह दुर्भाग्य है कि स्वयं को प्रबुद्ध मानने वाले और अपनी ही पत्रकारिता को उद्देश्य परक पत्रकारिता मानने वाले डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा को इसमें राजनीति दिखाई दे रही है। यदि सावन के अंधे को सर्वत्र हरा-हरा ही दिखता है तो इसमें दोष किसका है ? यहाँ उपयुक्त और कोई कहावत नहीं मिल रही थी अतः इसका उपयोग करना पड़ा। कृपया अंधे व्यक्ति क्षमा करें।

डॉ. बगड़ा यदि अपनी ही दिशाबोध के पृ.2 पर चिन्ता स्तम्भ में प्रकाशित डॉ. श्रेयांस कुमार जैन के सन् 2011 में अ.भा.दि. जैन शास्त्रि-परिषद् के अध्यक्ष के रूप में मुम्बई अधिवेशन में व्यक्त एवं छपे विचारों को पढ़ लेते तो शायद वे अपना निराधार सम्पादकीय नहीं लिखते और ना ही मूलसंघ के गठन पर प्रश्नचिन्ह लगाते।

डॉ. श्रेयांसकुमार जैन ने अपने विचारों में स्पष्ट रूप से शास्त्रि-परिषद् के विषय में लिखा है कि ''वह तो मूलसंघ की परम्पराओं का पोषण करें और उसने अपने सभी सदस्यों से उस पोषण में अर्घ्य दिलाने का काम भी किया है। इस समय समाज में कुछ भी भ्रांतियाँ पनप रही है, उनसे ऐसा लग रहा है कि पंथवाद के व्यामोह में जैनत्व संकट में हो रहा है। इसलिए हमारी जरूरत यह है कि हम मूलसंघ की, उसके आगमों की, उसके शास्त्रों की, उसके शास्त्रियों की परम्परा के अनुसार मूल मान्यताओं का पोषण करें, जो स्थिति परम्परा में देवी देवताओं की हैं, वह उस रूप में रहें। हम जिनेन्द्र के समकक्ष शासन देवी-देवताओं

को रखने का यत्न न करें, यदि हम ऐसा करेंगे तो परम्परा छिन्न होगी, शास्त्रीय मान्यताओं से हम विमुख होंगे और उससे हमारे जन्म जन्मान्तर कष्टमय बीतेंगे। इसलिए शास्त्री-परिषद् अपने समस्त सदस्यों, अधिकारियों, सहयोगियों, साधर्मीजनों से यह अपेक्षा करती है कि हम जिनेन्द्र की परम्परा के पोषक बनें, मूल शास्त्र परम्परा के पोषक बनें, मूलसंघ के पोषक बनें और उनके उत्तराधिकारी बनें, और हम ऐसे समाज की रचना के पुरोधा बनें, जो समाज चतुर्विध संघ के रूप में अर्हत् परम्परा का वाहक हो।''

इतनी स्पष्ट अवधारणा के बाद भी डॉ. बगड़ा यदि अपनी नाकाबिलियत का परिचय देना चाहते हैं तो कोई उन्हें कैसे रोक सकता है ?

डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा का यह कहना कि -मूलसंघ के अध्यक्ष तथा मंत्री के मनोनयन में कार्यकारिणी एवं परामर्श मंडल में सम्मिलित विद्वानों में अनेक विद्वानों से किसी प्रकार की सहमति नहीं ली गई है। उचित नहीं है। श्री अखिल बंसल ने कार्यकारिणी एवं परामर्श मंडल में सम्मिलित विद्वानों में से प्रत्येक विद्वान से परामर्श लिया था सभी की स्वीकृति थी। हाँ कुछ दिन बाद श्री कपूर चंदजी पाटनी, गौहाटी ने स्वयं को संगठन से अलग कर लिया जिसकी सूचना भी श्री अखिल बंसल ने उसी समय व्हाट्सएप पर सभी को दी। अतः श्री बगड़ा जी का उक्त आरोप भी निराधार है। हमारे पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है। हाँ, छपाने के लिए बहुत कुछ है। मूलसंघ की बहुत मजबूत अवधारणा है और हम उसी का प्रचार-प्रसार करते हैं। वैसे भी जिनका कोई स्पष्ट मत नहीं है, वे हमारा क्या, किसी का भी समर्थन क्या करेंगे ?

मूलसंघ के गठन का हमारा सोच तो जैनधर्म, जैनत्व और जैन का संरक्षण करना है। इसीलिए मैंने अपने एक सोशल मीडिया पर संदेश में लिखा था कि अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मूलसंघ का आधार है णमोकार मंत्र, जो इसे मानेगा वह मूलसंघी जैन कहलायेगा। यह पंचपरमेष्ठी को मानने वाला है, वीतरागता को मानने वाला है, उसी का पोषण करने वाला है। जैनधर्म मौलिक धर्म है, जिसकी अस्मिता वीतरागता है, वीतरागता का संरक्षण ही अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मूलसंघ का लक्ष्य है। हम जैनधर्मके आचार-विचार में आ गयी उन विकृतियों को समाप्त करना चाहते हैं जो जैनधर्म के वीतरागी स्वरूप को नष्ट करने वाली हैं या उन पर प्रश्न चिन्ह लगाती हैं। जो इस मूलसंघ को आर्ष परम्परा के रूप में भी देखते हैं उनसे भी हमें कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि पंचामृत अभिषेक, सचित्त पूजा, स्त्रियों द्वारा जिनाभिषेक आर्ष परम्परा नहीं है; बल्कि आर्ष परम्परा तो स्पष्ट रूप से सच्चे देव-शास्त्र-गुरु को उसी रूप में मानना, संरक्षण एवं उपासना करना है जिन्हें इस विषय में संदेह हो उन्हें आचार्य समन्तभद्र द्वारा

लिखित सर्वप्रथम श्रावकाचार ग्रन्थ-रत्नकरण्डश्रावकाचार का अच्छी तरह स्वाध्याय करना चाहिए और तदनुसार आचरण करना चाहिए। वे स्पष्ट लिखते हैं कि-

भयाशास्नेहलोभाच्च, कुदेवागमलिंगिनाम्।
प्रणामं विनयं चैव न कुर्युः शुद्धदृष्टयः ।।

अर्थात् शुद्ध सम्यग्दृष्टि भय से, आशा से, स्नेह से, लोभ से कुदेव, कुशास्त्र और कुलिंगियों को न नमस्कार करे और न विनय करें।

अतः मेरा डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा से निवेदन है कि वे अपनी निराधार संकल्पना के आधार पर मूलसंघ के गठन को दुष्प्रचारित करना बंद करें और योग्य पत्रकारिता का परिचय दें। यद्यपि उनके इस अंक में बहुत-सी बातें विचारणीय एवं समीक्षा के योग्य हैं चूंकि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है अतः हम उन्हें किसी प्रकार से भी परेशान नहीं करना चाहते हैं। वे शीघ्र स्वस्थ हों, हमारी शुभकामनाएँ उनके साथ हैं, उनके लिए हैं।

सामर्थ्य

मुझे नन्हीं चिड़िया मत समझो
मुझे पिंजरे में कैद पंछी मत समझो
अपने पंखों की उड़ान मैंने देखी है,
नापी है मैंने आकाश की ऊँचाईयाँ
और हिमालय की चोटियाँ भी नापी हैं।
फिर भी लोग क्यों समझते हैं,
नारी बेचारी है,
जब-जब नारी पर उपसर्ग हुआ
तब-तब कोई इतिहास सामने आया है।
झाँसी की रानी हो या दुर्गावती
सबने अपने दम पर
विजय का परचम लहाराया है
देनी पड़ी थी सीता को
लेकिन उन्होंने भी सत्य के दम पर
अग्नि को शीतल बनाया है।
मत समझो नारी को पिंजरे में
कैद पंछी, क्योंकि जब-जब
वह बाहर निकली
तब-तब उसने अपना सामर्थ्य
दिखाया है
हीरे की कटारी-सा परिष्कृत
खुद को पाया है।

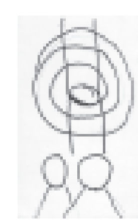

• अपूर्वा-अमित जैन, झाँसी (उ.प्र.) •

आगम दर्शन

ग्रन्थ नाम और खण्ड व्यवस्था

आचार्य पुष्पदन्त व भूतबलि विरचित प्रस्तुत प्रसंग का क्या नाम रहा है, इसका संकेत कहीं मूलसूत्रों में दृष्टिगोचर नहीं होता। आचार्य वीरसेन ने अपनी महत्त्वपूर्ण धवला टीका में उसे खण्ड सिद्धांत कहकर उसके छह खण्डों में प्रथम खण्ड का उल्लेख जीवट्ठाण के नाम से किया है। वे छह खण्ड कौन से हैं इसकी सूचना वहाँ उन्होंने कहीं नहीं की, बल्कि आगे चलकर पुनः यह कहा गया है कि आचार्य भूतबलि ने धरसेनाचार्य भट्टारक के द्वारा समस्त महाकर्म प्रकृतिप्राभृत का उपसंहार पर श्रुत नदी प्रवाह के विच्छेद के भय से उसके छह खण्ड किये। वे छह खण्ड कौन है कि जीवस्थानादि छह खण्डों में विभक्त प्रस्तुत ग्रन्थ तो नहीं है। वह महाकर्म प्रकृति प्राभृत के उपसंहार स्वरूप उसका कुछ ही अंश है। इस परिस्थिति में उसे खण्ड सिद्धांत ही कहा जा सकता है। इस खण्ड सिद्धांत का उल्लेख उन्होंने तीन स्थानों पर किया है। प्रथम- जीवस्थान के प्रसंग में दूसरा शंका के रूप में वेदनाखण्ड में और तीसरा वर्गणा खण्ड में, यह भी स्मरणीय है कि प्रस्तुत खण्डागम में उक्त महाकर्मप्रकृति प्राभृत के 24 अनुयोगद्वारों में केवल कृति वेदना स्पर्श, कर्म, प्रकृति और बन्धन इन प्रारम्भ के छह अनुयोग द्वारों की ही प्ररूपणा की गई है। शेष अठारह अनुयोगद्वारों की प्ररूपणा धवला में स्वयं वीरसेनाचार्य ने की है। उन छह अनुयोगद्वारों में भी कृति और वेदना इन दो अनुयोगद्वारों की प्ररूपणा वेदना खण्ड में तथा स्पर्श, कर्म, प्रकृति और बन्धन इन चार अनुयोग द्वारों की प्ररूपणा वर्णना खण्ड में की गई है। बन्धक और बन्ध विधान के भेद से चार प्रकार का है। बन्धक की प्ररूपणा दूसरे खण्ड क्षुद्र बन्ध में की गई है। बन्धविधान प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बन्ध के भेद से चार प्रकार का है। इसका वर्णन महाबन्ध में विस्तार से है। वेदनाखण्ड के प्रारम्भ में (पु.9) णमो जिणाणं आदि 44 सूत्रों के द्वारा जो विस्तृत मंगल किया गया है। उसके विषय में धवला में यह शंका उठाई गयी है कि आगे कहे जाने वाले तीन खण्डों में यह किस खण्ड का मंगल है। कारण यह कि आगे वर्गणा और महाबन्ध खण्डों के प्रारम्भ में कोई मंगल नहीं किया गया और मंगल के बिना भूतबलि, भट्टारक ग्रन्थ को प्रारम्भ करते नहीं हैं, क्योंकि वैसा करने से उनके अनाचार्त्व का प्रसंग प्राप्त होता है। धवलाकार के इस शंका समाधान से महाकर्म प्रकृति प्राभूत के जिसका दूसरा नाम वेदना कृत्स्न प्राभूत भी है, उपसंहार स्वरूप प्रस्तुत परमागम के अन्तर्गत वेदना, वर्गणा और महाबन्ध इन तीन खण्डों की सूचना मिलती है। फिर भी क्षुद्रकबन्ध और बन्धस्वामित्व विचय इन दो खण्डों का नाम ज्ञातव्य ही रह जाता है। जीवस्थान का नाम सत्प्ररूपणा में पहले ही निर्दिष्ट किया जा चुका है।

सृजन शक्ति

हे नारी ! तुम में है सृजन की शक्ति अपार
तुम में है माँ की ममता
देती हो शिशु को जन्म
देती हो उसे संस्कार
क्योंकि यह है शास्त्र प्रमाण।
जिस तरह सोचती है नारी
करती है क्रिया कलाप
अपनाती है आहार विहार
वैसी ही बनती प्रकृति शिशु की
यदि तुम चाहती हो सुन्दर धार्मिक शिशु तो
करो आकाशीय एवं वायव्य प्रधान
द्रव्यों का सेवन
शुद्ध सात्विक आहार विहार
नित्य धर्म श्रवण पठन पाठन
सद् गुरुओं का समागम
यदि तुम चाहती हो वीर तेजस्वी पुत्र तो
नित चिन्तन करो वीरों की गाथाओं का
उनकी तस्वीर उतारो हृदय में
नहीं डरो किसी से बनो वीर
बोलो हमेशा सत्य वचन
अपनाओ अग्नि प्रधान द्रव्यों को
तुम्हारी भावनाओं का होगा असर

दोगी तेजस्वी पुत्र को जन्म
तुम्हारा चिन्तन तुम्हारा आहार
तुम्हारे क्रिया कलापों का होगा असर
गर्भस्थ शिशु पर अतः सावधान
दो उसे पूरा पोषण दो उसे संस्कार
जिससे पा सको इच्छित संतान
क्योंकि तुम्हारी संतान भविष्य है तुम्हारे
अरमानों का
भविष्य है तुम्हारे घर परिवार का
भविष्य है देश का
अतः जागो सृजन शक्ति का भरपूर प्रयोग
दो ऐसी संतान को जन्म
रोशन करे जो जग में तुम्हारा नाम

• डॉ. आशा जैन, इन्दौर •

संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य पूज्य मुनिश्री धीरसागरजी महाराज का व्यक्तित्व

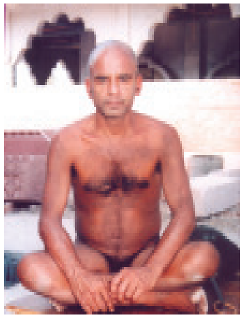

बालक राजकुमार (राजु भैया) का जन्म स्व. श्रीमती रूपाबाई की कोख से स्व. श्री गुलाबचन्दजी के घर इन्दौर (म.प्र.) में 1.9. 1962 को हुआ था। बालक राजकुमार के जन्म से ही घर में खुशी की लहर एवं हर्षमय वातावरण बनने लगा। बाल्यकाल से बी. कॉम., एम.कॉम., एम.ए. संस्कृत, एलएल.बी. एमबीए के साथ योगा, आयुर्वेद, ज्योतिष एवं वास्तु का ज्ञान एवं कई डिप्लोमा थे। माँ के स्वर्गवास के बाद यौवनावस्था प्राप्त होते ही आचार्यश्री विद्यासागरजी के दर्शनों की लालसा बढ़ती गई और शनैः शनैः त्याग की ओर अग्रसर होने लगे। 25 वर्षों तक विभिन्न पदों पर कार्य करते हुये कोचिंग पढ़ाते थे।

घर में 3 बहिन और 2 भाई हैं यह चौथे नम्बर के भाई थे, भरा-पूरा परिवार छोड़कर आचार्यश्री 1989 में ब्र. व्रत ग्रहण कर उनके मार्गदर्शन में 15 वर्ष तक धर्म अध्ययन एवं प्रतिमा स्थल के लिये सेवा कार्य में अग्रणीय रहे। आचार्यश्री से ने हीरे की परख कर ली थी और 21 अगस्त 2004 को तिलवारा घाट जबलपुर के वर्षायोग में मुनिश्री दीक्षा ग्रहण कर मुनि धीरसागरजी नाम प्राप्त किया। आचार्यश्री के संघ में रहकर एवं 29 वर्षयोग पूर्ण मुनिश्र समयसागरजी के संघ में विहार करके गुना (म.प्र.) पंचकल्याण हेतु पहुँचे पंचकल्याणक की तैयारियां जोरों से चल रही थी। अचानक 3 जनवरी 2017 को स्वास्थ्य खराब हुआ और 10 जनवरी 2017 को गुना में प्रातः 11 बजे समाधि हो गई। मुनिश्री के समाचार सुनकर सभी ओर से हजारों श्रावकों ने गुना पहुँचकर अपनी-अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की।

वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर गुरुदेव का समाधि दिवस सम्पन्न

सीपुर। अतिशय क्षेत्र सीपुर ग्राम स्थित देव-शास्त्र-गुरु जिनालय में विराजित स्वाध्याय तपस्वी आचार्य भगवन्त श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव ससंघ सानिध्य में आद्य मार्गदर्शक गुरु आचार्य विमलसागर जी गुरुदेव का समाधि दिवस अत्यंत श्रद्धाभक्ति व कृतज्ञता भावपूर्वक मनाया गया। आचार्य श्री उपस्थित जनों को महापुरुषों के महान् उपकारों का स्मरण करते हुए बताया कि आचार्य विमलसागर व आचार्य भरतसागरजी मेरे गुरु होते हुए भी मुझे कलिकाल समतंभद्र व अकलंक कहते थे।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जनवरी 2017
ये मेरे भगवान बनेंगे

प्रथम -

बहु श्रृंगार पुत राज भेष जो बैठे है मेरे प्रभु
राज लक्ष्मी भोग रहे हैं,देखो मेरे विश्व विभु
बिजली गिरती भाव, वैराग्य बनेंगे
केवलज्ञानी बनकर, ये मेरे भगवान बनेंगे

- श्रीमती रूचि जैन, सागर

द्वितीय -

देखो भगवान बनने
क्रिया तुम्हें बताते हैं
कभी श्रृंगार में भगवान
कभी वैरागी बन जाते हैं
प्रतापी राजा जो हैं वे वैराग्य धारेंगे
नग्न दीक्षा लेकर के
ये मेरे भगवान बनेंगे

- श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

अभी यह राग की झाँकी
अभी है वैराग्य बाकी
मुनि की दीक्षा धर कर
ज्ञान की लक्ष्मी वर कर
पूज्य प्रभु विश्व के होंगे
पाषाण में ये मेरे भगवान बनेंगे

- श्रीमती इन्दिरा जैन, इन्दौर

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
दिसम्बर 2016

प्रथम :श्रीमती कान्ता जैन, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)
द्वितीय : श्रीमती रजनी सेठ, सागर (म.प्र.)
तृतीय : श्रीमती शांतिदेवी पाटनी, नागपुर (महा.)

वर्ग पहेली क्र. 212
दिसम्बर 2016 के विजेता

प्रथम : श्रीमती चित्रा जैन, रेवाड़ी
द्वितीय : श्रीमती कुसुम जैन, खनियांधाना (म.प्र.)
तृतीय : डॉ. प्रकाश पनवेलकर, वर्धा (महा.)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : जनवरी 2017 का हल

1. आगम
2. पूर्णिमा
3. शिल्पियों
4. स्वामी
5. जिन बिम्ब
6. भेरी
7. जिनालय
8. वरांग
9. सूर्य
10. पूजा
11. जल
12. निरोग
13. स्वस्थ
14. पवित्र
15. दृढ़ता से
16. शोभित
17. फूल
18. दर्शनार्थियों
19. चंदन
20. तोरण
21. बाबा नगर
2. 72 मिनिट
3. कुंडल पहाड़
4. समडोली
5. गिरनार जी
6. समंतभद्रजी
27. सोमदेव सूरी
28. जिनसेन स्वामी
29. 1952 भोज में
30.1950 में
31.मंत्रविद्या
32. कल्पवृक्ष
33. जैन मंत्र
34. अत्यंत शीघ्र
35. जिनेन्द्र देव
36. सम्यक्त्व
37. जीव
38. सम्यक्त्व
39. मिथ्यात्व
40. बाहुबली
41. अहिंसक
42. हिंसक
43. हिंसा
44. अहिंसा
45. भला
46. सिद्धांतसागरजी
47. ब्र. जिनेश मलैया
48. आदित्य-सविता, मनाया, भोपाल
49. श्रीमती निशा-श्रेयांस सिंघई, अशोकनगर
50. 276

पुराण प्रेरणा

निर्जरा के उपाय

अथ श्री श्रेणिकी राजा विनयावनत मस्तकः ।
नत्वा श्री गौतम देवंधर्म पप्रच्छ सादरम् ।।

अधनन्तर श्री श्रेणिक राजा ने विनय से मस्तक झुकाकर श्री गौतम देव को नमस्कार कर आदरपूर्वक धर्म को पूछा।

क्षमादि दशधा धर्मो तथा रत्नत्रयात्मकः ।
जीवानां रक्षणं धर्मश्चेति प्राहु र्निजनेश्वरः ।।

जिनेश्वर ने कहा कि धर्म क्षमादि दश रूप है, रत्नत्रयात्मक है और जीवों की रक्षा करना धर्म है।

कर्मणामेक देशेन क्षरणं निर्जरा मता।
सकामाकाम भेदेन द्विधा साच प्रकीर्तिता ।।

कर्मों का एक देश क्षय होना निर्जरा मानी गयी है वह सकाम निर्जरा और अकाम निर्जरा भेद से दो प्रकार की कही गयी है।

या च दुःखादिभिः काले कर्मणा निर्जरा स्वयम्।
सा भवेत्सविपाकाख्या संसारे सरतां सदा ।।

संसार में भ्रमण करने वाले जीवों की दुःखादिक से स्वयं कर्मों की निर्जरा होती है वह सविपाक निर्जरा है।

हिंसादि पंचकत्यागः सर्वदा यत्विधा भवेत।
तच्चारित्रं महत प्रोक्तं मुनीनां मूलभेदतः ।।

मन-वचन-काय तीन प्रकार से हिंसादि पांच पापों का त्याग करना मूल भेद की अपेक्षा मुनियों का महाव्रत है।

तथा मूलोत्तरास्तस्व सद्गुणाः सन्ति भूरिशः ।
यैस्तु ते मुनयो यान्ति सुखम् स्वर्गापवर्गजम् ।।

उस चारित्र के मूलगुण और उत्तर गुण अनेक होते हैं जिन गुणों से वे मुनि स्वर्ग और मोक्ष से उत्पन्न सुख को प्राप्त होते हैं। ■

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. य् ओ य् द् अ अ ज
2. य् ओ द् अ य् अ द
3. द् ओ ग् य् अ य् अ भा
4. य ओ न् द् अ अ ज्ञा
5. य् अ न अ द् र् श् अ ओ द् अ सु

परिणाम :

जनवरी 2017: (1) मुनिश्री संयमसागरजी (2) मुनिश्री सुधासागरजी(3) मुनिश्री समतासागरजी (4) मुनिश्री स्वभावसागरजी (5) मुनिश्री समाधिसागरजी

हेल्पिंग कॅरियर

कैरियर

इकॉनामिक्स और बिजनेस के आपसी समन्वय वाले फील्ड बिजनेस इकोनॉमिक्स में पीएचडी करने के इच्छुक लोग कर सकते हैं। दिल्ली यूनिवर्सिटी में आवेदन - संस्थान में पीएचडी इन बिजनेस इकोनामिक्स के लिए आवेदन मंगवाए हैं । प्रवेश एंट्रेंस एग्जाम और इंटरव्यू के जरिए होगा। आवेदन 18 अप्रैल तक होंगे।

पढ़े बिजनेस इकोनॉमिक्स – किसी बिजनेस आर्गेनाइजेशन के प्रबंधन या रणनीति के साथ पेश आने वाले आर्थिक मसलों के विश्लेषण या उनके समाधान से जुड़ा बिजनेस इकोनॉमिक्स फील्ड युवाओं के बीच खासा डिमांड में है। डीयू में बिजनेस इकोनॉमिक्स में बेचलर्स मास्टर्स और रिसर्च लेवल तक के कोर्सेज करवाता है । फिलहाल डीयू ने बिजनेस इकोनॉमिक्स में पीएचडी करने से इच्छुक लोगों से आवेदन मंगवाए हैं।

रिसर्च प्रपोजल किन-किन फील्ड्स से संबंधित हो सकता है इसके बारे में जानकारी वेबसाइट पर दिए एडमिशन नोटिस में दी गई है। रिसर्च प्रपोजी इनसे ही जुड़ा हो।

क्या है योग्यता – इस कोर्स में प्रवेश के लिए जरूरी है कि आपने डीयू या किसी अन्य मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी से इकोनॉमिक्स/एनवायरमेंटर स्टडीज / कामर्स/ मैंनेजमेंट में कम से कम 55 फीसदी अंक के साथ एमफिल/मास्टर्स किया हो।

कैसे होना है चयन –

आवेदक को बिजनेस इकोनॉमिक्स विभाग द्वारा आयोजित प्रवेश परीक्षा देनी होगी। इसमें चयनित आवेदकों को इंटरव्यू के लिए बुलाया जाएगा इसके अलावा प्रवेश के लिए कुछ अन्य पहलुओं पर भी गौर किया जाएगा।

जैसे पीजी/एम.फिल में हासिल अंकों को 10 प्रतिशत वेटेज रिसर्च प्रपोजल को दी जाएगी। 40 प्रतिशत वेटेज लिखित परीक्षा की है और 30 प्रतिशत वेटेज इंटरव्यू की निर्धारित है। इससे ही चयनित आवेदकों की सूची बनेगी।

कैसे मिलेगा फार्म – इस कोर्स के लिए फॉर्म या तो (www.mb_edu.org) से डाउनलोड करें या इस पते से प्राप्त करें Department of Business Economics, Room No.129, Arts Faculty Bhuilding, University of Delhi South Campus, Bento Juarez Marg,Dhula Kuan, New Delhi-110021

कैसे करें आवेदन- डाउनलोड किए गए या फिर संस्थान से प्राप्त किए गए फॉर्म को भरें। फॉर्म के साथ 10 पन्नों में टाइप किया गया रिसर्च प्रपोजल लगाएँ। भरे हुए फॉर्म और रिसर्च प्रपोजल को संस्थान के पते पर भेज दें ।आवेदन की अंतिम तिथि 18 अप्रैल है। रिसर्च प्रपोजल के फील्ड्स वेबसाइट पर दिए हैं। ■

चलो देखें यात्रा

अतिशय क्षेत्र एवं तपोभूमि तिरुमलै /अरिहंतगिरि

नाम एवं पता - श्री क्षेत्र अरिहन्तगिरि दिगम्बर जैन मंदिर, तिरुमलै तहसील पोलूर, जिला तिरुवण्णामलै (तमिलनाडु)-606907, फोन - 04181-244325, मो.:9345982671, 09092600778।

क्षेत्र पर सुविधाएँ - आवास कमरे (अटैच बाथरूम) 19 कमरे, बिना बाथरूम 5, हॉल-3 (यात्री क्षमता-160), गेस्ट हाउस, उपलब्ध हैं। यात्री ठहराने की कुल क्षमता -250। भोजनशाला है।औषधालय है। विद्यालय है, गुरुकुल भी है (200 विद्यार्थी पढ़ रहे हैं)।

मार्गदर्शन - रेल्वे स्टेशन- काटपाड़ी 42 किमी., चेन्नई 155 किमी., वडमादिमंगलमं से 7 किमी.।

बस स्टेशन - पोलूर 14 किमी., आरणी 20 किमी., वेल्लूर 42 किमी.।

पहुँचने का सरलतम मार्ग - पोलूर, आरणी पोलूर मार्ग के मध्यवड आदि मंगलम क्रास से तिरुमलै 6 किमी., बस, टैक्सी, रिक्शा से पहुँच सकते हैं ।

निकटतम प्रमुख नगर -वेलूर 40किमी., पाण्डिचेरी 100 किमी., तिरुपति 120 किमी., चेन्नई 155 किमी., तिरुवण्णामलै 45 किमी.।

प्रबंध व्यवस्था - संस्था श्री क्षेत्र अरिहन्तगिरि दि. जैन मैनेजमेंट ट्रस्ट, जैन मठ, अध्यक्ष -स्वस्ति श्री धवलकीर्ति भट्टारक स्वामी जी (04181-244325), प्रमुख ट्रस्टी - श्री एम.के. जैन एवं सरिता जैन चेन्नई (098410-29825), मंत्री - श्री राजेन्द्र जैन (मजि.) एम.एल.ए., (04181-222104)।

क्षेत्र का महत्त्व - क्षेत्र पर मंदिरों की संख्या प्राचीन 5 (1 पहाड़ी पर 4 तलहटी में)। एक नवीन गोलाकार मंदिर परिसर में बना है।जो पंच कुल देवी मंदिर के नाम से जाना जाता है। मठ के 4 गुरुकुल छात्रावास में भी दर्शन हैं। जहाँ छात्र-छात्राओं को पूजन अभिषेक आदि धार्मिक शिक्षाएं दी जाती हैं।

क्षेत्र पर पहाड़ - 140 सीढ़ियाँ हैं एवं 335 मी. ऊँचा है।

ऐतिहासिकता - यह चतुर्थकालीन अतिशय क्षेत्र है। तिरुमलै को अर्हत्सगिरि (अरिहन्तों का पर्वत) कहते हैं। पर्वत पर शिखा मणिनाथ के नाम से प्रसिद्ध श्री नेमिनाथ भगवान की 18 फुट ऊंची प्रतिमा है जो 1800 वर्ष प्राचीन है। मूर्ति का अभिषेक कर गंधोदक लेने से अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं । पर्वत पर मुनियों के चरण(वरदन्त गणधर) (वृषभाचार्य समन्त भद्राचार्य) मुनि विहार गुफाएँ , भित्ति चित्र आदि हैं। आचार्य अकलंक देव ने यहाँ गुरुकुल परम्परा आरंभ की यहाँ लगभग 100 ताड़पत्र के ग्रंथ हैं । पहाड़ की तलहटी पर जिनालय 10वीं सदी में चोलवंशी राजाओं की बड़ी बहिन, कुन्दैवे ने बनवाया था। यह जिनालय 3 भागों में विभक्त है। पहला जिनालय वर्धमान स्वामी का है। दूसरा नेमिनाथ भगवान् का है। इसमें अनेक प्रतिमाएँ है। तीसरा जिनालय चंद्रप्रभ भगवान् का है। गुफा मंदिरों में तीर्थंकर प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। एक गुफा गद्य चिंतामणि के रचियता वादिभसिंह जी की समाधि है।

समीपवर्ती तीर्थ क्षेत्र- पोन्नूरमलै 47 किमी. मेलचित्तामूर 72 किमी., वेल्लोर 40 किमी., तिरुवन्नमलै 50 किमी., कांचीपुरम-40 किमी., वल्लिमलै 40 किमी., आरणी 20 किमी.।

स्वार्थ की बू आती है

तब मानवता, दानवता बन जाती है,
जब क्षुद्र स्वार्थ की बू आती है।
इस स्वार्थ की बदबू, में कोई नहीं टिकता है
नाता-रिश्ता हो, या हो मित्रता, नाक भौं सिकोड़ता है
ईर्ष्या की अग्नि में, सारी मानवता जल जाती है
जब क्षुद्र स्वार्थ की बू आती है।
बेटा पल-पुष कर, बड़ा होकर, वधू से नाता जोड़ता है
प्राण प्रिया के बन्धन में पड़, परिवार से नाता तोड़ता है
माता-पिता की दया, अब याद भी नहीं आती है
जब क्षुद्र स्वार्थ की बू आती है।
स्वार्थसिद्धि के होने तक ही, हम मतलब रख पाते हैं
स्वार्थसिद्धि के होते ही हम, बेमतलब हो जाते हैं
सच्ची मित्रता मात्र दिखावा, और छलावा बन जाती है
जब क्षुद्र स्वार्थ की बू आती है।
कौन है सच्चा कौन है झूठा, निर्णय न कर पाते हैं
उपनयन लगा है स्वार्थ का जिनके, सही नहीं लख पाते हैं
होना चाहिये जहाँ कृतज्ञता, वहीं कृतघ्नता बन जाती है
जब क्षुद्र स्वार्थ की बू आती है।

• **विनीतकुमार जैन,** साढ़ूमल •

दुनिया भर की बातें

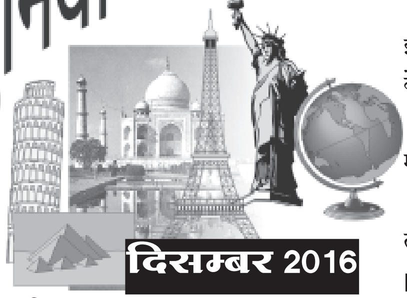

दिसम्बर 2016

■ **1 दिसम्बर**

- कर कानून के संशोधन में पुश्तैनी ज्वैलरी पर टैक्स नहीं लगने की घोषणा केन्द्र सरकार ने की।

- तिरुचिरापल्ली - मुरुगापट्टी में जिलेटीन फैक्ट्री में आग लगने से 10 लोग मरे 15 घायल हुए।

- प्रवर्तन निदेशालय ने साढ़े छह करोड़ की नकदी जब्त की यह नकदी हवाला कारोबारियों के पास मिली।

■ **2 दिसम्बर**

- अनंतनाग : पूर्व सरपंच सज्जाद मलिक राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त होने से मुठभेड़ में मौत से दक्षिण कश्मीर में तनाव बढ़ा।

-पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह के खिलाफ आयकर विभाग ने केस दायर किया।

- टिहरी (उत्तराखंड) जिले के जौनपुर ब्लाक के देवलसारी के जंगल में उड़ने वाली गिलहरी देखी गई।

■ **3 दिसम्बर**

- कन्नौज : तलग्राम क्षेत्र के रोहली गाँव में प्राथमिक स्कूल की दीवार गिरने से 24 बच्चे दबे। 3 की मौत हुई 115 घायल हो गये।

- अरुणाचल प्रदेश की भारत म्यांमार सीमा के पास उग्रवादियों ने घात लगाकर असम राईफल्स पर हमला किया दो जवान शहीद हुए।

- अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने ताइवान के राष्ट्रपति से साइ डूंग बने से सीधी बात की, चीन चिढ़ा।

■ **4 दिसम्बर**

- सीरिया के उत्तर पश्चिम प्रांत इदलिन के कई इलाकों में रूसी हवाई हमलों में कम से कम 46 लोगों के मारे जाने का दावा किया।

- चीन की दो कोयला खदानों में विस्फोट से 53 मजदूर मरे।

- बांग्लादेश में दो हिन्दु मंदिरों में कुछ शरारती तत्वों ने 7 देवी देवताओं की मूर्ति खंडित कर दी।

■ **5 दिसम्बर**

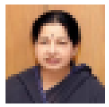

- तमिलनाडु की सी.एम. जे. जयललिता का निधन हुआ।

- सभी सरकारी भुगतानों को ऑनलाइन करने की घोषणा वित्त मंत्रालय ने की।

- मुम्बी नौसेना का युद्धपोत आइएनएस बेतवा समुद्र अवतरण के समय पलटने से दो नौसैनिक शहीद हुए 14 घायल हुए।

■ **6 दिसम्बर**

- ज़स्टिस जे.एस. खेर पहले सिख समुदाय से 44 सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश घोषित हुये।

- कोलकाता : कोलकाता पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स ने छापा मार कर एक कोयला माफिया सहित 7 लोगों को गिरफ्तार किया।

- चेन्नई : तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जे. जयललिता का अंतिम संस्कार मरीना बीच पर राजकीय सम्मान के साथ किया गया।

■ **7 दिसम्बर**

- इंडोनेशिया में 6.5 तीव्रता से भूकम्प आया 97 लोग मरे 500 लोग घायल हुए।

- पाकिस्तानी विमान हादसा में गायक जुनैज जमशेद सहित 48 लोग मरे।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इलाहाबाद हाईकोर्ट से कांग्रेस के अजय राय चुनाव याचिका खारिज होने से बड़ी राहत मिली।

■ **8 दिसम्बर**

- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अहम फैसले में कहा कि 3 तलाक मुस्लिम महिला के साथ क्रूरता है पर्सनल लॉ संविधान से ऊपर नहीं है।

-चेन्नई : शंकर रेड्डी ज्वैलर्स के आफिस आवास से 10 करोड़ नकद, सौ किलोग्राम सोना बरामद हुए।

- नई दिल्ली : क्षुब्ध राष्ट्रपति बोले हंगामा, धरना प्रदर्शन का स्थान संसद नहीं, संसद चर्चा बहस की जगह है।

■ **9 दिसम्बर**

- पूर्व वायु सेनाध्यक्ष एसपी त्यागी को हेलीकॉप्टर घोटाले में सीबीआई ने गिरफ्तार किया।

- दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति पार्कग्यून ही के खिलाफ महाभियोग पारित हुआ।

- अमेरिकी कांग्रेस ने भारत के प्रमुख रक्षा साझेदारी बनने को मंजूरी दी।

■ **10 दिसम्बर**

- नैनीताल जिला रामगढ़ विकासखण्ड के गागर क्षेत्र में निर्माणाधीन होटल की नींव खुदाई के दौरान 40 फीट ऊँची पहाड़ी सरक गई।

- विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का एम्स में किडनी का सफल प्रत्यारोपण हुआ। आयकर विभाग ने बैंगलुरू में एक हवाला कारोबारियों के बाथरुम में बनी तिजोरी में छिपाएँ साढ़े पांच करोड़ के नए नोट बरामद किए।

■ **11 दिसम्बर**

- मुम्बई के आरे कालोनी क्षेत्र में हैलीकॉप्टर हादसा में पायलट प्रफुल्ल मिश्रा की मौत हुई तथा 3 घायल हुए।

- इस्ताम्बुल (तुर्की) में आतंकी हमले में 30 पुलिस कर्मी सहित 38 लोग मरे तथा 155 घायल हुए।

- अमेरिका के विदेशमंत्री को फ्रांस का सर्वोच्च पुरस्कार लीजन डी ऑनर मिला। विदेश मंत्री जॉन केरी को फ्रांस के विदेश मंत्री ने ये सम्मान प्रदान किया।

■ **12 दिसम्बर**

- भारत ने इंग्लैंड से लगातार 4 मैच क्रिकेट सीरिज के जीते।

- तमिलनाडु के उत्तरी तट से वरदा तूफान टकराया इस चक्रवाती तेज तूफान से 170 उड़ाने प्रभावित हुई। 5 लोग मारे गए।

- टाटा इंडस्ट्रीज के निदेशक साइरस मिस्त्री को पद से हटाया गया।

■ **13 दिसम्बर**

- अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव नतीजे विस्कोसिन में दोबारा मतगणना के बाद नतीजे में डोनाल्ड ट्रम्प जीते।

- जबलपुर : टीवी कलाकार कमलेश पाण्डेय ने गोली मारकर खुदकुशी की।

■ **14 दिसम्बर**

- संयुक्त राष्ट्र संघ के नवनियुक्त महासचिव एंटोनियो गुटरेस ने भारत की सराहना की।

- सुरक्षा बलों ने आतंकरोधी अभियान में लश्कर-ए-तैयबा के डिवीजनल कमांडर अबु बकर को ढेर किया।

- राज्यसभा में निशक्त व्यक्ति अधिकार पारित हुआ।

■ **15 दिसम्बर**

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वायुसेना के जवान धार्मिक आधार पर दाढ़ी नहीं ऱख सकते।

- श्रीनगर : दक्षिण कश्मीर के पुलवामा जिले में आतंकियों ने बैंक से 9.84 लाख लूटे।

- बी.के. शशिकला ए.आई.ए.डी.एम.के. को महासचिव बनाने के लिये नेताओं ने समर्थन किया।

■ **16 दिसम्बर**

- सुप्रीम कोर्ट ने नोटबंदी पर दखल नहीं देने को कहा मामला संविधान पीठ को सुपुर्द किया।

- राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने दलाई लामा से मुलाकात की तो चीन बौखलाया।

- भारत ने 15 साल बाद जूनियर हॉकी विश्वकप के फायनल में पहुँचा।

■ 17 दिसम्बर

- विपिन रावत आर्मी चीफ नियुक्त हुए और सीएस धनोवा वायुसेना प्रमुख नियुक्त हुए।

- भारत तजाकिस्तान के बीच आतंक रोकने के लिए समझौता हुआ।

- सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि जम्मू कश्मीर की संप्रभुता संविधान से अलग नहीं।

■ 18 दिसम्बर

- भारतीय जूनियर हाकी टीम ने 15 वर्ष बाद विश्व कप जीता। बेल्जियम को 2-1 से हराया।

- आंतक को पनाह देने वाले पाक को अलग थलग करने की सलाह बांग्लादेश के गृहमंत्री असुदुज्जमल खान कमाल ने दी।

■ 19 दिसम्बर

- भारत के मित्र रुस ने चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा का समर्थन किया।

- ज्ञाने माने पर्यावरणविद् और गाँधी मार्ग के सम्पादक अनुपम मिश्र का निधन हुआ वे 68 वर्ष के थे।

- सायरस मिस्त्री ने टाटा समूह की कम्पनियों से इस्तीफा दिया।

■ 20 दिसम्बर

- भारत इंग्लैंड के बीच क्रिकेट सीरिज 75 रन की जीत के बाद सीरिज 4-0 से भारत ने अपने नाम की।

- चंडीगढ़ निकाय चुनाव में भाजपा-अकाली दल गठबंधन को 21 सीटें मिली भाजपा 20 और अकाली दल को 9 सीट मिली, कांग्रेस को 4, निर्दलीय को 1 सीट मिली।

■ 21 दिसम्बर

- तमिलनाडु के मुख्य सचिव पी मोहनराव के घर छापे मार कर 30 लाख के नये नोट एवं 5 किलो सोना आयकर विभाग ने बरामद किया।

- सुप्रीम कोर्ट ने कर वसूली कानून को चुनौती देने वाली याचिका को खारिज कर दिया।

- मंत्री मंडल ने शत्रु सम्पत्ति अधिनियम में संशोधन अध्यादेश को पाँचवी बार लागू करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी।

■ 22 दिसम्बर

- दिल्ली के उपराज्यपाल नजीब जंग ने इस्तीफा दिया।

- प्रवर्तन निदेशालय ने मनी लॉड्रिंग के आरोप में पारसमल लोढ़ा को 25 करोड़ नोट बदलने के आरोप में मुम्बई से गिरफ्तार किया।

- तमिलनाडु मुख्य सचिव पी मोहनराव हटाये गये नये मुख्य सचिव पद पर गिरिजा वैद्यानाथन बनी।

■ 23 दिसम्बर

- ठंडे मौसम में सीरिया सेना अलेप्पो शहर आतंकियों से मुक्त कराया।

- वड़ोदरा - एक फार्म हाउस में छापा मारकर शराब पार्टी कर रहे अमीन चिरायु (आईपीएल चेयर) सहित 261 लोगों को गिरफ्तार किया।

- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक फैसले में कहा सरकार धर्मस्थान की जमीन को अधिग्रहीत कर सकती हैं।

■ 24 दिसम्बर

- भारत के साथ सुरक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए अमेरिका राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 618 अरब डालर की मंजूरी दी।

- ढाका : एक टीवी पत्रकार को उत्तेजक खबर फैलाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

- मुम्बई के अरबसागर में छत्रपति शिवाजी महाराज के भव्य स्मारक का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया।

■ 25 दिसम्बर

- रूस के सोची शहर से सीरिया जा रहे सेना के विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से 12 लोग मरे।

- चीन में पटाखों में विस्फोट की दो घटनाओं में 7 लोग मरे, 6 लोग लापता हुए। 16 लोग घायल हुए।

- संविधान में राष्ट्र चिन्ह बनाने वाले दीनानाथ भार्गव का निधन हुआ। वे 89 वर्ष के थे।

■ 26 दिसम्बर

- अग्नि-5 के सफल परीक्षण से भारतीयों का सिर गर्व से ऊँचा हुआ।

- प्रवर्तन निदेशालय ने नोटबंद की बसपा के खाते में जमा 104 करोड़ रु. का खुलासा किया।

- लंदन पॉप स्टार जार्ज माइकल का निधन हुआ वे व्हैम एलबल के माध्यम से विश्व में प्रसिद्ध थे। आप 53 वर्ष के थे।

■ 27 दिसम्बर

- गुजरात के ओपनर समित गोहिल ने रणजी ट्राफी में उड़ीसा के खिलाफ नाबाद 359 रन बनाकर 117 वर्ष पुराना रेकार्ड तोड़ा।

- श्रीलंका के पूर्व प्रधानमंत्री विक्रमनायके का निधन हुआ वे 83 वर्षीय नायके दो बार प्रधानमंत्री बने।

- टोबा टेकसिंह (पाक) में जहरीली शराब पीने से 32 लोग मरे, 50 बीमार हुए।

■ 28 दिसम्बर

- 500 और 1000 के नोट को चलन से बाहर करने वाले अध्यादेश को केबिनेट ने मंजूरी दी।

- विरल वी आचार्य आरबीआई के डिप्टी गवर्नर नियुक्त हुए।

- म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सुन्दरलाल पटवा का निधन हुआ। वे 92 वर्ष के थे।

■ 29 दिसम्बर

- हिन्दी के लेखक श्रद्धा और घनश्याम देवांश को वर्ष 2016 का नवलेखन भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए चुना गया।

- श्रीनगर : बांदीपोर में पेट्रोलिंग दल पर हमला हुआ, दो जवान घायल हुए।

- प्रवर्तन निदेशालय ने दिल्ली के वकील रोहित टंडन को 70 करोड़ का कालाधन को सफेद करने के आरोप में गिरफ्तार किया।

■ 30 दिसम्बर

- सपा सुप्रीमो मुलायमसिंह ने उ.प्र. के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को पार्टी से बर्खास्त किया। तथा राष्ट्रीय महासचिव रामगोपाल यादव को 6 साल के लिए पार्टी से निकाला।

- झारखंड के गोड्डा जिले में लाल माटिया कोयला खदान धंसी 10 मजदूर मरे।

- चिटफंड घोटाले के सिलसिले में सीबीआई ने तृणमूल कांग्रेस के सांसद तापस पाल को गिरफ्तार किया।

■ 31 अक्टूबर

- विपिन रावत ने सेना प्रमुख एवं वीरेन्द्रसिंह धनोवा ने वायु सेना प्रमुख का पद संभाला।

- अमेरिका ने मिसाईल कार्यक्रम से जुड़े सात प्रतिष्ठानों पर आर्थिक प्रतिबंध लगाया।

- वी.के. शशिकला ने अन्नाद्रमक पार्टी के महासचिव का पद संभाला। ■

प्राकृतिक चिकित्सा समग्र स्वास्थ्य के लिये :

रक्त शुद्धि

विगत अंकों में हमने देखा कि प्राकृतिक चिकित्सा औषधि-विहीन स्वाश्रयी चिकित्सा पद्धति है। इसकी लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़ रही है। लोगों क़ा यह वहम भी धीरे-धीरे क्रमशः घट रहा है कि रोग को दूर करने की ताकत शरीर के अन्दर नहीं, यह बाहरी चीज में है। यह वहम लोगों के दिमाग में गहराई से घर कर गया है। सदियों से यह सिखाया जा रहा है कि रोग अनेक हैं और उसके लिये दवायें अनेक हैं। हर वर्ष नयी-नयी दवायें निकलती रहती हैं और शीघ्र ही प्रभावहीन होकर प्रचलन से बाहर हो जाती हैं। इसका कारण औषधि निर्माता कम्पनियाँ का अधिक से अधिक मुनाफा कमाना है।

दवाएँ आर्गेनिक आधार के कारण हमारे शरीर के आन्तरिक प्रदूषण को बढ़ाती हैं। रक्त धारा का अशुद्ध करके नये रोगों की उत्पत्ति में कारण बन जाती हैं। इसी को दवाओं के साइड इफेक्ट कहते हैं। अपने उत्तेजक गुण के कारण रोगों के स्थान परिवर्तन के स्वरूप को बदल देती हैं। सभी दवाएँ लगभग लीवर, किडनी और चर्म रोगों को बढ़ा देती हैं। मरीज जीवन-पर्यन्त दवा लेते रहने का अभ्यस्त बना दिया जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा हमें रक्त की शुद्धि करके आंतरिक प्रदूषण को दूर करने का कार्य करती है।

हमारा रक्त शुद्ध कैसे होता हैं ?

रक्त के अशुद्ध होने के पीछे कई कारण हैं जिनमें दवाओं के प्रयोग करने से उनमें जो विषाक्त रसायन व एन्टीवायटिक्स व खनिज द्रव्य होते हैं सभी हमारी रक्त धारा को प्रदूषित करते हैं। बेमेल भोजन, अति भोजन, तले-भुने बाजार के नमकीन, खाद्य-पदार्थ, शीतलपेय, कृत्रिम खाद्य रंग, संरक्षित करने के रसायन एवं मिलावटी दूध, खोवा से बनाई गई मिठाईयाँ आदि ये सब पदार्थ सभ्य समाज का भोजन बन गये हैं अतः नये-नये रोगों को सभ्यता की बीमारी कहा जाता है। अतः हमारा सभ्य समाज इस प्रकार के भोजन को पार्टियों व दावतों के साथ-साथ दैनिक जीवन में उपयोग कर रहा है। पिज्जा, बर्गर, नुडल्स, केक आदि अनेकों तरह के बाजारू व्यंजन हमारे सभ्य समाज का अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं। इन खाद्यों के अतिरिक्त एल्युमीनियम के बर्तन, फॉयल-वर्क, पॉलीथिन पैक, आदि भी हमारे आन्तरिक प्रदूषण को बढ़ाकर रक्त धारा को अशुद्ध करते हैं। अतः इन खाद्यों के प्रयोग को समाप्त करके भोजन शुद्धि व शुद्ध वायु-सेवन द्वारा हम अपने रक्त को शुद्ध कर सकते हैं।

शुद्ध रक्त किस प्रकार हमें रोग मुक्त करता है?

रक्त हमारे शरीर संस्थान में निरन्तर बिना रुके शरीर की प्रत्येक कोशिका तक जाकर प्रतिक्षण तीन कार्य निरन्तर करता रहता है।

प्रथम कार्य - भोजन को पचाना, पाचक अंगों को शक्ति प्रदान करना।

द्वितीय कार्य-प्रतिक्षण जो शरीर की कोशिकाएँ टूटती रहती हैं उनकी मरम्मत करना।

तृतीय कार्य- टूटी हुई कोशिकाओं के कचड़े को शरीर से बाहर करना।

ये तीनों कार्य शरीर में वे रोक-टोक निरन्तर होते रहते हैं। शुद्ध रक्त इन तीनों कार्यों को सफलता पूर्वक करता है और अशुद्ध रक्त तीनों कार्य करने में असफल हो जाता है। फलस्वरूप रोगों की उत्पत्ति होती रहती है।

शुद्ध रक्त का स्वरूप - हमारे शुद्ध रक्त का पी.एच. 75% क्षारीय होना और 25% अम्लीय होना है।

क्षारीय रक्त के लिये - हमारे भोजन में हरी शाक-सब्जियाँ, मौसमी फल, चोकरदार आटे की रोटी, दलियाँ, ताजा बिना शक्कर का दूध, मट्ठा आदि का होना आवश्यक है। इनसे रक्त में क्षारीयता बढ़ती है। इसके विपरीत-तले भुने मिर्च-मसाले युक्त खाद्य पदार्थ, मिठाई, बाजार के रंगीन व मिलावटी तेल में तले कचौड़ी, समोसे, चाट खाद्य पदार्थ, अधिक नमक, शक्कर, मिर्च मसाले, प्रिजर्वेटिव्स खाने से रक्त में अम्लीयता 25% से अधिक होती है। रोगों की उत्पत्ति होती है, किडनी व लीवर सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। अतः रक्त शुद्धि के लिये हमारे बच्चों व नई पीढ़ी के युवक-युवतियों को संस्कारित किया जाना आवश्यक है। शुद्ध रक्त पर ही हमारा स्वास्थ्य निर्भर करता है। हमारा रक्त शुद्ध होकर मल-पसीना व श्वसन द्वारा निरन्तर गंदगी को बाहर करता है। रक्त पर ही हमारा सबसे बड़ा साधन है जिससे शरीर अपने को निरन्तर स्वच्छ रखता है। किन्तु जब तक हम अपनी सभ्य समाज की कृत्रिम व बाजारू भोजन पद्धति से छुटकारा नहीं लेंगे हमारा रक्त अशुद्ध होता रहेगा और अशुद्ध भोजन से रक्त में अम्लीयता का अनुपात बढ़ता रहेगा, अतः प्राकृतिक चिकित्सा के उपचार में अपनाई जाने वाली सभी पद्धतियाँ तभी शीघ्रता से स्वास्थ्य लाभ करा पायेंगी। जब हम अपने रक्त को भोजन सुधार द्वारा शुद्ध व स्वाभाविक कर पावेंगे। अतः भोजन के शुद्ध व नियमितता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अच्छा भोजन व शुद्ध रक्त हमारी विचारधारा को भी प्रभावित करता है। ■

कुण्डलपुर में हुआ बड़े बाबा विधान

कुण्डलपुर (दमोह)। प्रचार मंत्री सुनील वेजीटेरियन ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से नवनिर्वाचित अध्यक्ष संतोष सिंघई के नेतृत्व में दिनांक 17 जनवरी 2017 को बड़े बाबा के नये मंदिर में उच्चासन पर विराजमान होने के स्मृति स्वरूप बड़े बाबा विधान सम्पन्न हुआ जिसमें वृहद शांतिधारा करने का सौभाग्य सचिन जैन मयंक जैन जबलपुर वालों ने प्राप्त किया।

इसे भी जानिये

विश्व की जनजाति

बोरो-पश्चिम अमेजिन बेसिन में निवास करने वाली जाति बोरो आदिम कृषक के रूप में जीवनयापन करते हैं। ये लोग ब्राजील पेरु और कोलम्बिया के सीमावर्ती क्षेत्र में अमेजन और उसकी सहायक नदियाँ जापुरा बुतुगाया ईसा के बेसिन में निवास करते हैं शारीरिक गठन की दृष्टि से बोरो अमेरिका के रेड इण्डियन के समान हैं। इनकी त्वचा का रंग भूरा, बाल सीधे और कद मध्यम होता है। बोरो जाति के लोग उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में रहने के कारण निर्वस्त्र व अल्पवस्त्रों का प्रयोग करते हैं, ये कमर में हाथ से बुना कपड़ा लपेट लेते हैं इनका भोजन कसावा की रोटी, जंगली फल, मछली आदि से युक्त रहता है।

बोरो जाति के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है ये मक्का, रतालू, शकरकंद, लौकी, सेव, अनन्नास आदि की खेती करते हैं कुछ बोरो आखेट भी करते हैं। ये लोग वनों को जलाकर साफ की हुई जमीन पर 15 से 20 मीटर तक लम्बे मकान बनाते हैं। जिनकी छतें पेड़ों के तने पर उठी हुई होती हैं। मकान में चटाइयाँ डालकर विभाजन कर भोजन, नृत्य व अन्य कक्षा बना लेते हैं।

बोरोजाति आदिम प्रकार से कृषि करते हैं ये लड़ाकू व निर्दयी व्यवहार के लोग होते हैं। उत्सवों में हत्या तथा भक्षण अधिक प्रचलित है। विजय चिन्ह के रूप में झोंपड़ियों की छतों पर मानव खोपड़ियाँ लगाते हैं।

बुशमैन - दक्षिण अफ्रीका के कालाहारी मरुस्थल में निवास करने वाली जाति बुशमैन अब वासुतोलैण्ड नैटाल और दक्षिणी रोडोशिया में भी पायी जाती है ये लोग हब्सी प्रजाति के हैं इनके न तो जबड़े निकले होते हैंऔर न ही होंठ बाहर की ओर उल्टे होते हैं इनकी आँखें चौड़ी और त्वचा काली होती है। उच्च तापमान के कारण ये लोग प्रायःनग्न रहते हैं। पुरुष कमर में खाल का एक टुकड़ा बांधते हैं जो पैरों के मध्य से होकर आगे को बांध दिया जाता है। स्त्रियाँ दो खाल के टुकड़े पहनती हैं जो कमर से घुटनों तक आगे पीछे लटकते रहते हैं। सिर सभी के नंगे रहते हैं, पैरों में खाल या छाल की चप्पल पहनते हैं।

बुशमैन लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट व जंगली वनस्पति को एकत्र करना है। ये शाकाहारी, मांसाहारी व छोटे कीड़े-मकोड़े का शिकार करते हैं बुशमैन लोग सर्वभक्षी होते हैं। इनके भोजन से आखेट से प्राप्त मांस मछली वृक्षों की जड़े शहद और छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े होते हैं। दीमक, चींटी, अण्डे, साँप, छिपकली, कन्दमूल, गाँठे फल शहद आदि होते हैं। कड़ी धूप, ठण्ड एवं वर्षा से बचने के लिये बुशमैन गुफाओं,कम गहरे भू छिद्रों तथा झोपड़ियों में रहते हैं, कभी-कभी लकड़ियों की गुम्बदाकार झोपड़ियों को पत्तों व खाल से ढाँककर उन्हीं में निवास करते हैं बुशमैन बड़े परिश्रमी, उत्साही देखने में तीव्र दृष्टि और स्मृतिवान व्यक्ति होते हैं। ■

दिशाबोध

दया

1. दया से लबालब भरा हुआ हृदय ही संसार में सबसे बड़ी सम्पत्ति है, क्योंकि भौतिक विभूति तो नीच मनुष्यों के पास भी देखी जाती है।
2. ठीक पद्धति से सोच-विचारकर हृदय में दया धारण करो और यदि तुम सभी धर्मों व धर्मात्माओं से इस बारे में पूछ कर देखोगे, तो तुम्हें मालूम होगा कि दया ही एकमात्र मुक्ति का साधन है।
3. जिन लोगों के हृदय दया से ओतप्रोत हैं, वे अंधकारपूर्ण नरक में प्रवेश नहीं करेंगे।
4. जो मनुष्य सब जीवों पर कृपा तथा दया दिखलाता है, उसे उन पाप परिणामों को नहीं भोगना पड़ता, जिन्हें देखकर ही आत्मा काँप उठती है।
5. क्लेश, दयालु-पुरुषों के लिए नहीं है, वातवलय-वेष्टित पृथ्वी इस बात की साक्षी है।
6. खेद है उस आदमी पर, जिसने दया-धर्म को त्याग दिया है और पाप के फल को भोग कर भी उसे भूल गया है।
7. जिस प्रकार यह लोक धनहीन के लिए नहीं है, उसी प्रकार परलोक निर्दयी मनुष्य के लिए नहीं है।
8. ऐहिक वैभव से शून्य गरीब लोग तो किसी दिन समृद्धिशाली हो सकते हैं; परन्तु जो लोग दया और ममता से रहित हैं, सचमुच ही वे कंगाल हैं और उनके दुर्दिन कभी नहीं फिरते।
9. विकार ग्रस्त मनुष्य के लिए सत्य को पा लेना जितना कठिन है, कठोर हृदय वाले पुरुष के लिए नीति के काम करना भी उतना ही कठिन है।
10. जब तुम किसी दुर्बल को सताने के लिए उद्यत हो, तो सोचो कि अपने से बलवान मनुष्य के आगे भय से जब तुम काँपोगे, तब तुम्हें कैसा लगेगा ?

डाक टिकटों का जैन इतिहास

विश्वविख्यात छिंदवाड़ा एवं रणकपुर जैन मंदिर

• सुरेश जैन, लुधियाना •

माउंट आबू पर स्थित दिलवाड़ा जैन मंदिर 11वीं एवं 13वीं सदी में बनाए गये पाँच संगमरमर से बने मंदिरों का समूह है। संगमरमर का काम इतने उत्कृष्ट ढंग से किया गया है कि पहली बार मंदिर को देखने के बाद अपनी आंखों पर विश्वास नहीं होता कि यह किसी इंसान के हाथों की कारीगरी है अथवा किसी देव माया द्वारा रची गई रचना है। इन मंदिरों में हुए काम की खूबसूरती तो आँखों तथा दिल-दिमाग को तृप्त कर देती है, मंदिरों का अद्भुत कलात्मक सौंदर्य हमें किसी दूसरी दुनिया में ले जाता है। शिल्प सौंदर्य का एक उत्कृष्ट नमूना हमें इन मंदिरों में देखने को मिलता है। सारे विश्व में इतनी सुन्दर शिल्पकला और कहीं नहीं। विपुल प्रवेश द्वार, बारीक नक्काशीदार छत, दरवाजे, स्तम्भ एवं दिल्ले दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर देते हैं। प्रथम मंदिर विमल विसाही का निर्माण वि.सं. 1088 में गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के मंत्री विमलशाह ने करवाया था, यह मंदिर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव को समर्पित है। इस मंदिर की खूबसूरत नक्काशियों में छतों, मंडपों, स्तम्भों और महराबों पर उकेरी गई कमल की पंखुड़ियाँ, फूल और जैन एवं हिन्दू पुराणों के दृश्य हैं। विमलविसा ही मंदिर का सबसे आकर्षक भाग रंगमंडप है, यह एक भव्य खुला मंडप है, जिसमें 48 कलायुक्त स्तम्भ हैं। प्रत्येक दो स्तम्भ आपस में अलंकृत तोरणों द्वारा जुड़े हैं। मंडप के बीचोंबीच एक लटकता हुआ आकर्षक झुमका है। इसके बाद गोलाकार मालाओं में पशु-पक्षी, देवी-देवता, इत्यादि बने हैं। इन मालाओं के आधारित 16 स्तम्भों पर 16 विद्या देवियों की मूर्तियाँ हैं, जिनके हाथों में विभिन्न अस्त्र आयुद्य सुशोभित हैं। रंगमंडप की आस-पास की छतों पर सरस्वती, लक्ष्मीदेवी, भरत-बाहुबली के युद्ध का दृश्य, अयोध्या एवं तक्षशिला नगरी, राजदरबार का दृश्य आदि अलंकृत है। संगमरमर का पत्थर अंबाजी के निकट स्थित आरासण पहाड़ियों में से हाथियों द्वारा लाया जाता था। इसकी स्मृति में इस मंदिर में हस्तीशाला भी बनाई गई है जिसमें संगमरमर के 10 हाथी बने हुए हैं। आज से करीब 1000 वर्ष पूर्व इस मंदिर को बनवाने की लागत 18 करोड़ 53 लाख रुपये आई थी, 14 वर्षों का परिश्रम एवं 1500 कारीगरों व 1200 मजदूरों की

अथक सहायता से यह भव्य मंदिर का निर्माण हुआ था।

लुणावसही मंदिर – इस मंदिर को श्री वस्तुपाल तेजपाल द्वारा वि.स. 1287 में बनवाया गया था। इसकी लागत करीब 8000 वर्ष पूर्व 12 करोड़ 53 लाख रु. आई थी। इस मंदिर की तथा विमल बिसाई मंदिर में काफी समानता है। लुणावसही मंदिर में मूलनायक नेमिनाथ भगवान् हैं। इस मंदिर में 48 देरियाँ हैं जिनमें तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। इन देरियों के सामने जो बरामदा है, उसे परिक्रमा कहा जाता है। परिक्रमा की छतों पर आकर्षक शिल्पकला की गई हैं। जैन तीर्थंकरों के चरित्र के कुछ जीवन प्रसंग, उन का पंचकल्याणक महोत्सव, फूल-पत्तियाँ, पशु-पक्षी, नाटक संगीत आदि के सुंदर शिल्प यहाँ पर हैं। यहाँ तोरणों, स्तम्भों, देवरानी-जेठानी के गौरव के आले और परिक्रमा के छतों की नक्काशी दर्शनीय है, छतों पर नेमिनाथ-राजुल कथा, नागदमन और देवी-देवताओं के शिल्प देखने योग्य हैं। इस मंदिर का संगमरमर भी हाथियों द्वारा लाया जाता था, यहाँ भी एक हस्तीशाला बनाई गई है, जिसमें संगमरमर के 10 हाथी बने हुए हैं। लुणावसही मंदिर के दायीं तरफ एक छोटे बगीचे में दादा साहिब की पगलियाँ बनी हैं और बायीं तरफ मेवाड़ के राणा कुंभा द्वारा निर्मित काले पत्थर का कीर्ति स्तम्भ बना है जो अधूरा-सा प्रतीत होता है। अन्य तीन मंदिर छोटे लेकिन समान रूप से रमणीय हैं। पीत्तल हर मंदिर को यह नाम उसमें पाँच धातुओं, प्रमुखतः पीतल से बनी श्री आदिनाथ भगवान् की विशाल धातु मूर्ति से मिला है।

खरतरवसही – इस मंदिर के मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान् है। यह मंदिर दिलवाड़ा के मंदिरों में सबसे ऊँचा है। इस मंदिर को बिना कोई श्रम लिए श्रमिकों ने अपने फुर्सत के समय का सदुपयोग करके स्वेच्छा तथा श्रद्धा से बनाया था। इस मंदिर के प्रत्येक धूसर बलुआ पत्थर से बनी 'दिक्पालों', 'विद्यादेवियों', 'यक्षिणियों' और 'शाल-मंजिकाओं' की मूर्तियों से सुसज्जित मण्डप है। इस मंदिर को शिल्पियों का मंदिर भी कहा जाता है। महावीर स्वामी मंदिर का निर्माण 1582 में हुआ था और इसकी प्रमुख विशेषता सिरोही के कलाकारों द्वारा 1764 में इस मंडप के दीवारों के ऊपरी हिस्से में बनाए गये चित्र हैं।

मंदिर में प्रवेश का समय – भगवान् की पूजा करने वाले जैन श्रावकों के लिए सुबह 12 बजे तक का समय रखा गया है। पर्यटकों के लिए श्रद्धा के यह द्वार दोपहर 12 बजे से सांय 6 बजे तक खुले रहते हैं।

रणकपुर जैन मंदिर– अरावली घाटी की पहाड़ियों में स्थित रणकपुर का जैन मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से विश्व में अद्वितीय है। इस मंदिर के शिखरों, गुंबजों और छतों में भी कलाविज्ञ और भक्तिशील शिल्पियों

की छैनियों ने कई पुरातन कथा प्रसंगों को सजीव कर नये शिल्प अंकित किये हैं। यहाँ का प्रमुख चौमुखा मंदिर प्राचीन, अतिविशाल एवं भव्य मंदिर है। कला और शिल्प के अनुपम भंडार की यह कृति प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ भगवान को समर्पित है, यह मंदिर मेवाड़ के महाराणा कुम्भा के राज्यकाल में उनके अपूर्व सहयोग से धारणा शाह नामक पोरवाल जैन श्वेताम्बर महाजन ने सन् 1439 में बनवाया था। एक मान्यता के अनुसार 2500 शिल्पियों ने 65 वर्षों के अथक प्रयत्नों के पश्चात् इस मंदिर का निर्माण किया था और इस पर उस समय 11 लाख रूपये की लागत आई थी। इसके मुख्य शिल्पकार का नाम श्री दीपाजी कलाकार था इस मंदिर के चार द्वार और तीन मंजिले हैं। प्रत्येकक मंजिल पर चौमुखी प्रतिमा विराजमान है। मंदिर की सबसे अद्विितीय विशेषता इसकी विपुल स्तम्भवली है। कुल 1444 स्तम्भ बताये जाते हैं, पर इनकी गणना करना कठिन है। इसकी रचना इस ढंग से की गई है कि प्रत्येक स्तम्भ के पास खड़े हो अथवा मंदिर के किसी भाग या कोने में खड़े हो भक्त प्रभु के दर्शन पा सकता है, मूर्ति आपकी आँखों के सामने होगी, इतने स्तम्भ होने पर भी कोई स्तम्भ प्रभु दर्शन में बाधक नहीं बनता। इन स्तम्भों की विचित्रता यह है कि कोई भी दो स्तम्भ एक समान नहीं हैं इनमें कुछ युगल जोड़ी की भी अनुपम कला कृतियाँ सुशोभित हैं। स्तम्भों की ऊँचाई लगभग 40 फीट हैं, जिन पर बारीक नक्काशी का काम किया हुआ है। मुख्य प्रवेश द्वार में आने के पश्चात् रंग मंडप के स्तम्भों में एक स्थान में कुछ ऊँचाई पर श्री धारणा शाह की मूर्ति तराशी हुई है, उस स्थान से श्री आदीश्वर भगवान् के सदा दर्शन होते रहते हैं। अन्य एक स्तम्भ में शिल्पकार दीपाजी के हाथ में कमंडलु और गज के साथ मूर्ति हैं। यहाँ पर हर मूर्ति किसी अन्य मूर्ति के आमने-सामने है। एक सुंदर कृति संगमरमर के एक ही पत्थर से बनी हुई है। जिसमें सांपों के 108 फन उकेरे गए हैं, परन्तु इनकी पूंछ ढूंढ पाना असंभव है। इस मंदिर के नीचे एक बहुत बड़ा तहखाना है, उसमें अनेक प्राचीन मूर्तियों का संग्रह है। इस मंदिर में चौमुख मंदिर के अलावा पार्श्वनाथ मंदिर, अम्बा माता मंदिर और सूर्य मंदिर स्थित हैं। 80 गुम्बदों और स्तम्भदार 24 सभा भवनों से युक्त इस मंदिर की मूर्तिकला की विपुलता और मोहकता देखते ही बनती है। हर घंटे में स्तम्भों का रंग सुनहरे से हलके नील में बदलता है। इस मंदिर में 250-250 किलो वजन के (कुल 500 किलो वजन के) दो नर-मादा घंटे हैं जिन्हें बजाने पर इनमें से ऊँ जै सी ध्वनि निकलती है और शांत वातावरण में 3 कि.मी. तक सुनाई देती है। इसके अतिरिक्त नागदमन (कृष्णलीला) सहस्त्रकूट के कलापूर्ण शीलपट्ट, कल्पवृक्ष का पत्ता और स्तम्भों के बीच वाले तोरणों *शेष पेज 60पर....*

ऐलक सिद्धांतसागर

क़हानी

धमाचौकड़ी

शीतलहर बह रही थी। फाल्गुन की हवाओं के साथ तेज धूप भी प्रत्येक व्यक्ति की शीत पीड़ा की समाधान बन रही थी। फागुन माह में वैसे तो शीतलहर कभी-कभी अचानक ही चल पड़ती है। इसी तरह आज भी शीतलहर का प्रवाह अचानक ही चल पड़ा था। पर बेतवा का सुरम्य तट किसके मन को नहीं सुहा सकता था। देवगढ़ का ऐतिहासिक नाहर घाट का सुरम्य वातावरण पर्यटकों को मोह लेता है।

ललितपुर से 35 किलोमीटर दूर महरौनी नगर लगभग 300 जैन परिवार का बहुत प्राचीन नगर है। इस नगर में युवाओं का समूह सदैव सक्रिय रहा है। यहाँ के जैन को जब पता चला कि मुनिश्री सुधासागरजी के सान्निध्य में देवगढ़ में पंचकल्याणक गजरथ हो रहा है। तो धर्म से थोड़ी सी दूरी बना के रखने वाले लोगों के मन में भी थोड़ी ललक पैदा हुई कि हम भी इस पंचकल्याणक समारोह गजरथ में ज़ाकर देखेंगे और मौज मस्ती करेंगे। इन यौगिक में एक अरविन्द मिठया उर्फ मन्टु मिठया यौगिकों का नेतृत्व कर रहा था। उसने सबसे पहले अपनी माँ से कहा कि, बाई हम सब दोस्त मिलकर के देवगढ़ का गजरथ देखने जाना चाहते हैं त़ब मन्टु की माँ को अपार खुशी हुई। जहाँ मेरा लड़का कभी मंदिर नहीं ज़ाता है। वह आज देवगढ़ तीर्थ जाने का मन बना रहा है। इससे बड़ी खुशी की बात क्या हो सकती। मन्टु की बाई ने सहर्ष देवगढ़ जाने की स्वीकृति दे दी। पर उन्होंने ये अवश्य पूछा कि बेटा तुम अकेले जा रहे हो या साथ में कोई जा रहा है।तब मन्टु ने बाई से कहा - मैं अकेला नहीं जा रहा हूँ। मेरे पूरे दोस्त भी साथ में जा रहे हैं। जा रहे हो लेकिन वहाँ जाकर सिर्फ घूमना नहीं अपितु वहाँ की पूरी वन्दना करना तथा मुनिश्री के प्रवचन सुनना कार्यक्रम देखना एक बात और सुनो सब दोस्त मिलकर के ऊधम बिल्कुल नहीं करना। मन्टु ने कहा कि हम लोग ऊधम

करने थोड़ी न जा रहे हैं, हम लोग महाराज जी के दर्शन करेंगे, तीर्थ की वन्दना करेंगे और धर्म भी करेंगे और बाई ने एक बात और कह दी सुन ले मन्टु किसी से लड़ाई झगड़ा मत करना। हमारे सुनने में न आ जाय कि मन्टु किसी से लड़ा है। मन्टु ऊंचा पूरा, गोरा चट्टा, नीली आंखों का गुस्सैल युवक था। अभी उस की उम्र लगभग 20 साल की थी। पर लगता ऐसा था जैसे 25 साल का हो, होटल, हलवाई की दुकान में खाने-पीने की कोई कमी व मन्टु को मनाहीं नहीं थी। मन्टु की जो इच्छा में आता था खाता-पीता था। साथ में मेहनती भी था। अपने पिताजी रत्नचन्द्र मिठया के पूरे कामों में हाथ बंटाता था। बड़ी-बड़ी कढ़ाईयां एक झटके में उठा लेता था। उसे गर्म और ठंडा तो लगता ही नहीं था। उसका जोश कभी कम नहीं होता था। जोशीली बातें, जोशीले काम चाहे सुबह हो या शाम, बस एक ही धुन सवार रहती थी। वह थी काम करना, धंधा करना, पैसा कमाना।

मन्टु ने अपनी माँ की बात सुन और समझकर बाई को आशान्वित किया हम किसी से नहीं लड़ेंगे, ऊधम नहीं करेंगे। बाई ने भी पूरे मनोयोग से मन्टु को जाने की आज्ञा दे दी। मन्टु ने घर से बाहर निकलते ही एक मार्शल जीप किराये से कर ली और अपने मित्र वर्ग में से लगभग 12 युवकों को इकट्ठा किया, कुछ युवक मार्शल में बैठे, कुछ लटकते हुये देवगढ़ की ओर बढ़ चले थे। महरौनी से आगे बढ़ते हुए खितमास के हरे भरे जंगलों से चहकते पक्षियों को देखते हुए सबको बहुत अच्छा लग रहा था। ललितपुर पार करने के बाद जाखलौन पार करने के बाद लगभग 12 बजे युवकों की गाड़ी देवगढ़ पहुँची।

मन्टु ने देखा चारों तरफ अपनी नजर दौड़ाई मुख्य द्वार पर लगी पचरंगी ध्वजायें फरफरा रही थी ऐसा लग रहा था मानों ध्वजायें आगत का स्वागत करने के लिए आतुर हो रही हों। ध्वनि बहुत सुन्दर बज रही थी। पार्किंग व्यवस्था देखकर युवकों ने अपनी गाड़ी व्यवस्थित लगा ली। युवकों ने अपने-अपने कपड़ें धूल से झड़ाये कुछ लोगों ने कपड़े बदल लिये। मन्टु ने अपने कपड़े नहीं बदले। तौलिया से पौंछ लिए सबसे पहले नीचे के दर्शन किये वहाँ कि सिद्ध परमेष्ठी की मूर्ति देखकर मन्टु ने बंटी सिंघई से कहा - बंटी भाई ये देखो भगवान कैसे बैठे रे। भगवान तो आलती-पालती मारकर हाथ नीचे करके बैठते। बंटी सिंघई ने कहा - अरे यार, तू तो पागल है कभी मंदिर गया कि नहीं अपने धर्म में परमेष्ठी पांच होते हैं, बोल कौन-कौन से होते हैं? मन्टु ने कहा हमें नहीं पता। बंटी ने कहा, अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु। जो अपने अतरंग शत्रु, काम, क्रोध, लोभ, मद, हर्ष, शोक इन सभी शत्रुओं को नष्ट करने वाले को अरहंत कहते हैं। अरहंत परमेष्ठी चार घातिया कर्मों को नष्ट करते हैं। 18 दोषों से रहित होते हैं। अनन्त चतुष्टय से युक्त 46 मूलगुणों सहित

समोशरण वैभव से युक्त होते हैं। सिद्ध भगवान वे होते हैं, जो 8 कर्मों को नष्ट कर देते हैं। शरीर से रहित होते हैं, लोक के अग्रभाग में रहते हैं। 8 मूलगुण से युक्त होते हैं। आचार्य परमेष्ठी वे कहलाते हैं जो संघ के नायक होते हैं। पंचाचार से युक्त होते हैं।36 मूलगुण से युक्त होते हैं। शिक्षा, दीक्षा और प्रायश्चित देते हैं। जब बंटी पांच परमेष्ठी के बारे में बता रहा था तभी आमोद चौधरी ने कहा - मन्टु चल रे ये तो पंडित है, पढ़ा न लिखा पंडिताई बताने लगता है। सुन लो आमोद हमने पाठशाला में पूरा पढ़ा है तुम लोग कभी पाठशाला गये भी नहीं हो जो पाठशाला गया उनको इतना तो ज्ञान हो जाता है तुम लोग तो कभी मंदिर भी नहीं गये हो। अपन रोज मंदिर भी जाते हैं, पाठशाला में भी पढ़े हैं और हमारे बाबूजी बहुत सारे शास्त्र घर में रखते हैं। हम लोगों को पढ़ाते हैं और पढ़ने की प्रेरणा भी देते हैं। आमोद तुम हमारा मजाक उड़ा रहे हो, अभी हम तुमसे पूछते हैं ये कौन से भगवान की मूर्ति है ? अमोद ने अपना बचाव करते हुये कहा - अपन कोई पंडित तो नहीं हैं। न हम मायाचारी करते हैं न धर्म। मन्टु तुम तो मायाचारी करते हो और धर्म भी करते हो। बंटी ने कहा तुम सब लोग मिलकर के बता दो ये कौन से भगवान की मूर्ति है। अपने भगवान तो हाथ पर हाथ रखे हैं। ये तो पैर नीचे किये हैं हाथ घुटनों पर रखे हैं। हाथ में पुस्तक लिये हैं बताओ ये कौन से भगवान हैं ? सब लोग चुपचाप रहे, उनका मौन देखकर बंटी ने कहा - ये उपाध्याय परमेष्ठी कहलाते हैं। इनके 25 मूलगुण होते हैं। इनके हाथ की पुस्तक ये बता रही है कि उपाध्याय परमेष्ठी पढ़ने और पढ़ाने में निपुण होते हैं। स्वयं पढ़ते हैं और दूसरों को पढ़ाते हैं। उपाध्याय परमेष्ठी सदैव नग्न दिगम्बर होते हैं। अन्तिम परमेष्ठी, आखिर में नमोकार मंत्र में **नमो लोये सव्वसाहूणं** जिसका अर्थ होता है सभी साधुओं को नमस्कार हो। सुन बंटी हर कोई साधु नहीं कहलाते हैं। जैन धर्म में साधु वो होते हैं जो विषयों की आशा से रहित होते हैं। ज्ञान, ध्यान, तप में लीन रहते हैं। आरम्भ और परिग्रह से रहित होते हैं साधु 28 मूलगुण से युक्त होते हैं। ऐसे मुनि साधु अन्य साधुओं जैसे पाखंडी नहीं होते हैं। न वो व्यापार करते हैं, न कारोबार और तुमें देखना है तो चलो ऊपर चलकर देखो, सुधासागरजी मुनिराज को देखकर तुम्हारी शंका का समाधान हो जायेगा। चलो जल्दी से ऊपर चलो। सब लोग ऊपर चलने लगे।

सब युवकों ने ऊपर जाकर पहले सब मंदिरों के दर्शन किये फिर पांडाल में पहुँच कर मुनिश्री के दर्शन किये और मंच पर विराजमान हो मुनि को नमोस्तु करके सब एक साथ बोले, चलो बेतवा नदी के नाहर घाट पर। वहाँ पहुंच कर युवकों ने दो नावें रिजर्व कर ली नाव खेने वाले खेवटिय अपनी ताकत लगाकर बीच नदी में ले गये मन्टु जिस नाव में बैठा था उस नाव के सभी युवकों

में मस्ती का माहौल बन गया पहले तो वे एक दूसरे के ऊपर पानी फेंकने लगे और डिस्को करने लगे। मल्लाह ने कहा आप लोग सीधे शांत बैठे नहीं तो नाव पलट जायेगी। तभी संजय ने कहा - हम लोग तो यहाँ मस्ती करने आये है। क्या सीधे बैठने आये है ? संजय की हाँ में हाँ मिलाकर मन्टु ने कहा सही बात है चलो रे खबू करो धमा चौकड़ी। मन्टु की बात सुनकर के सातों लोग और जोर से नाचने लगे। युवकों की धमा चौकड़ी देखकर एक युवक तो कूदकर के तैरकर के किनारे की और बढ़ गया। दूसरे मल्लाह ने कहा कि हम तो कूदकर के जा रहे हैं। तभी नाव में पानी भरने लगा। मन्टु ने उसका हाथ पकड़ा और कहा कोई भी धमा चौकड़ी नहीं करेगा। यहाँ 400 फीट गहरा पानी है। नाव पलट गई तो कोई भी नहीं बचेगा। अपन सब लोग नाव के पानी से नाव खाली कर देंगे तब मल्लाह ने कहा- अगर आप लोगों ने जरा सी भी धमा चौकड़ी की तो मैं तुरन्त कूदकर किनारे पर पहुँच जाऊँगा, तुमसे कोई भी नहीं बचेगा। तब सबने मिलकर नाव का पानी उलीच दिया। मल्लाह भी कहने लगा कि इतने उधमी युवक उसने कभी नहीं देखे और ऐसी एकता भी नहीं देखी जब इनकी जान पर आ गई तो 5 मिनिट में नाव खाली कर दी जो जितना शैतान होता है वह उतना ही शक्तिमान होता है। मल्लाह अपने मन ही मन में खुश हो रहा था। यह भी सोच रहा था जान बची तो लाख पाये। अगर इनकी धमा चौकड़ी रुकी तो इन्हीं के साथ मेरा भी बच पाना मुश्किल था। युवकों ने भी महसूस किया कि हर जगह धमा चौकड़ी नहीं करना चाहिए, जान पर बन सकती है। युवकों ने सबक लिया अब हम सब लोग मिलकर हर जगह धमा चौकड़ी नहीं करेंगे। सबने यह सबक अच्छी तरह से सीख लिया। ■

मुनिश्री धीरसागरजी महाराज की समाधि पर विनयांजलि सभा

इन्दौर। श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, ए.बी. रोड़ इन्दौर में देश अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी पट्टाचार्य श्री 108 अभिनंदनसागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य आचार्यश्री 108 उदार सागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में दिनांक 22 जनवरी 2017 को मुनिश्री धीरसागरजी महाराज की विनयांजलि सभा रखी गई। जिसमें विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष माननीय श्री हुकुमचंदजी सांवला, ब्र. विजयलक्ष्मी दीदी, ब्र. सरोज मैडम, ब्र. सुनीता दीदी, पं. श्री रतनलालजी शास्त्री, सुरेश जी मारौरा, मुनिश्री उत्कर्षसागरजी, मुनिश्री उपशमसागरजी एवं आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज ने मुनिश्री के प्रति विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए उनके जीवन से संबंधित संस्मरण बतायें। कार्यक्रम का संचालन ब्र. नितिन भैया एवं ब्र. सुरेश मलैया तथा ब्र. जिनेश मलैया ने किया। इसी के साथ तिलकनगर समवसरण मंदिर, उदासीन आश्रम, छत्रपति नगर, आदि में भी विनयांजलि सभा रखी गई। ■

श्रमण साधना में सहयोगी वनस्पतियाँ एवं औषधीय गुण

• पं. सुरेश जैन मारौरा, इन्दौर •

मंगलाचरण -

श्री मन्सुरासर नरेन्द्र किरीट कोटि-माणिक्य रश्मि निकरार्चित पाद पीठः।
तीर्थाधियो जितरिपुर्वृषभो बभूव, साक्षाद कारण जगत्त्रियैक वंधुः॥

वैज्ञानिकों की खोज के आधार पर भारतवर्ष में 45000 प्रकार की प्रजातियां पाई जाती हैं जिसमें से 5000 प्रजातियां ऐसी हैं, जो भारत के अलावा अन्यत्र कहीं नहीं पाई जाती। जैन ग्रन्थों में वनस्पति की अधिकतम आयु 10,000 वर्ष है, वनस्पतियां सजीव है। ऐसा अब विज्ञान भी मानने लगा है।

वनस्पति मानव जीवन का मूल आधार है, वनस्पति ऑक्सीजन बनाने के कारखाने हैं, वनस्पति हमारे हितैषी हैं, अतः वनस्पति के बिना जीवन संभव नहीं है।

जैन दर्शन में वनस्पति को एकेन्द्रिय जीव का शरीर माना जाता है। यह दो प्रकार की होती है -1. प्रत्येक, 2. साधारण।

1. प्रत्येक - जैसे सब्जी, 2. अनन्त जीवों के साझले शरीर को साधारण कहते हैं। जैसे - काई, फफूंद। एक शरीर में अनन्त जीवों का वास होता है। इसलिये इस शरीर को निगोद भी कहते हैं।

सर जगदीशचंद्र बसु ने प्रत्यक्षतः सिद्ध किया है कि वृक्ष, पौधे आदि वनस्पतियां मनुष्य के समान अनुकूल परिस्थिति में सुखी एवं प्रतिकूल परिस्थिति में दुःखी रहते हैं, अशुभ लेश्याएँ पाई जाती हैं, संवेदनशील हैं, संज्ञायें पाई जाती हैं।

भारत वर्ष उष्ण प्रधान निर्धन देश है, यहाँ गर्मी अधिक पड़ती है इसलिए यहां ठण्ड पहुँचाने वाली वनस्पतियों को भोजन में सम्मिलित करना उचित होता है। आयुर्विज्ञान के प्राचीनतम ग्रंथ चरक संहिता, सुश्रुत, अष्टांग हृदय व संग्रह में वनस्पतियों से उपयोगी औषधियों का वर्णन मिलता है। प्राकृतिक चिकित्सा में सात्विक पदार्थों का सेवन किया जाता है। प्राकृतिक चिकित्सकों के दृष्टिकोण से भोजन ही औषधि और औषधि ही भोजन है। प्राकृतिक भोजन शरीर की आतंरिक प्रतिरोध क्षमता को इतना अधिक गतिशील बना देता है कि वह सभी प्रकार के संक्रामक रोगों का प्रतिरोध करने में सक्षम होता है।

सुकरात कहते हैं - पथ्यों में ही स्वास्थ्य और पथ्य ही औषधि है। स्वस्थ होने पर भोजन पोषण के लिये और रोगी होने पर रोग को दूर करने के लिये औषधि की तरह ही भोजन करना चाहिये।

आचार्य श्रुतकीर्ति, कुमारसेन, वीरसेन, पूज्यपाद स्वामी (पात्र केसरी), सिद्धसेन, दशरथ गुरु, मेघनाथ, समतंभद्र एवं जटाचार्य आदि आचार्यों ने वैधक ग्रंथों की रचना की है। परन्तु खेद है कि वे ग्रन्थ अभी उपलब्ध नहीं होते हैं इन ग्रंथों के आधार से 8 वीं शताब्दी में उग्रादित्याचार्य ने प्राकृत सुंदरग्रंथ का निर्माण किया है।

पूज्यपाद आचार्य ने शालाक्य-शिलाभेदन नामक ग्रंथ बनाया है। पात्र स्वामी ने शल्यतंत्र नामक ग्रंथ की रचना की है, सिद्धसेन आचार्य ने विष व उग्र ग्रहों का शमन विधि का निरूपण किया है, सिंहनाद आचार्य ने शरीर बलप्रयोगों का निरूपण किया है।

समन्तभद्राचार्य ने अष्टांग नामक ग्रंथ में विस्तृत व गंभीर विवेचना की है। उसके आधार पर कल्याणकारकम् को उग्रदित्याचार्य ने लिखा है।

पुष्पायुर्वेद :- जैन धर्म अहिंसा प्रधान होने से उन महाव्रतधारी मुनियों ने इस बात का भी प्रयत्न किया कि औषधि निर्माण के कार्य में किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं होना चाहिये। इतना ही नहीं एकेन्द्रिय प्राणियों का भी संहार नहीं होना चाहिये, अतएवं उन्होंने पुष्पायुर्वेद का भी निर्माण किया।

आयुर्वेद ग्रंथकारों ने वनस्पतियों को औषध में प्रधान स्थान दिया। चरकादि ग्रंथकारों ने मांसादिक अभक्ष्य पदार्थों का प्रचार-प्रसार औषधि के नाम से किया परन्तु जैनाचार्यो ने तो उस आदर्श मार्ग का प्रस्थापन किया जिससे किसी भी प्राणी को कष्ट न हो सके। इसलिये पुष्पायुर्वेद में ग्रंथकार ने 18000 जाति के कुसुम (पराग) रहित पुष्पों से ही रसायनौषधियों के प्रयोग को लिखा है। 18000 जाति के केवल पुष्पो के प्रयोगों का ही जिसमें कथन हो उस ग्रंथ का कितना महत्व होगा। हम बहुत अभिमान के साथ कह सकते हैं कि जैनाचार्यो ने ही 'पुष्पायुर्वेद' का निर्माण किया है। अन्य किसी ने नहीं।

''गुम्मट देव मुनि'' ने मेरुतंत्र नामक वैद्यक ग्रंथ की रचना की है। ग्रंथ में पूज्यपाद स्वामी को बहुत आदरपूर्वक स्मरण किया है।

सिद्धनागार्जुन यह पूज्यपाद के भानजे थे नागार्जुन कल्प नागार्जुन कक्षपुट आदि ग्रंथों का निर्माण किया था,इन्होंने 'वज्रखेचर घुटिका' नामक स्वर्ण बनाने की रत्न गुटिका तैयार की थी। जब यह इस औषधि को तैयार करने के संकल्प से आर्थिक मदद मांगने के लिये किसी राजा के पास गये थे, तब राजा ने पूछा कि यदि आपके कहने के अनुसार गुण न आवे तो आपका प्रण क्या रहेगा ? नागार्जुन ने उत्तर दिया कि मेरी दोनों आँखें निकाल सकते हो। राजा ने उन्हें सहायता दी। नागार्जुन ने प्रयत्न करके एक वर्ष में इस औषधि को तैयार करके उसकी 3 मणियों को बनाकर उन पर अपना नाम खोदा बाद में मणियों को नदी में ले जाकर धो रहे थे तब हाथ से फिसलकर वह नदी में गिर गई। राजा ने प्रतिज्ञा अनुसार दोनों आंखे निकलवाई। नागार्जुन दोनों आंखों से अंधे हुये व देशांतर चले गये। एक वेश्या स्त्री को उन मणियों की

निगली हुई मछली के मिलने से चीरकर देखी तो 3 मणियां मिल गई। वैश्या ने वह मणियां ले जाकर झूले पर रख दी। झूले की लोहे की सांकल सोने की हो गई। तब वह वैश्या रोज लोहे से सोना बनाया करती थी। बड़े-बड़े पहाड़ के समान उसने सोना बनाया एवं विपुल धन व्यय कर एक अन्न सत्र का निर्माण कर उसका 'नागार्जुन-सत्र' नाम दिया, नागार्जुन ने फिरते-फिरते आकर सत्र को अपने नाम मिलने का कारण पूछा - मालूम होने पर उन्होंने उन रत्नों को पुनः पाकर उनके बल से गई हुई आँखों को पुन पाया एवं राजसभा में जाकर उसके महत्व को प्रकट किया। वनस्पति आयुर्वेदीय औषध में कितना सामर्थ्य है कहा है कि - **ऐसा कोई अक्षर नहीं जो मंत्र न हो। ऐसा कोई पौधा नहीं जो औषध न हो।**

देशी औषधियां - चिरायता, गिलोय, नागर मोथा, ग्वारपाठा, वच, अश्वगंधा, ईसबगोल आदि उपयोगी हैं।

वनस्पतियां और उनके औषधीय गुण - आज व्यक्ति का खानपान संयमित न होने से उनके शरीर में वात-पित्त-कफ इत्यादि विकृति पाई जाती है। पहले व्यक्ति का भोजन संयमित, सात्विक, शांतिकारक एवं शक्तिवर्धक था और साथ ही इस बात का विचार था कि किस मौसम में क्या, कब और कैसे ग्रहण करना उचित होगा।

श्रावक एवं श्रमणों को आरोग्य लाभ, धर्म ध्यान, खुशहाली एवं समृद्धशाली जीवन बनाने के लिये (हम यहाँ फल, सब्जी, अनाज, मेवा व मसाले आदि की प्रकृति के बारे में तथा वह पदार्थ किस रोग में उपयोगी बता रहे हैं। इनके बारे में हमारे त्यागी, व्रती, साधर्मी बंधु एवं साधु वर्ग इससे अवश्य ही समुचित लाभ उठाकर धर्म ध्यान को वृद्धिंगत होंगे।

विभिन्न प्रकार के फल-

1. **सेव -** यह फल शक्तिवर्धक है, क्रोध को शांत करता है, इसकी तासरी ठंडी होती है।
2. **नाशपाती -** यह शक्तिवर्धक है, पाचक होती है, इसकी तासीर ठण्डी है।
3. **अन्ननास -** यह गर्मीनाशक है, शुगर के रोगी के लिये हानिकारक है, ठण्डा होता है।
4. **अनार -** यह रक्तवर्धक, गर्मी नाशक, क्षुधावर्धक, हृदय व कंठरोग नाशक है, तासीर ठंडी है।
5. **फालसा -** यह गर्मीनाशक और ठण्डा है।
6. **जामुन -** गर्मीनाशक क्षुधावर्धक, सिरदर्द को दूर करता है। शुगर के लिये गुणकारी है।
7. **अमरुद -** यह ठण्डा और रोचक होता है, भूनकर खाने से सूखी खांसी में लाभदायक है।
8. **पपीता -** यह मातृदुग्धवर्धक है, शक्तिवर्धक एवं रोचक होता है। तासीर गरम है।
9. **नारंगी -** यह रक्तशोधक व तासीर में ठण्डी होती है।

10. आलू बुखारा - यह ज्वर के लिये लाभदायक, इसकी तासीर तरगरम है।

11. आम- ठण्डा, शक्तिवर्धक और घृत की कमी की पूर्ति करता है।

12. बेल - इसमें स्वर्ण एवं चांदी भस्म की मात्रा पाई जाती है। दस्त में लाभकारी, तासीर ठण्डी है।

13. नींबू - यह गर्मीनाशक , जायकेदार तथा पाचक होता है, ठण्डा होता है, शरीर के विषैले तत्वों का नाश करता है। नींबू के रस में भीगी हुई सौंफ में थोड़ा सा सेंधा नमक मिलाकर भोजन के बाद खाने से पेट का भारीपन दूर होता है। भूख खूब लगती है, मल साफ होता है।

14. आंवला - यह अमृत के समान गुणकारी, तासीर ठण्डी है, धार्मिक दृष्टि से परम पवित्र है। व्यक्ति दीर्घायु हो जाता है, स्मरण शक्ति में आशातीत बढ़ोतरी, गरुड़-पुराण में लिखा है सौ वर्ष जीने के इच्छुक व्यक्ति को नित्य आंवले मिले हुये पानी से नहाना चाहिये।

15. खरबूजा - यह दस्तावर होता है, इसकी तासीर गरम है, अधिक लेना हानिकारक है।

16. तरबूज - यह शरीर में तरावट लाता है, अधिक लेना हानिकारक है।

17. डाभ (कच्चा नारियल) - इसका पानी ठण्डा एवं गर्मीनाशक है।

18. लीची - यह उन्माद को दूर करती है, तासीर ठण्डी होती है।

सब्जियाँ -

1. कुकर विटेसी परिवार की सब्जियाँ बहुत लाभदायक हैं। तोरई, गिलकी, लोकी, परमल, टिण्डा, खीरा, कद्दू इनकी तासरी ठण्डी, भूखवर्द्धक, स्वादिष्ट, मस्तिष्क की गर्मी को दूर करती हैं।

2. करेला - तासीर गर्म एवं शुगर में लाभदायक है।

3. टमाटर - रक्तवर्धक है, आयरन पाया जाता है तासीर ठण्डी है।

4. तुलसी - तासीर गर्म है। सर्दी-जुकाम में लाभकारी है।

5. पौदीना - तासीर ठण्डी है। उल्टी बंद करता है।

मसाले -

1. धनिया - पाचक एवं स्वादिष्ट होता है। तासीर ठण्डी है।

2. हल्दी - तासीर गर्म, पेटदर्द, बदनदर्द में लाभकारी, रक्तशोधक है।

3. मैथी - तासीर गर्म, इसका पानी मधुमेह में लाभकारी, वात व्याधिनाशक जोड़ों के दर्द में लाभदायक स्वादिष्ट है।

4. इलायची - तासीर ठण्डी, स्वादिष्ट एवं उल्टी को रोकती है।

5. लौंग - तासीर गर्म, चबाकर खाने एवं दांत में लगाने से दर्दनाशक, रोगाणु नाशक,

कृमिनाशक, उल्टी वमन को रोकती है।

6. अजवाइन, कालीमिर्च, हींग भी उपयोगी औषधियाँ हैं।

7. हरड़ - आयुर्वेदिय ग्रंथों में हरड़ की विशेष व्याख्या की है। इसे माँ की संज्ञा दी है। हरड़ माता के समान कल्याणकारी है। माता तो कभी क्रोधित हो सकती है। लेकिन पेट में पहुंची हरड़ कभी भी क्रोधित नहीं होती, जिसके घर माता नहीं है, हरड़ उसकी माता है ऐसा आयुर्वेद महर्षियों ने कहा है। आयुर्वेदीय ग्रंथ भाव प्रकाश में 7 प्रकार की हरड़ें बताई हैं। विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन चेतकी इनमें 5 रस पाये जाते हैं। तासीर गर्म है, पाचक है, नित्य सेवन से उम्र बढ़ती है, बुद्धि बढ़ती है। आंख, नाक, कान, जीभ इत्यादि को शक्ति प्रदान करती है। इसे चबाकर, चूर्ण बनाकर पानी में उबालकर, भूनकर सेवन किया जा सकता है। हरड़ रसायन भी है।

जैनागम के अनुसार हमारे तीर्थ और श्रमण बड़े ही प्रकृति प्रेमी एवं पर्यावरण के रक्षक थे, उन्होंने तप के लिये शाल्मलि, बरगद, अशोक, आश्वत्य, जामुन आदि वृक्षों के तलभाग को चुना और पहाड़ियों से निर्वाण प्राप्त किया। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया कि ऐसे वृक्षों से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। तीर्थंकरों के चिन्हों में भी वनस्पति को स्थान मिला है, जैसे - श्वेत कमल, लाल कमल, कल्पवृक्ष आदि।

आचार्ययति वृषभ ने 2 से 7 वीं शताब्दी के बीच तिलोयपण्णति ग्रंथ में लिखा है कि **'वणसंदा मंडिदा विचित्तेहि'** 4/2272 ज़ो राष्ट्र नाना प्रकार की वनस्पतियों से सुशोभित रहता है वहां पर किसी भी समय अकाल नहीं पड़ता।

आचार्य रविषेण ने पदम पुराण में वृक्षों की उपयोगिता बताते हुये लिखा है कि - **'प्रतिष्ठां ते गमिष्यतियैः वृक्षा समारोपिताः''**

वरांगचरित्र, धर्मशर्माभ्युदयः, आदिपुराण एवं हरिवंशपुराण में वनस्पति, वन उद्यानों का वर्णन मिलता है। भोगभूमि में 10 प्रकार के कल्पवृक्ष मिलने का संदर्भ मिलता है - जिनसे समस्त प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाया करती है। जैसे दीपांग एवं ज्योतिरांग कल्पवृक्ष अंधकार का नाशकर सदैव दिन का उजाला बनाये रखते थे। भोजनांग-समस्त प्रकार की भोजन सामग्री, पानांग-समस्त प्रकार के पेय पदार्थ, अलयांग-समस्त प्रकार की आवास सामग्री आदि की पूर्ति होती थी।

कालान्तर में जब समस्त प्रकार के कल्पवृक्ष नहीं रहे, तब मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति वृक्षों से करने लगा। वृक्ष हमारा अनेक रूपों में हित साधन करते हैं। वृक्षों की पत्तियों में पाये जाने वाला क्लोरोफिल कार्बन डाई ऑक्साइड को आक्सीजन में बदल देता है। एक वृक्ष औसतन 50 वर्ष के जीवन में लगभग 15 लाख 70 हजार मूल्य की ऑक्सीजन देकर वायु शुद्धिकरण एवं आर्द्रता को नियंत्रित करता है।

■

मंदालसा स्तोत्र: भाषा

तुम शुद्ध हो तुम बुद्ध हो, तुम कर्म मल से हीन हो, संसार माया से पृथक, इस देह में ना लीन हो ।।
तुम सभी संसारी क्रिया के राग हो, राग को तो भगा दो। माँ के वचन को ग्रहण कर, अपने हृदय में लगा लो।।1।।

ज्ञाता हो तुम दृष्टा हो तुम, परमात्मा के रूप हो। तुम पिण्ड एक अखण्ड हो, सम्पूर्ण गुणस्वरूप हो ।।
इन्द्रियों के विजेता, अभिमान को तुम गला दो। माँ के वचन को ग्रहण कर, अपने हृदय में लगा लो ।।2।।

तुम शांत हो अनअन्त हो, इन्द्रिय दमन में वीर हो। तुम सिद्ध जैसे ही सही, अकलंक व महावीर हो।
ज्ञान ज्योति सहित तुम, माया की छाया भगा दो। माँ के वचन को ग्रहण कर, अपने हृदय में लगा लो ।।3।।

तुम एक हो तुम मुक्त हो, चैतन्यता से युक्त हो। चैतन्य भावी आत्मा अन्तादि से तुम रिक्त हो ।।
वासना के बिना तुम, तुम मोह में न लगाओ। माँ के वचन को ग्रहण कर, अपने हृदय में लगा लो ।।4।।

तुम कामना कर्मों रहित, मुक्ति पुरी में धाम हो। तुम ज्ञान दर्शन चरित के, रत्नों भरे गुणग्राम हो ।।
हे चेतना के पुंज तुम, संसार सुख को तपाओ। माँ के वचन को ग्रहण कर, अपने हृदय में लगा लो ।।5।।

तुम प्रमादों से पृथक, तुम तो सदा ही विमल हो। ज्ञान दर्शन वीर्य सुख से, समाहित तुम सबल हो।
शुद्धात्म ब्रह्म स्वरूप तुम, अपनत्व अपना जगा लो। माँ के वचन को ग्रहण कर, अपने हृदय में लगा लो ।।6।।

तुम ज्ञान केवल रूप हो, व योगहीन अनूप हो। तुम सभी रोगों से रहित, साक्षात ज्ञान स्वरूप हो।
हे आत्मा में रमणकर्ता, निज आत्मा ही सगा हो। माँ के वचन को ग्रहण कर, अपने हृदय में लगा लो ।।7।।

चैतन्य रूपी तुम्हीं हो, विपरीत भाव निरंक हो। सर्वज्ञता से रहित तुम तो, कर्म से निकलंक हो ।।
परमात्मा के रूप तुम परमात्म पथ पग बढ़ाओ। माँ के वचन को ग्रहण कर, अपने हृदय में लगा लो ।।8।।

परिचय

मंदालसा ज्ञानी थी, माता, अष्टपद को सुनाया। कुन्द-कुन्दाचार्य को, निजतत्व दर्शन कराया।
सब पाप को त्यागे जो माता, खुशी से जो पढ़ाया। शुभचन्द्र की इस स्तुति ने, उच्च गति को बनाया।
अजित ने अनुवाद करके, आत्म सुख ही कमाया। आज की आवाज में, अध्यात्म रस को बहाया।

• अजित जैन 'जलज', क़करवाह, टीकमगढ़ •

हमारे गौरव

अविनीत गंग

तदंगल माधव का पुत्र एवं उत्तराधिकारी अविनीत कोंगुणिवर्म-धर्म-महाराजधिराज कदम्ब नरेश काकुत्स्थ वर्मन का दौहित्र और शान्तिवर्मन एवं कृष्णवर्मन प्रथम का प्रिय भागिनेय था। अपने पिता की मृत्यु के समय वह माता की गोद में छोटा सा शिशु मात्र था। शिलालेखों में उसे शतजीवी कहा गया और उसका शासनकाल बहुत दीर्घकालिन सूचित किया गया है। यह नरेश बड़ा पराक्रमी और धर्मात्मा था।कहा जाता है कि किशोरवय में ही एक बार उसने जिनेन्द्र की प्रतिमा को सिर पर धारण करके भयंकरबाढ़ से बिफरती कावेरी को अकेले पांव पयादे पार किया था। उसके गुरु जैनाचार्य विजयकीर्ति थे, जिनकी देखरेख में उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी। नोनमंगल ताम्रशासन के अनुसार सन् 430 ई. में गंगराज अविनीत ने स्वगुरु विजयकीर्ति को मूलसंघ के चन्दननन्दि आदि गुरुओं द्वारा स्थापित उरनूर के अर्हत् मंदिर एवम् विहार के लिये दान दिया था। सन् 442 ई. में (हसकोटे) ताम्र शासन द्वारा उसके एक अन्य अर्हतायतन को दान दिया था। इस लेख में जैनाचार्य सर्वनन्दि के प्राकृत लोकविभाग (458 ई.) में उल्लिखित तन्नाम पल्लवनरेश से अभिन्न प्रतीत होता है। मर्करा ताम्र पात्र से ज्ञात होता है कि 466 ई. में अविनीत ने राजधानी लालवननगर की जैन वसदि के लिये दान दिया था। सुप्रसिद्ध दिगम्बराचार्य देवनन्दि पूज्यपाद (लगभग 464-524 ई.) को राजा ने अपने पुत्र युवराज दुर्विनीत का शिक्षक नियुक्त किया था। अभिलेखों में महाराज अविनीत गंग को विद्वतजनों में प्रमुख मुक्तहस्तदानी और दक्षिणा पथ में जाति व्यवस्था एवं धर्म संस्थाओं का प्रधान संरक्षक बताया है और लिखा है कि इस नरेश के हृदय में महान जिनेन्द्र के चरण अचल मेरु के समान स्थिर थे। पेरूर के जिनालय पुन्नाट देश की जैन वसदियों तथा अन्य जिनायतनों को भी उसने दान दिये थे। साथ ही उसने अपनी राज्यशक्ति और समृद्धि को भी अक्षुण्ण रखा था। उसका शासन प्रबंध भी उत्तम था।

जैन विद्यालय शीघ्र जानकारी भेजें

सागर। सम्पूर्ण भारतवर्ष में हमारे जितने भी जैन विद्यालय/छात्रावास/पाठशाला संचालित हैं जो चालू स्थिति में है या जो किसी कारणवश बंद हो गए हैं, उनकी जानकारी निर्धारित प्रोफार्मा पर शीघ्र भिजवाने का कष्ट करें। क्योंकि इनके पुर्नोद्धार प्रारम्भ करने का कार्य संत शिरोमणि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के 50 वें स्वर्ण दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में जैन विद्यापीठ के तत्त्वावधान में बड़े स्तर पर शीघ्र ही चालू हो रहा है। देश के गणमान्य श्रेष्ठियों ने इस कार्य का बीड़ा उठाया है। सम्पर्क सूत्र - जैन विद्यापीठ, भाग्योदय तीर्थ, करीला, सागर (म.प्र.) मो.: 09109090111, डॉ. ब्र. भरत भैया, बाहुबली कॉलोनी, जैन मंदिर के पास, सागर (म.प्र.) मो.श्र 9424951771, डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर (उ.प्र.) मोः 9793821108।

बाल कहानी

प्रज्ञा की सीख

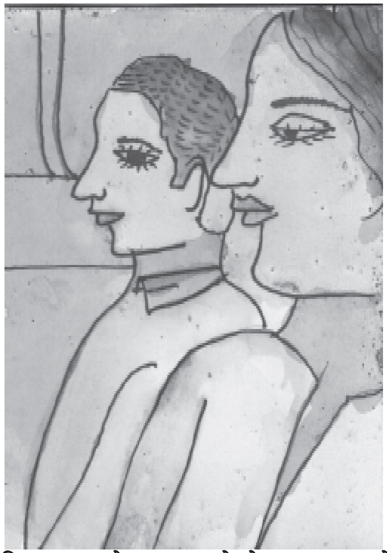

प्रोफेसर सोमनाथ एक पार्क में टहल रहे थे। उनके सामने आकर एक कार रुकी। एम्बेसेडर कार पर लिखे बोर्ड प्लेट पर पढ़ा जिस पर कलेक्टर लिखा था। सोमनाथ ने अपनी नजर कुछ देर टिकायी और रुके फिर आगे बढ़ गये। जब वे बड़े यूकेलिप्ट्स के पास से गुजर रहे तभी कलेक्टर का आदमी दौड़ता आया और कहा - सर रुकिये, हमारे साहब आपसे मिलना चाहते हैं। प्रोफेसर सोमनाथ पास में पड़ी बेंच पर जाकर बैठ गये उन्होंने देखा उनका पुराना विद्यार्थी विक्रम तेजी से चला आ रहा है। विक्रम जैसे ही पास में आया उसने प्रोफेसर सोमनाथ के पैर छूए और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। विक्रम तुम क्या कलेक्टर बन गये, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। मैंने तुम्हें खूब डाँटा, और फटकारा है तुम तो भाई उद्दण्ड और फिस्सडी विद्यार्थी रहे हो।

विक्रम ने कहा - सर मुझे सब कुछ याद आ रहा है आपकी डाँट-फटकार उस समय मुझे बुरी जरूर लगती थी पर जिस मुकाम पर मैं आज पहुँचा हूँ। उसमें आपके अ सीम आशीर्वाद का बड़ा योगदान तो है ही परन्तु मुझे अपनी सहपाठी प्रज्ञा मुख्तार बहुत याद आ रही है जो हमेशा मुझसे कहा करती थी विक्रम तुम जो कुछ कर रहे हो वह सब अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हो। मैं तुम्हें खराब नम्बर लाते हुए नहीं देख सकती हूँ, मैं चाहती हूँ कि आप अपनी जिंदगी व्यर्थ न गंवाये, बल्कि कुछ कर दिखायें। बस मुझे प्रज्ञा की बातों ने झकझोर दिया और मैंने शरारत करना छोड़ दिया। धीरे-धीरे मुझ पर उसकी बातों का गहरा असर हुआ। मैंने फालतू-घूमना फिरना बंद कर दिया। पढ़ाई को गम्भीरता से लिया। सच तो यह है प्रज्ञा मेरी उन दिनों की टीचर बन गई थी। उसी की सीख ने ही आज मुझे कलेक्टर बना दिया। प्रोफेसर सोमनाथ के पैर छूकर, आभार मानकर विक्रम आगे बढ़ गया। ■

संस्कार गीत

माटी हिन्दुस्तान की

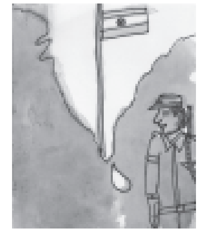

सत्य अहिंसा से परिपूरित
माटी हिन्दुस्तान की,
वीर सिपाही होड़ी लगाते
सरहद पर बलिदान की।
धन्य-धन्य यह भारत भूमि
जिस पर ऋषि तप करते हैं,
त्याग-तपस्या समता धारी
श्रमण भी विचरा करते हैं।
देव स्वर्ग की महिमा गाते
संस्कृति सन्त विधान की,
कर्म योग से भाग्य बदलते
यह भारतवासी कहता।
वस्तु सत्य शुभ धर्म निभाते
बस मुक्ति पथ पर चलता,
भगवन्तों की दिव्य ध्वनि ही
तीर्थंकर के शान की।
राम, कृष्ण, महावीर की वाणी
सत शिव सुन्दर गान है
दया धर्म का पाठ सिखाये
यही विश्व अवदान है,
बलि-बलि जाऊँ इस भूमि पर
बाजी लगाऊँ प्राण की।

बाल कविता

सामायिक

मैत्री प्रेम दया मन समता
मिट जायें तब मन की ममता
कुछ समय को छोड़े पाप
शांत चित्त मिट जाये ताप
सामायिक है इसका नाम
पंच प्रभु का जपले नाम
हर दिन जो सामायिक करता
जन्म जन्म पाप को हरता
बच्चों तुम सामायिक करना
ज्ञान ध्यान कर तप नित करना

■ रोहन से टीचर ने पूछा - क्या बात है एक सप्ताह से स्कूल नहीं आये।

रोहन -जी मेरे दादा की मौत हो गई था।

टीचर ने पूछा - उन्हें क्या हो गया था ?

रोहन - टीचरजी, दादाजी टी.वी. में बाबा जी का योगा देख रहे थे। बताया गया गहरी सांस लो और जब छोड़ने को कहा तब छोड़े ऐसा कहा 10 मिनट तक करना था

टीचर ने कहा- यह तो अच्छा था।

रोहन ने कहा - 10 मिनिट के बाद लाईट चली गई और जब तक लाइट आई, दादाजी चले गये।

■ रंगमंच में एक महिला ने झगड़ालू पत्नी का सफल अभिनय किया। दर्शकों ने बहुत पसंद किया। कार्यक्रम के बाद पत्रकार ने महिला से पूछा आपने पहली बार अभिनय किया जिसकी सफलता का रहस्य क्या है ?

महिला बोली- वेरी सिम्पल, अभिनय के समय मन में सोच लिया कि मैं सचमुच अपने पति के साथ झगड़ा कर रही हूँ।

■ बिहार में सर्विस करने आये नये अधिकारी ने दूध वाले से पूछा जो तुम दूध देते हो बहुत पतला है, जबकि मैंने सुना है कि यहां पर बहुत पौष्टिक गाढ़ा दूध मिलता है।

दूध वाला- जी साहिब यह तो पुरानी बात है जबसे बिहार में चारा घोटाला हुआ तब से भैंसों ने चारा कम पानी ज्यादा पीना शुरु कर दिया है।

– जिनेन्द्रकुमार जैन,
बाकल वाले, इन्दौर

आचार्यश्री अभिनंदन सागरजी महाराज का समाधिदिवस सम्पन्न

इन्दौर। देश अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी पट्टाचार्य श्री 108 अभिनंदनसागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य आचार्यश्री 108 उदार सागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में दिनांक 26 जनवरी 2017 को षष्टम् पट्टाचार्य आचार्यश्री अभिनंदनसागरजी महाराज का समाधिदिवस श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर में मनाया गया जिसमें कार्यक्रम की अध्यक्षता इन्दौर रत्न बा.ब्र. पं. श्री रतनलालजी शास्त्री एवं मुख्य आतिथ्य श्री हुकमचंदजी सांवला ने किया। विधानकर्ता - विजयकुमार-इन्दुबाला, एम.सी.-प्रभा (पेराडाइज), विवेक-आकांक्षा, आशीष-रुपाली, सौधर्म इन्द्र-वीरेन्द्र-सुनीता, महायज्ञ नायक -नरेन्द्र-कमलेश (जयपुर वाले), कुबेर-हर्ष-तृप्ति यज्ञनायक- सुनील-पूजा जैन, डॉ. सनत-सुधा, ईशान इन्द्र-मनोज-सुनीता, सनत कुमारइन्द्र-ज्ञानचंद-चंदादेवी जैन, माहेन्द्र इन्द्र-अजीत-मीना, ब्रह्म इन्द्र-सुरेश-अनिता, लांतवइन्द्र-सुरेश-सुशीला, शुक्र इन्द्र-राजकुमार-समता, शतारइन्द्र-आशीष-निधी, आनतइन्द्र-सतीश-सुलोचना, प्रणात इन्द्र-क्रोमलचंद-शीला, आरनेन्द्र-रमेश-स्नेहलता, अच्युतेन्द्र सुभाष-सुधा, कलश एवं दीप स्थापित कर्ता - ब्र. सुनीता दीदी, श्रीमती आराधना कासलीवाल, श्रीमती मंजू जैन, अभिषेक जैन, नरेन्द्र नागर, मनोज जैन, सुधीर जैन, जैनेश रोकड़िया, चित्रानावरणकर्ता- सर्वश्री प्रदीप कासलीवाल, मनोज बाकलीवाल, राजीव सेठी, आजाद मोदी, सचिन जैन, डी.के. जैन सा., भरत जैन (शांति निकेतन), प्रियदर्शी जैन, कलश स्थापिता कर्ता-प्रदीप टड़ा, राजीव लार, धर्मेन्द्र जैन, अशोक जैन आदि को पुण्य अर्जन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

समाचार

धर्माचरण से खुद के साथ दूसरों का भी उद्धार होता है

तुमकुर (कर्नाटक)। खुद के लिये किये गये धर्मात्मा के धर्माचरण से खुद के साथ दूसरों का भी उद्धार होता है किन्तु धर्मात्मा दूसरों के लिये नहीं, खुद के उद्धार की भावना से धर्म करता रहता है। दूसरों के धर्माचरण से हमारा आचरण सुधर जाये, यह संभव नहीं है। हमें अपना आचरण सुधारने के लिये स्वयं को धर्माचरण करना ही होगा। खुद के लिये धर्माचरण करने वालों के धर्माचरण से ही औरों को भी धर्माचरण की प्रेरणा मिलती है। और खुद धर्माचरण करने वाला ही औरों के समाने आदर्श प्रस्तुत करता है। धर्मात्मा खुद के कल्याण के लिये धर्म करता है, दूसरों को दिखाने-बताने के लिये नहीं।

मेहगाँव में प्रथम बार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न

मेहगाँव (भिण्ड) म.प्र.। मेहगांव इतिहास में प्रथम बार 1008 श्री मज्जिनेन्द्र नेमिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, वेदी प्रतिष्ठा, मानस्तम्भ प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई जिसमें परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज ससंघ की 43 पिच्छिओं के विशाल चतुर्विध संघ की सान्निध्यिता हेतु दिनांक 10 दिसम्बर 2016 को भव्य नगर प्रवेश घटयात्रा के मंगल कलशों से आगवानी करने के साथ हुआ। इस महामहोत्सव में सकल जैन समाज मेहगांव ने अपने समस्त प्रतिष्ठान बन्द कर उत्साहपूर्वक भाग लेकर प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किया।

मुनिश्री धीरसागरजी महाराज का समाधिमरण

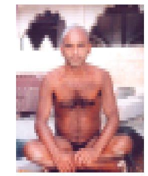

गुना। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनिश्री धीरसागरजी महाराज का दिनांक 10 जनवरी 2017 को हो गया।

आचार्य वर्द्धमानसागर जी ससंघ एवं उपाध्याय श्री निर्भयसागर जी महाराज ससंघ का भव्य मिलन

बड़वाह। आचार्य वर्द्धमानसागरजी महाराज ससंघ एवं उपाध्याय श्री निर्भयसागर जी महाराज का ससंघ भव्य मिलन सतपुड़ा की पहाड़ियों के बीच बावनगजा सिद्धक्षेत्र में अपूर्व धर्म प्रभावना के साथ हुआ। उपाध्यायश्री निर्भय सागरजी ने अपने शिष्यों मुनि शिवदत्तसागर, एलक सुदत्तसागर, क्षुल्लक तत्त्वसागर एवं चन्ददत्त सागरजी महाराज के साथ आचार्य वर्द्धमानसागर महाराज की तीन परिक्रमा कर वन्दना पूर्वक भक्ति की व चरण प्रक्षालन किया तत्पश्चात् आचार्यश्री 44 पिच्छियों सभी ने उपाध्यायश्री की प्रति वंदना की।

दीक्षाएं सम्पन्न

देवेन्द्रनगर। आचार्यश्री विमर्शसागरजी महाराज के करकमलों से 1 जनवरी 2017 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर, देवेन्द्रनगर जिला पन्ना (म.प्र.) में ब्र. सागर भैया शिवपुरी, ब्र. मुकेशजी दुगाड़ी (राज.), ब्र. गुलाबचंदजी (दाऊ) सिमरिया (म.प्र.), ब्र. शंकरलालजी कोलारस

(म.प्र.), ब्र. अरविन्द कोलारस (म.प्र.) ब्र. विजयकुमारी सिरसाद (शिवपुरी) म.प्र. को दीक्षाएं दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनिश्री विशुभ्भसागरजी, मुनिश्री विशंभ सागरजी, मुनिश्रीविश्वारथसागरजी, क्षुल्लकश्री विश्वांकसागरजी, क्षुल्लकश्री विस्वार्थसागरजी एवं आर्यिकाश्री विन्यान्तश्री रखे गये।

समाधिमरण

मुलताई । क्षुल्लकश्री 105 श्रेष्ठसागरजी महाराज की मुनि दीक्षा 29 दिसम्बर 2016 को मुलताई छिंदवाड़ा में हुई और उसी दिन सायं 7 बजे उनका समाधिमरण हो गया। उनकी मुनि दीक्षा एवं समाधिमरण आचार्यश्री 108 वासुपूज्यसागरजी महाराज द्वारा सम्पन्न हुई।

मंडोला। ऐलकश्री विज्ञानसागरजी महाराज की गृहस्थ अवस्था की माताजी श्रीमती केसरबाई जी को आचार्य वसुनंदीजी महाराज की आज्ञा अनुसार दिनांक 5 जनवरी 2017 को प्रातः 5.30 बजे ऐलकश्री विज्ञानसागरजी महाराज ने क्षुल्लिका दीक्षा देकर क्षुल्लिका निर्वाण नंदीनी नाम से सम्बोधित किया। दीक्षा के तुरंत बाद प्रातः 6 बजे उनका सल्लेखनापूर्वक समाधीमरण हुआ।

कलकत्ता। दुःखद समाचार आचार्य श्री चैत्यसागरजी महाराज की संघस्थ आर्यिका पावापुरी, आर्यिकाश्रीमति, एवं आर्यिका अयोध्यामति माताजी का 18 जनवरी 2017 को बिहार से 50 किमी. कलकत्ता की तरफ डोबी में रोड एक्सीडेंट में घायल हो गई थी तत्पश्चात माताजी की समाधि हो गई।

पंचकल्याणक सम्पन्न

इन्दौर। श्री दिगम्बर जैन मंदिर महालक्ष्मी नगर में दिनांक 14 से 18 जनवरी 2017 तक आचार्यश्री पुष्पदंतसागर महाराज ससंघ ाचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी महाराज के शिष्य तपोभूमि प्रणेता मुनिश्री प्रज्ञासागरजी, डॉ. मुनिश्री प्रणामसागरजी, मुनिश्री पूज्यसागरजी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रतिष्ठाचार्य पं. अजित शास्त्री ग्वालियर रहे।

श्री दिगम्बर जैन मंदिर गुमाश्ता नगर इन्दौर में आचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी महाराज के शिष्य तपोभूमि प्रणेता मुनिश्री प्रज्ञासागरजी, डॉ. मुनिश्री प्रणामसागरजी, मुनिश्री पूज्यसागरजी महाराज के परम सानिध्य में दिनांक 18 से 23 जनवरी 2017 तक पंचकल्याणक एवं गजरथ महामहोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

आगामी पंचकल्याणक

टडा। संत शिरोमणि आचार्यदेव श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के ससंघ आशीर्वाद से टडा नगरी में पंचकल्याणक दिनांक 3 से 9 फरवरी को बाल ब्रह्मचारी विनय भैयाजी बंडा टडा में प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा। गुरुदेव की आगवानी के लिए पूरे टड़ा ग्राम को दुल्हन की तरह सजाया जा रहा है। माता पिता श्री कुमुद-जिनेन्द्रकुमार जी गोयल मंदिर वाले, सौधर्म इन्द्र श्री विनीत मोदी , कुबेर श्री संजयकुमार चौधरी, महायज्ञनायक श्री उदयचंद्रा जैन, भरत चक्रवर्ती प्रदीपकुमार जैन मोदी मंदिर वाले, बाहुबली श्री शीतल जैन साहपूर वाले, राजा श्रेयांश डॉ. श्री महेन्द्रकुमार जैन, राजा सोम श्री सनत सोंधिया, ईशान इन्द्र श्री नेमीचंद्र जागती, ब्रह्मइन्द्र श्री डॉ. वीरेन्द्रजी, ब्रह्मोत्तर इन्द्र श्री प्रवीण जागती आदि बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गुना। दिगम्बर जैन समाज के बहुप्रतीक्षित श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव का

आयोजन दिनांक 26 जनवरी से 1 फरवरी तक जैनाचार्य विद्यासागरजी महाराज के गृहस्थ भाई एवं ज्येष्ठ शिष्य मुनिश्री समयसागर मुनिराज के ससंघ सानिध्य में हुआ इस दौरान मुनिश्री विनीतसागरजी सहित सात मुनिराजों एवं करीब 50 से अधिक आर्यिकाओं का सानिध्य प्राप्त हुआ।

आरोन। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद से आरोन नगर में दिनांक 12 से 18 फरवरी 2017 तक पूज्यमुनिश्री प्रशांतसागरजी, निर्वेगसागरजी एवं मुनिश्री विशदसागरजी महाराज के सानिध्य एवं बाल ब्रह्मचारी वाणी भूषण विनय भैयाजी (बंडा) के प्रतिष्ठाचार्यत्व में आयोजित होगा। जिसमें भगवान के माता-पिता श्री प्रकाशचंद कुमार महोटी (मुनिश्री सुव्रतसागरजी व निस्सीमसागरजी के परिवारजन, सौधर्म इन्द्र श्री विजयकुमार, सुनीलकुमार, अखिलेशकुमार जी डोडिया परिवार, कुबेर इन्द्र श्री सचिनकुमार, रविंद्र कुमार, राजीव कुमार, सुभाष जी जैन कासल परिवार, महायज्ञनायक श्री मिंटूलाल जी, शैलेशकुमार जी जैन बाखर परिवार, भरत चक्रवर्ती श्री नरेशचंद, अशीषकुमार मोनू जैन, अभिषेक जैन पारस स्टील पिपरई वाले, बाहुबली संतोष जैन, सोनू जैन, नेहरु चाचा परिवार, महेन्द्र श्री हजारीलालजी, प्रदीप कुमार, विवेककुमार, सुनीलकुमार , यश जैन, अरिहंत जैन, पारस जी जैन झंडा परिवार आदि को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कांकरिया तलाई (नीमच)। आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी महाराज की प्रेरणा एवं मुनिश्री प्रणम्यसागरजी, मुनिश्री चन्द्र सागर जी, मुनिश्री वीरसागरजी, मुनिश्री विशाल सागरजी, मुनिश्री धवलसागर जी महाराज के ससंघ सानिध्य में श्री मज्जिनेन्द्र 1008 आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव दिनांक 27 जनवरी से बुधवार दिनांक 1 फरवरी तक ब्र. संजय मुरैना के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

मुनिश्री धीरसागरजी महाराज बहुत साहसी थे

पिण्डरई। मुनिश्री धीरसागरजी महाराज का जैसा नाम था वैसा काम था। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लेकर वह सर्विस करते रहे फिर सेवा में लगे रहें जब दीक्षा के स मय दर्शन करने के लिये आये थे और अचानक दीक्षा का योग बना उन्होंने दीक्षा ले ली वह मौन रहते थे। उनकी चर्या बहुत कठिन रहती थी। वह अनुशासन प्रिय थे। एक बार मधुमक्खियों ने आक्रमण कर दिया फिर भी वह समता से सहन करते रहें प्रतिकार नहीं किया। वह गंभीर रहते थे। उनकी अध्ययन में विशेष रूचि रहती थी।वह अनेक भाषाओं के जानकार थे। उनकी प्रवचन शैली भी कविताओं से परिपूर्ण रहती थी। वह वैयावृत्ति में कुशल थे। सभी मुनिराजों के पास जाकर अंतराय, उपवास, स्वास्थ खराब होने पर जाते थे और वैयावृत्ति करते थे। आचार्यश्री की भी कृपा उन पर हमेशा बनी रहीं। विदिशा चातुर्मास 2014 के बाद वह मुनिश्री समयसागरजी के साथ उपसंघ में थे। उनकी क्षति हमारे लिए अपूरणीय रहेगी, हम सभी उनके चरणों में भावांजलि अर्पित करते हैं। इसके साथ साथ आचार्यश्री संघ, आचार्यश्री के शिष्य जहाँ-जहाँ विराजमान हैं वहाँ पर विनयांजलि सभा रखी गई।

पेज 42 का शेष... की कारीगरी देखकर अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है। मनुष्य जब प्राकृतिक दृश्यों के साथ स्वर्गलोक के देव-विमान तुल्य इस कलात्मक मंदिर के दर्शन करता है, तब अपने आप को भूल कर यह अनुभव करने लगता है कि वह सचमुच में दिव्यलोक में पहुँच गया है।

थोड़ी दूरी पर इस मंदिर के ठीक सामने कारीगरों द्वारा अपने खाली समय का सदुपयोग कर के मंदिर के बेकार तथा बचे-खुचे संगमरमर पत्थरों पर अपनी छैनियों से ऐसा कार्य किया है कि एक मंदिर निर्माण हो गया है जिसे कारिगरों का मंदिर कहते हैं।

डाक टिकट का डिजाइन एवं उसका डाक टिकट - हमारी विरासत के जैन मंदिरों पर छपी पहली बहुरंगी डाक टिकट पर, दूरी से लिया गया दिलवाड़ा जैन मंदिरों का चित्र आधी टिकट पर छपा है, शेष आधी टिकट पर दिलवाड़ा मंदिर के रंग मंडप की छत दिखाई गई है।

दूसरी बहुरंगी डाक टिकट पर रणकपुर मंदिर का बाहरी भाग आधी टिकट पर छपा है तथा बाकी आधी टिकट पर एक खूबसूरत स्तम्भ की नक्काशी दिखाई गई है। दोनों डाक टिकटों को 14.10.2009 को जारी किया गया था। प्रत्येक का मूल्य 500 पैसे है। प्रत्येक डाक टिकट को 4 लाख संख्या में तथा प्रत्येक Miniature Sheet को 4 लाख संख्या में वेट-ऑफसेट मुद्रण प्रक्रिया से प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद से छपवाकर भारत सरकार के डाक विभाग द्वारा जारी किया गया था। इसका विवरण इंग्लैंड से छपने वाले स्टेनले गिब्पस केटलॉग में S.G. नम्बर 2513, 2514-A, 2514, 2515 पर दिया गया है।

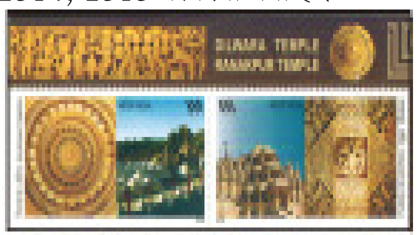

108 फुट मूर्ति निर्माण कमेटी मांगीतुंगी के प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति से की मुलाकात

नई दिल्ली। पीठाधीश स्वस्ति रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के नेतृत्व में एवं डॉ. सुभाष भामरे (रक्षा राज्य मंत्री) के साथ महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी के साथ भेंट की, जिसमें पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन सान्निध्य में विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन व चल रहे महामस्तकाभिषेक के समापन अवसर पर माननीय राष्ट्रपति जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। समिति के अध्यक्ष रवीन्द्र कीर्ति स्वामीजी नेरजत श्रीफल देकर मांगीतुंगी आने का आह्वान किया एवं भगवान ऋषभदेव के बारे में जानकारी प्रदान की। मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर बनने वाली यह प्रतिमा वर्ल्ड की पहली प्रतिमा है जो कि अखण्ड पाषाण में निर्मित की गई है, जिसका गिनीज वर्ल्ड ऑफ रिकार्ड में नाम दर्ज किया जा चुका है।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : फरवरी 2017

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. अभिषेक क्रिया के पश्चात् चन्दन के उबटन से भगवान का ...... किया था।
2. शुद्ध जल से जिनेन्द्रदेव का .... करते हैं ।
3. मुक्ताओं और रत्नों से जगमगाते ...... समर्पित करने से जीव स्वयं ही अगले भव में प्रकाशमान मुकुट और राजचिन्ह पट्ट आदि को प्राप्त करते हैं।
4. स्वच्छ सुन्दर दर्पण भेंट करने से ...... शुद्ध होता है।
5. कलश चढ़ाने से कषाय आदि दोषों की ...... होती है।
6. ...... चढ़ाने के ही कारण लोग अलौकिक विद्या के ज्ञान से विभूषित विद्याधर होते हैं ।
7. ...... समर्पित करने से उत्पन्न पुण्य के उदय होने पर पुजारी के राज्य का विपुल विस्तार होता है।
8. घंटा समर्पित करने का परिपाक यही होता है कि श्रावक को ...... प्राप्त होता है।
9. रंग-बिरंगी ...... समर्पित करने वाले श्रावकों का शासन अलंघ्य होता है।
10. विविध विद्याओं रूपी नदियों के लिए ...... उद्वेलित समुद्र के समान थे ।
11. गुण और ...... ही उनकी माला थे।
12. अपने कर्त्तव्य को पूरा करने में वह कभी ...... न करते थे।
13. निस्सन्देह यह शुभ कर्म इस लोक तथा परलोक में प्राप्त होने योग्य समस्त ...... का मूल है।
14. सम्राट का ...... प्रबल प्रसन्नता के पूर से प्लावित हो रहा था।
15. अपने ...... से समस्त वस्तुओं के मानमर्दक सम्राट ने उसी समय वहां उपस्थित सब अधिकारियों को आज्ञा दी थी।
16. व्रती श्रावकों तथा आर्यिकाओं का वस्त्रदान तथा........... दिया था।
17. ...... को कीर्ति इस पृथ्वी परअनन्त काल तक लोग स्मरण करें।
18. सम्राट ...... धर्म, अर्थ तथा काम पुरुषार्थी के आनुपातिक आचरण की साधक व्यवस्था करने में अत्यंत दक्ष थे।
19. ...... धर्म के मूल वास्तविक दया में तो उन्होंने अपने आपको लीन ही कर दिया था।
20. सुकुमार सुन्दरियां सदा ही ...... आदि धार्मिक कार्यों को करती हुई एक दिन बिताती थीं।

(वरांग चरित्र पृ. 290 से 297 तक)

प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

21. आचार्य शांतिसागरजी की मुनि दीक्षा कहाँ हुई थी ?
22. आचार्य शांतिसागरजी की मुनि दीक्षा किस अवसर पर हुई थी ?
23. आचार्य शांतिसागरजी के दीक्षा गुरु कौन थे ?

24. जब मुनि दीक्षा हो ही थी तब दीक्षा के लिए कितने लोगों ने निवेदन किया था ?
25. कौन-सा गुणस्थान चढ़ते हुए नहीं होता है ।
26. आचार्य शांतिसागरजी की मुनि दीक्षा के बाद प्रथम चातुर्मास कहाँ हुआ था ?
27. आचार्य शांतिसागरजी अस्वस्थ होने के बाद भी किसके सेवन से वंचित थे ?
28. आचार्य शांतिसागरजी पर प्रथम चातुर्मास में किसने उपसर्ग किया था ?
29. आचार्य शांतिसागरजी का द्वितीय चातुर्मास कहाँ हुआ था ?
30 द्वितीय चातुर्मास में आहार के विषय में दोष लगने पर क्या प्रायश्चित किया था ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

31. गुणी पुरुष का समागम होने पर इनके अन्तकरण में .... का भाव उत्पन्न होता था।
32 मनुष्य-जन्म की .... निर्ग्रन्थ दीक्षा देकर मेरे जन्म का कृतार्थ करें ।
33. जल्दी में काम करना पीछे .... का कारण होता है।
34. ज्ञान और वैराग्य विभूषित मोक्षाभिलाषियों को यह आत्मा के लिये .... सदृश आह्लादप्रद होती है।
35. गुरुदेव ने इनका नाम .... को देखकर शांतिसागर रखा।
36. यदि व्रत पालने के योग्य सामग्री न रहेगी तो हम जंगल में रहकर .... धारण कर लेंगे।
37. शांति के सागर में प्रेम और .... का जल भरा है।
38 परिग्रह को धारण करते हुए पूर्ण .... का पालन नहीं बनता है।
39. जैन मुनि की चर्या कितनी महान होती है। गोचरी करने का ....है तो आहार ग्रहण नहीं करेंगे।
40. मुनिवृत्ति धारण कर कर्मो के साथ इन्होंने सीधा .... आरंभ कर दिया

(चारित्र चक्रवर्ती पृ.78 से 83तक)

संक्षेप में उत्तर दीजिये :

41. गो सेवा में किसने अपना सर्वस्व लगाया था ?
42. किसने भारत को परमोच्च बनाया था ?
43. राजा ने उठकर के सबसे पहले किसके दर्शन किये थे ?
44. पहले हर गृहस्थ के घर में क्या होती थी ?
45. जिसके घर में गाय नहीं होती थी वह अपने आप को कैसा समझता था ?

(पवित्र मानव जीवन पृ.–13 छंद 50-53)

46. ऐलक सिद्धांतसागर जी की 2016 की पिच्छि मिलने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ ?
47. एक साथ 6 वेदियों तथा 3 शिखरों का शिलान्यास कहाँ पर किस दिनांक को हुआ ?
48. श्री दि. जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में मस्तकाभिषेक एवं चौंसठ ऋद्धि विधान में सौधर्म बनने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ ?
49. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का पचासवाँ स्वर्ण संयमोत्सव वर्ष कब से प्रारम्भ होगा ?
50. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने 50 वें स्वर्ण संयमनोत्सव वर्ष पर संस्कार सागर के कितने विशेषांक निकाले जायेंगे ? **(संस्कार सागर जनवरी 2017)**

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा : फरवरी 2017

प्रश्नपत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम ....स्थान ....

उम्र ....सदस्यता क्र. ....

पूर्ण पता ....

पिन कोड .... फोन नं...................... (एस.टी.डी.) ....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम .... हस्ताक्षर

नियम :– .... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली : 214

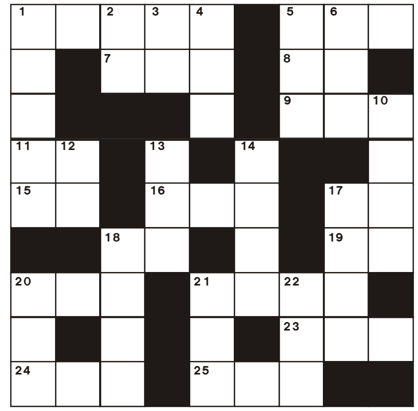

ऊपर से नीचे

1. सिद्धांतसार संग्रह ग्रंथ के रचयिता (5)
2. तरल पदार्थ (2)
3. वस्तु स्वरूप की भूल का नाम , विभ्रम (2)
4. लकड़ी कागज खाने वाला कीट (4)
5. वस्तु स्वभाव का नाम,दया जिसका मूल हो (3) 10. उपहार, भेंट (4)
12. तू का भाव, मध्य पुरुष का संकेत, आपका(2)
13. लज्जा, हया (3)
14. तीर्थंकर के मुख्य प्रवक्ता (4)
17. प्रकाशमान (5)
18. जनता का विचार, जनता का मत(4)
20. उत्तर पूर्व दिशा का नाम (3)
21. पति, प्रिय व्यक्ति (3)
22. स्वार्थ, काम पड़ना (3)

बाएँ से दाएँ

1. भारत के प्रधानमंत्री (6)
5. प्रथम स्वर्ग के इन्द्र का नाम (3)
7. शक, संदेह (2)
8. नम, आर्द्र, गीला (2)
9. नमस्कार करने का भाव (3)
11. पुल (2)
15. गीला,आर्द्र (2)
16. रमने का भाव (3)
18. यम (2)
19. गण का भाव (2)
20. सत्य (4)
21. सात स्वरों का समूह (4)
23. घिसावट, घिसने का भाव (2)
24. नक्षत्र (3)
25. मात्र,केवल (उर्दू) (3)

वर्ग पहेली : 213 का हल

1 हि	2 म	वा	3 न	■	4 अ	श्व	5 से	6 न
7 त	रु	■	8 दी	9 प	क	■	10 तु	म
■	11 भू	त	■	12 क	लं	13 क	■	स्का
14 श्रु	ति	■	15 दि	वा	क	र	■	र
त	■	16 प	व	न	■	■	17 ज	■
18 ज्ञा	19 ता	■	स	■	20 प	21 छ	ता	22 ना
23 न	न	■	■	24 शी	त	ल	ना	थ
■	25 से	26 व	क	■	वा	■	■	■
27 वा	न	र	■	28 ता	र	ण	हा	र

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी ■